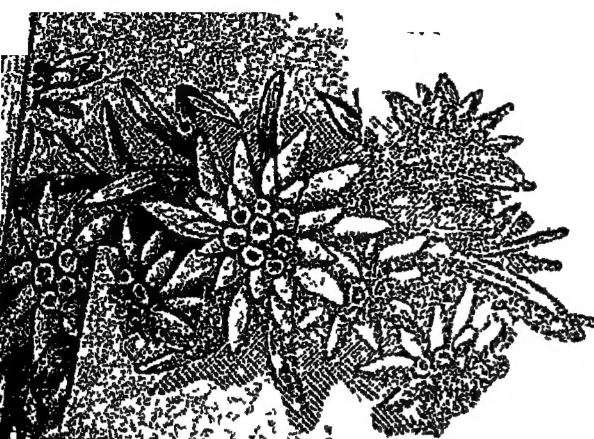
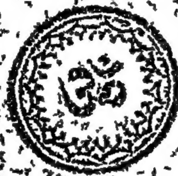


श्री वीतरागाय नमः।



बल्देवभजनमाला

प्रथमभाग।

सम्पादक–मूलचंद गुप्त



वार्षिक मूल्य १॥) [न्योछावर ॥=)

श्रीवीतरागाय नमः



बलदेव भजनमाला ।

दोहा—इन्द्रसभा ।

[१]

ओंह्रीं श्रीपरमेष्ठिपद, गुरु जिन वाणी माय ।
इन कूं नमिकर भावजुत, गाऊं भक्ति उर लाय ॥ १ ॥
ऋषभादिक चौबीस ए, वर्त्तमान जिन राय ।
तिनकी गुणमाला महा, गाऊं हर्ष बढ़ाय ॥ २ ॥
अर्ज करों कर जोडिकैं, सुनो देव जिनराय ।
भव भव तुमपद कमलकी, सेवा द्यो सुखदाय ॥ ३ ॥
तुम बिन चारो गतिविषैं, रुल्यो अनंती बार ।
काल लब्धि सुभ जोगतैं, तुम प्रभु पाये सार ॥ ४ ॥
अधम अनेकन त्यारिया, तिनको वार न पार ।
सिंघादिक तिर्जचहू, तुम कीने भवपार ॥ ५ ॥
भ्रमतो फिरौं अनादिको, कहूं न पायो सार ।
तुम प्रभु अधम उधार हो, मोय करो भवपार ॥ ६ ॥
तुम ही तारण तरण हो, यह निश्चै उरमोय ।
तुम समान तिहुं लोकमें, और देव नहि कोय ॥ ७ ॥

(४) राग भैरो प्रातःकाली।

श्री चौबीश जिनेंद्र पाद युग, बन्दौं मन बचकाय।
बंदौं मन वच काय नाय शिर, वन्दौं मन वच० ॥ टेक ॥
ऋषभदेव वृषभांक अजितगज, संभव बाज लखाय।
अभिनंदन कपि कोक सुमति जिन, पद्म पद्म दरसाय ॥१॥
सुपार्श्व सांथिया चंद्र चंद तन, मगर पुष्प जिनगाय।
शीतल द्रुम श्रेयनाथ जु गेंडा, महिष वास पुज्य पाय ॥ २ ॥
सूर बिमल सेहो अनंत लषि, धर्म बज्र सुखदाय।
शांति मृगांक कुंथु अजधारी, अरह मीन जम गाय ॥ ३ ॥
कलश मल्लि मुनि सुव्रत कछुवा, नमि सतपत्र लखाय।
नेम संखपद पार्श्व सर्प लखि, वीर सिंह दरसाय ॥ ४ ॥
नाम लेत सब पाप कटत बहु, पुन्य होय अधिकाय।
बलदेव तुम पद चरण शरणगहि, भव दुख ताप नसाय ॥५॥

(५) चाल बेनीमाध्योंको पूजों।

लोकशिखर प्रभु सिद्ध बिराजे, तिनपद ढोक त्रिकाल हमारी ।टेक।
भव भव भक्ति देवो प्रभु मोकू, वलदेव लीनी शरण तुम्हारी।
जिनको तीर्थंकर शिर नावैं, गुण अनंत तिनके विस्तारी ॥
अनंतचतुष्टय पंच लब्धि युत, सम्यक्त्वादि अष्ट निधिधारी ॥१॥
अजर अमर अविनाशी अविचल, अनुपम सुद्ध आत्माधारी।
निरावर्ण निरदोष निरंजन, नित्य निराकृत निर अविकारी॥२॥
तीनिकाल तिहुँलोक तनी सब, गुणपर्याय भिन्न भिनसारी।
एक समैमैं आप लखो सब तुमहो लोकालोक निहारी ॥३॥

सिद्ध सिलापर राजमान हैं, अब आगे होंगे निरधारी ।
बखतेन मनवच तनकर बंदै स्वामी निजपद दीजे मोक्षसारी ॥
श्रीसिद्धलोक स्वामी सिद्ध बिराजे निजपद धोक त्रिकाल हमारी ४

(६) दादरा ।

श्रीआदि जिनेश्वरकी छबिलखि, आनंद मोरे भयेभयेहो ॥टेक॥
नाभिराय मरुदेवीके नंदन, जन्म अयोध्या नगर लगे ॥
श्रीऋषभदेवजी तुम कूं लखि, नैना सफल भये भये ॥ १ ॥
प्रभु तुम रूप निहारण कारण, सुरपति नेत्र हजार ठगे ।
धरि धरि ध्यान मुनीश्वर तुमरो, शिव पद लये लये ॥ २ ॥
कहन कहां लौं महिमा तुमरी, गणधरादि नहिं पार लये ।
तारण तारण तुम कूं बखतेन लखि, सरणा गहे गहे ।
श्रीआदीश्वरकी छबि लखिकर, आनंद मोरे भये भये ॥३॥

(७) राग कालिंगड़ा

प्रभु आदि जिनेश्वर भावे, जोतिन देव सुहावे ॥ टेक ॥
नाभिराय मरुदेवी सुतको, तीनि लोक शिर नावें ॥ १ ॥
सुरनर मुनि जाको ध्यान धरत हैं, इन्द्रादिक जस गावें ॥२॥
श्रीआदिदेव पुरुषोत्तम स्वामी, बखतेन तुम कूं ध्यावै ॥ ३ ॥

मिथ्या तमहर ज्ञान दिवाकर, भ्रमतम मोरे हरो जिनचंद।
बलदेव तुमकूं ध्यावै निरंतर, प्रभु मोय करो निरद्वन्द ॥ ५

[९] राग कजली ।

स्वामी संभव जिनंद, मोरी संभ्रम हरो ॥ टेक ॥
पिता जितारि सेना देबी माता, अश्व चिन्ह गुणवंत वरो॥१॥
धनुष च्यारि सततुंग काय सुभ, आयु साठ लख पूर्व धरो॥२॥
तुमत्रिभुवन नायक बाज्यंक धरो, हमरी उदयागतिकर्महरो॥३॥
चिन मूरति आप अनंत धरो, शरणागतिकी भय भीत हरो ॥४॥
प्रभुभक्ति अचिंत्य सही तुमरी, हमरी विसुद्ध दशा जु करो॥५॥
तुमरी सरना बलदेव परो हमको भव सागर पार करो ॥ ६ ॥

[१०] राग-चाल-जैसे बनै जैसेत्यारो--

श्रीअभिनंदन जिनंदचन्द, मोरी भवदुख फंदनि दूरकरो॥टेक॥
वंश इक्ष्वाकु स्वयंवरराजा, जन्म सिद्धारथा उदर धरो ।
धनुर चाप त्रयसै पचासतन, कपि लक्षण साकेतपुरो ॥ १ ॥
सिद्धारथ नंदन त्रिजगत वंदन, पाप निकंदन दया धरो ।
भ्रमनपसत खंडन दुरित विहंडन, शिवसुखमंडन कुमतिहरो ॥२॥
जै शिवमंजन भव तम भंजन, मोह प्रभंजन सुक्ख करो ।
जै जै मनरंजन मन्मथ भंजन, गुण अनंत जयवंत वरो ॥ ३ ॥
मैं भव भ्रमण करत दुख पायो, सो तुमतै कछु नाहि दुरो ।
बलदेवकूं सेवक अपनो लखि, भवसागरसे पार करो ॥४॥

(११) राग ईमन कल्यान ।

ध्याऊं सुमति जिनंद, सुमति धर हो ॥ टेक ॥

(१५) दादरा बरसाती ।

चितवन म्हारी जिनचन्द सो अटकी हो ॥ टेक ॥
दरशन करत गये अघम्हारे, दूरि भई मिथ्या मत घटकी ॥१॥
धन्नभाग मेरे भये अबही प्रभु, परसत कुमता मोरी सटकी ॥२॥
प्रभु चरणनके दरश निहारत, विधिगणकी परणति सब झटकी ३
अरजकरे बलदेव प्रभुजी मोय, सेवा द्यो तुम चरणों निकटकी ४

(१६) रागईमन कल्याण ।

निरखि छबिचंद प्रभुजिनकी, भलामेरेआनंद उमगमम्हैया॥टेक
रोम रोम आनंद भयो म्हारे, उर अंम्बुज प्रफुलैयां ॥ १ ॥
शांति छबिके दरस करत, म्हारे आकुल ताप मिटैयां ॥ २ ॥
चंदपुरीमें जन्म लियो प्रभु शशि लक्षण दरसैयां ॥ ३ ॥
बलदेवकू शरण गति राख्यो, म्हारो भवतम भ्रमण नसैया ॥४॥

(१७) चाल चलोदेखो बधाईमोजवनी ।

श्रीपुष्पदंत भगवंत पाद युग, बन्दौ मन वच तन शिरनाय॥टेक॥
जन्मपिता सुग्रीव रमासुत, काकंदीपुर सत अनुकाय ॥ १ ॥
मगर अंकतन श्वेत कुंददुति, हो त्रिभुवन पति सब सुखदाय २
तुम भव भंजन शिवपद रंजन, गुण अनंत किम बरणो जाय ॥३॥
बलदेव कूं भवसागरते अब, पार करो त्रिभुवनके राय ॥ ४ ॥

(१८) पुनः

श्रीसीतल जिन सीतल दायक, तुमपदवंदौ मैं शिरनाय ॥टेक॥
दृढरथ तात सुनन्दामाता, भद्दलपुर जन्मे सुखदाय ॥ १ ॥
हेम बर्णतन तुंगनमैं धनु द्रुम लक्षण सोभै बरकाय ॥ २ ॥

आनन्द कंद अनंत गुणाकर सत इन्द्रनिकरि वंदित पाय॥३॥
ऐसे दयानिधिके पद पंकज बलदेव पूज्यो हर्ष बढाय ॥ ४ ॥

(१९) राग दादरा ईमन ।

निरखि छवि सीतल जिनवरकी, मेरे रोम रोम हरखाये ॥टेक॥
श्याम वर्ण पद्मासन मूरति, निरखत त्रिप्ति न थाए ॥ १ ॥
जन्म जन्म संचित मोरे पातिग, दरशन करत पलाये ॥ २ ॥
आज धन्य दिनवार मुहूर्त तुम पद शीश नमाये ॥ ३ ॥
बलदेव कूं देवो भक्ति तुम्हारी, हरख हरख गुण गाए ॥४॥

[२०] ख्याल मोपैनिशदिन गहोड नआय ।

श्रीश्रेयांस जिनराय, मेरी अरज सुणीजे हो ॥ टेक ॥
पिता विमल माता विपलादे, जन्मे सिंघपुर आय ॥ १ ॥
गेंडा चिन्ह वर्ण तनकंचन, चाप असीतन काय ॥ २ ॥
जै जै इन्द्र नरेन्द्र चन्द्रपति, त्रिजगत आनंददाय ॥ ३ ॥
बलदेव कूं भवफन्द काटद्यो, हो त्रिभुवनके राय मेरी अरज०॥४॥

२१ पुनः ।

श्रीवासपूज्य जिन पाय, वंदों भावसों मैं ॥ टेक ॥
वास पूज्य वसु पूज्य ततुज तुम, पाटल देव्या माय ॥ १ ॥
अरुण वरण तन महिष अंकपद सत्तरि धनुतन काय ॥ २ ॥
चम्पापुरमें पंच कल्याणक वंदत सुरनर आय ॥ ३ ॥
करुणा धारि बलदेव कूं भवते तारि तारि जिनराय ॥ ४ ॥

(२२) ख्याल डांढरदियो कांठे.म.र ।

विमलनाथ जिनराय विमल मति करि द्यो मोरी ॥ टेक ॥

नृप कृतधर्म मात जयसेना, कंचन दुति छबि छाय ॥ १ ।
जन्म कंपिला अंक सूर पद, साठ धनुष बरकाय ॥ २ ॥
गुण अनंत भगवंत धन्यो तुम, कापै बरणो जाय ॥ ३ ॥
बलदेवकी अरदास हिये धरि, भवदुखद्वन्द नसाय ॥ ४ ॥

(२३) पुनः

जै श्री अनंत जिनेश, अनंतगुण राजत होप्रभू । टेक ।
सिंहसेन सूर्यदेवीसुत कनकदुति जगतेस ॥ १ ॥
पुर साकेत पचास चापतनु, सेही चिन्ह महेस ॥ २ ॥
आयु तीसलख पूर्व धरी तुम, बंदतपद त्रिदशेश ॥ ३ ॥
बलदेव शरण गही तुम पदकी, काटौ कर्म कलेश ॥४॥

[२४] रागपीलू दादरा ।

अब मैं धर्मनाथ जिनध्याऊं ॥ टेक ॥
पिता भानु सुव्रतादे नंदन, भलाप्रभु बज्रअंक लषि नाऊं॥१॥
असरण सरण तरण तारण प्रभु, तुम गुणगण जस गाऊं॥२॥
धन चालीस काय सुभधारी, छबि लखि लखि हरषाऊं॥३॥
बलदेव यह जाचत है भव भव, भक्ति तुम्हारी पाऊं ॥ ४ ॥

[२५] रागबर्वेचाल अचरज लागेहो भारी--

अजी भला शांतिनाथ प्रभु थारी, मूरति मोय लागै मधुरी-प्यारी टेक
विश्वसेन एरादेवी सुन, हेम वर्ण छबि वारी ॥ १ ॥
हे मृगांकपद आयु बर्ष लष, तीर्थचक्र पदधारी ॥ २ ॥
देह तुंग चालीस चापधर, गुण अनंत विस्तारी ॥ ३ ॥
हे जिनशांति शांति पद दीजै, बलदेव शरण तुम्हारी॥४॥

[२६] राग हंसन ताल-थे शुद्ध सोमनभावें।

मैं शांति जिनेश्वर ध्याऊं मेरे अष्टकर्म गण शांति होय जिम ॥टेक॥
सोलम तीर्थंकर अघहरपत्नु, तुमरी मैं बलि जाऊं ॥ १ ॥
अष्टद्रव्य उत्तम शुभलेकर, वसुविधि पूज रचाऊं ॥ २ ॥
गद्य पद्य स्तुति पढ़िकरि प्रभुके बारबार जसगाऊं ॥ ३ ॥
ताल मृदंग बांसुरी आदिक, बहु विधि साथ बजाऊं ॥४॥
चन्द्रैयक भव भवमें तुमरी, सेवा फल यह पाऊं ॥ ५ ॥

[२७] भजनस्तुति।

स्वामी श्री कुंथनाथ छवि भारी, जाऊं मैं पद नख दुतिकी बलिहारी ॥ टेक ॥
पिता सूर्य श्रीमति माता शुभ, अजा अंक पदधारी ॥ १ ॥
हस्तनागपुरी नगर नागपुरी प्रभु, जग जीवन सुखकारी ॥ २ ॥
है निर्वाण कृष्ण टिक वैशाख, शांति लियें शिवधारी ॥ ३ ॥
कोटि चन्द्र रवि इंद्रादिकन, तुम पद नख द्युतिभारी ॥ ४ ॥
दयालीनता यह शरण थारि अब भवसंकट हरितारी ॥ ५ ॥

(२८) रागदुर्गा-दादरी के गरवा कहायो भीत गीतन।

श्री अरनाथ स्वामी पद वंदौं, हरो कर्म अरि भारा हो टेक
पिता सुदर्शन मात सुमित्रा, कुक्षि लियो अवतारा हो।
तनु कंचन धनुतीस तुंग तनु कुरुवंशनि सिरदारा हो ॥ १ ॥
आयु लखी चवरासी वर्षकी, हस्तनागपुर प्यारा हो।
दीर्घ भोग सुखराज्य हो तुम, चक्रवर्ति पद धारा हो ॥ २ ॥

कर्म चक्रहरि धर्म चक्रधर मोह शत्रु निरवारा हो।
नंत चतुष्टय लब्धिपाय भये गुण अनंत भंडारा हो ॥ ३ ॥
हे प्रभु दीन दयाल कृपाल। जन्म जरामृत टारा हो।
बलदेवकू भव भवमें तुम पद सेवा द्यो भवतारा हो ॥ ४ ॥

(२९) रागपूरवी उपरोक्त—

श्री मल्लिनाथ महराज दयाकरि, मोहचक्र मेरा चूर हो। टेक।
कुंभराजके पुत्र प्रजापति मात भये सुख सूर हो।
तुंग धनुष पच्चीस काय है कनक वर्ण गुण पूर हो ॥ १ ॥
मिथिलापुरमें जन्म महोत्सव चिन्ह कलस दुख चूर हो।
इन्द्र नरेन्द्र सतेंद्र नवैं पद पावैं सुख भरपूर हो ॥ २ ॥
तुम गुणगणको पार नही प्रभु अनुपम आनंद पूर हो।
बलदेवकूं निजदास जानि अब दुःख करो सब दूर हो ॥३॥

(३०) चाल रागकजली—

मुनि सुव्रत जिनराज, मोरे सारो सब काज ॥ टेक ॥
पिता सुहमंत मात श्यामादे श्री हरिवंश सिरताज ॥ १ ॥
जन्म राजग्रह श्यामवर्ण छवि, कछु लक्षण पदसाज ॥ २ ॥
बीस धनुष तन तुंग बिराजे, आनंद सुक्ख समाज ॥ ३ ॥
बलदेवकी भव व्याधि हरो तुम, तारण तरण जिहाज ॥४॥

(३१) चाल-वारीपोधाईया रसभीनी—

नमि जिनराज दयाकरो मोरी ॥ टेक ॥
नृप बिजयारथ बिप्प्यादेवी, सतपत्र अंकपद सेऊं तोरी ॥१॥
हेमवर्ण तन तुंग पंच दस, मिथिलापुर इच्वाक बंश धोरी ॥२॥

आयु सहस दस वर्षधरी तुम, करुणाधरि विधि फांस हरो मोरी
असरण शरण नरण तारण तुम, त्रिभुवनचंद जगत सिर मोरी ॥
बलदेवकी भवव्याधि दूरिकर, द्यो अविचल पद आस भरो मोरी

(३२) चाल भावलिया जेसे बने वैसे नारो

श्री नेमनाथकी मणि मयंगु छवि, म्हारेमन बसि गई हो ।
श्री समदविजै नृपनंद नेम छवि, श्री जै मैं नेम जिनेंद्रनंद छवि । टेर
समदविजै शिवदेवीके घर उत्सव मांगी पुर गई हो ॥ १ ॥
छपन कोटि जादोमंग लेकरि, जूनागढ बरात गई हो ॥२॥
सुर नर नाग नमे पद तुमरो, जादोंपति आनंद भई हो ।
जै गुणगण धारी त्रिपुरारी तुम मन्मथ जय लई हो ॥ ३ ॥
हे कृपाल जगपाल दयानिधि ज्यों पसु करुणा उर लई हो ।
प्रभु त्योंही जानि बलदेवकूं द्यो निधि निजगुण पूरण भुग भई हो ॥

(३३) चाल- गिरधारी मोहको धारे -

श्री नेमिछवि लागे, मुझकूं प्यारीरे ॥ टेर ॥
समुद्र विजै शिवा देवी सुतकी, मेळविपर ननपननारीरे ॥१॥
गिरनार गैरे हृदय विराजे छवि, इकछिन होत न न्यारीरे॥२॥
अनुपम अद्भुत राजत है प्रभु, भव जनकूं सुखकारी रे ॥३॥
बलदेवकूं अपनाकर लीजे, मैं पकडी शरण तुम्हारी रे ॥४॥

[३४] चालभलियाकी लटक अटकी -

श्रीपार्श्व परम गुणराशि, पार्श्वछवि ननमन बसगई हो ।
मनहो मोरी छवि मन धसिगई, श्री शिवपुरगामी परभंज ॥टेर॥

पिता अश्वसेन मात बामादे नग्र बनारसि धनि भई हो ।
प्रभु सजलजलदतन प्रगट भये त्रिभुवन मन सुख भई हो ॥१॥
कमठ दलन प्रभु मुकटसपदफरा, मन्मथजय सब सुख दईहो ।
प्रभु जरतनाग जुग बोधदेय, भूवनेश्वर करदई हो ॥ २ ॥
चिंतामणि भय हर सुखसागर, सुजस उजागर जगभई हो ।
प्रभु हे करुणाधर तुम पदकूं जपि जपि बहु शिव लईहो ॥३॥
भव भव भक्ति देओ प्रभू मोकूं, यह बांछा उरमें भईहो ।
बलदेव तुम पद चरण शरण, मन बच तन गहि लई हो ॥४॥

(३५) उपरोक्त—

श्री पार्श्वप्रभुकी छवि लखिकरि आनंद उर बसिगई हो टेक
अश्वसेन नंदन जगवंदन, नगर बनारसि जन्म लियो ।
जहां इन्द्रादिक सुर सेव करत, मनहुल्लसिहुलसि रही हो ॥१॥
पतित उधारन शिवसुख कारण दीनदयाल कृपाके सागर ।
प्रभु तुमपद दरश निहा तहि मोरी कुमति बिनसि गइ हो ॥२॥
अद्भुतरूप अनुपम सुंदर निरखत मन आनंद भयो ।
अब दास कहे तुमपद परसत बिधिगण सब नसिगई हो ॥३॥

[३६] चाल बेरनियां लगिगई आंखरे ।

दर्शन करत पार्श्व प्रभुजीको अष्ट कर्मगण शांति भये ॥टेक॥
आजही जन्म सफल भये मेरे, मिथ्या-तम मल दूरि भये ।
भव भवके संचित अघनासे, निज शुद्ध भाव पिछान लये ॥१॥
शांति छबि पद्मासन मुरति निरखत मन आनंद भये ।
ध्यानारूढ़ निहार छबिको, कुमति ध्वांत तम नाश भये ॥२॥

अब भव भक्ति देवो प्रभु यांची, चरण कमल मन भाय रह्यो ।
तारण तरण तुम्है निश्चै लखि, बलदेव शरणो आनिलयो ॥३॥

[३७] राग परज—तर्ज-मेरो मनवा अति हरषाय—

मेरे मनमें रही समाय । छवि जिन पारसकी ॥ टेक ॥
शांति छवि पद्मासन मूरति, देखत पातिग जाय ॥ १ ॥
छत्र चमर सिंहासन राजत, भामंडल छविदाय ॥ २ ॥
सुरनर नागनिमि पद लागे, सब जीवन सुखदाय ॥ ३ ॥
बलदेव कूं शरणा राखो आवागमन मिटाय ॥ ४ ॥

[३८] चाल सांवलिया मोहि के पारसनाथजीरे—

स्वामी श्रीमहावीर अब मेरी हरो भव पीर ॥ टेक ॥
सिद्धारथ त्रिशलाके नन्दन हो, अब मेरी धारो करुणा धीर ॥१॥
दुःखी भयो मैं भव वन भटकत, अब प्रभु मोरी भागे सुखसीर ॥२॥
भव सागरमें डूबत है मैं, अब प्रभु करो भव जलतीर ॥३॥
बलदेव सब जग जनकी विनती हो, अब मोरी राखो शरणमें धीर ॥४॥

[३९] चाल—राग दादरा—

श्रीस्वामी महावीर, अरज सुनि लीजो ॥ टेक ॥
सिद्धारथ त्रिशलाके नन्दन, मोहे शिवपुर बास अब दीजो ॥१॥
दुःखी भयो भव वनमें भटकत, अब मेरो दुःख दूर करि दीजो ॥२॥
तुम गुण महिमा पार नहीं प्रभु, अब मनुप्रीत अपनो करि लीजो ॥३॥
बलदेवको जन्म मरण मेटो, भव सागर तारि लीजो ॥४॥

[४०] चाल—आज गजल भाई अंगना—

श्रीपार्श्वनाथ निरखि छवि प्यारी, मन मगन भयो मेरो ॥ टेक ॥

शीश सफल अबही भये मेरो, तुम चरणांबुज नये नये।
चिंतामणि तुम वदन बिलोकत, नेत्र सफल मोरे भये भये॥१॥
रसना सफल भइ जब मोरी, तुम थुति गुण उचार गये।
चरण कमलको परसतही, सब अंग सफल मोरे भये भये॥२॥
आजही रिद्धि मिली सब मोंकू, दुख दुरि सब गये गये।
बलदेव कहत तुम दरशण पाये, सब अर्थ सिद्धि भये भये॥३॥

[४१] चाल–नेमजीसूकोन कहे ब्रह्मचारी–

अर्ज महावीर सुणों प्रभु म्हारी, मैं शरण आनि गहिथारी॥टेक॥
एहां सिद्धारथ त्रिशलाके नन्दन, त्रिभुवन आनन्द कारी।
बर्द्धमान सन्मति गंभीर तुम, हरी अंक पद धारी॥ १ ॥
एहां पावापुरते मुक्ति वरं, कातिक वदी मावसकारी।
इन्द्रादिक सब पूजरचाई, दीपोत्सव भये भारी॥ २ ॥
एहा अबलों बिन तुममें चहु गतिमें, दुख भुगते अतिभारी।
दीनानाथ दयाकरि त्यारो, वलदेव शरण तुमारी॥ ३ ॥

[४२] राग कानडे––चाल–देखनदे मुखचंद––

श्री महावीर जिनंद, बिघन हरहो॥ टेक॥
सिद्धारथ त्रिशलाके नंदन, केहरी लक्षण अंक॥ १ ॥
वीर धीर प्रभु त्रिभुवनपति नायक, सत इन्द्र निकरि बंदि॥२॥
बिघन हरण शिव मंगल सुखके दाता, तुम्हीहो भगवंत॥३॥
निश्चै करि तुम पदनख थुतिकी, बलदेव शरण गहंत॥ ४ ॥

[४२]—दोहा । छन्दमा—

श्री पांचों परमेष्ठिनपि, मणमिशारदा माय ॥
अवगुण माल विशालपद, गाऊंगो हरषाय ॥ १ ॥
श्री चौबीस जिनेंद्र पद, बन्दौं मन वचकाय ।
रुकदेव कूं निजदास लखि, सुमति देवो सुखदाय ॥२॥
क्षेत्र विदेह विषै महा, तिष्ठै श्री जिन हाल ।
बलदेव बारंबार करि, तिनकूं नावै भाल ॥ ३ ॥
तीनलोकके जिन भवन, सब जिन प्रतिमा सार ।
तिनपद वंदौ भाव युत, सरधा चितमें धार ॥ ४ ॥
सिद्ध क्षेत्र तीरथ सबी, संमेदादि महान ।
तिन को वंदो भाव युत, मन वच तन धरि ध्यान ॥५॥
तीन प्रकार निर्ग्रंथ गुरु, ढाई द्वीप मझार ।
तीन घाटि नौ कोड़ि सब, तिनको वंदौ सार ॥ ६ ॥
जिन वाणी उर धारि कै, भक्ति भाव चितलाय ।
गाऊं गुण माला अबै, बुद्धि अनुसार बनाय ॥ ७ ॥

[४३] राग प्रभाती —

अजी भव्या हो । गाऊं गुणमाला अब चौबीसों जिनंद की ।
रिषभादिक महावीर प्रभंत जी, गाऊं गुण मालायैं श्री चौबीसों०
॥ टेक ॥ रिषभ अजित संभव श्री अभिनंदनकी,
सुमति पद्म सुपारस श्री प्रभुचंदकी ॥ १ ॥
पुष्पदन्त शीतल श्रेय जिनंदकी, वासपूज्य विमल अनंत धर्मचंद ॥२॥
शांति कुंथु स्वामी अरह संतकी, मल्लि मुनि सुव्रत स्वामी नमि

नेमचन्दकी ॥ ३ ॥ पार्श्वनाथ प्रभु महावीर संतकी,
बलदेव मन वच तन कर गावैं गुण सिंधुकी ॥ ४ ॥

(४५) राग दीप चंदो।

श्री आदीश्वर जिन राजजी, मोय राखो हो शरणा।टेक॥
श्री नाभिराय मरु देवीके नंदन, जन्म अयोध्या धरणा।
कनक वर्ण वृषभांक विराजे, कृपा सिन्धु भय हरणा॥ १ ॥
कर्म भूमि की आदि रीति सब, धर्म प्रगट तुम करना।
आदि विधाताहोय महेश्वर, सब जनके दुख हरना ॥ २ ॥
कर्म रीति करि धर्म रीति धरि, नंत चतुष्टय धरणा।
आप तिरे भवि जन बहुतारे, फिरि लोक शिखर थिति करना॥३।
गुण अनंत भगवंत धरो तुम, कहों कहां लौं बरणा।
बलदेव कूं निजदास जानि मेरे, जन्म मरण दुख हरणा ॥४।

[४६) राग खंमाच।

मोरि सुधि लीजो अजित जिनंद अरज हमारी सुनो जिनचंद ॥ टेक ॥ हे त्रिभुवन पति (जिनवर) सब के स्वामी, राजा जितसत्रु विजयादे नंद ॥ १ ॥ दुखी भयो भववनमैं तुम बिन हो, तुम भव तम भंजन चंद ॥ २ ॥ कर्म शत्रु मेरे लार लगे हैं, इन दुख दीनो बहु विधि दंद ॥ ३ ॥ बलदेव कूं निजदास जानि कर, अब मोरे काटो कर्मप्रबंध ॥ ४ ॥

[४७] चाल–रासधारीनकी

दरशन दीज्यों मोय संभव जिनंद, अहा संभव जिनंद मोय० ॥ टेक ॥ राजा श्री जितारि माता जय सेन दे नंद,

अश्व चिन्ह सोहै सुखके है कंद ॥ १ ॥ तुम दरशन बिना है जिनचंद, मैं लख चौरासी गति मैं पायो दुख दंद ॥ २ ॥ तुमत्रिभुवनपति करुणा के वृंद, सो करुणाकरि हरो दुख द्वंद ॥३॥ अब मैं तुमरी शरणा आयो किरपासिंधु, बलदेव तुम गुण गावै काटो विधि फंद ॥ ४ ॥

(४८) रागभनाखिरी ।

मैं वन्दो अभिनन्दन स्वामी २ ॥ टेक ॥ पिता स्वयंवर माता सिधारथा । कपि लक्षण पद गामी ॥ १ ॥ वंस इक्ष्वाक अयोध्या नगरी । कनक वर्ण अभिरामी ॥ तुंग धनुष ढ्ग मे पचास तन । गुण अनंत सुख धामी ॥ २ ॥ सुरनर मुनि जन कर पद वंदित । केवल रिद्धि प्रगटामी । बलदेव तुम चरणन को चेरो, शिव अंतर जामी ॥ ३ ॥

(४९) राग भंभोटी ।

सुमति जिन साहबा, मोको सुमति दीजीयोजी ॥ टेक ॥ सुमति देवो सुमता मोरी नसावो, भर्मो फर्मो प्रभु म्हारी सुधिलीज्यो जी ॥ १ ॥ सुमति जिनेश करो प्रभु अब मोय, अपनो कीज्यो जी ॥२॥ सुमति सदा जन भवभंजन, विनती सुनिज्यो जी ॥३॥ बल्देव शीश नाय विनवै, मोय शिव पद दीज्यो जी ॥ ४ ॥

[५०] राग दीपचंदी ।

श्री पद्म प्रभु पद ध्याऊं, मन वचन काय शिर नाऊं ।टेक॥ नृप धारनेश सुसीमा नंदन, कोशांबी पुर गाऊं,

पद्म राग मणि वर्ण धरो छवि, सोभा कहत न पाऊं ॥ १ ॥
पद्म अंक पद मांहि विराजे, पद्मासनि वलि जाऊं,
देह चाप ढाईस तुंग तन, निरखि २ हर षाऊं, ॥ २ ॥
अष्ट द्रव्य शुभ उत्तम लेकर, वसु विधि पूज रचाऊं ।
वीन मृदंग वजाय गाय गुण, आनंद हर्ष वढाऊं ॥ ३ ॥
तुम गुण गनको पार नही मैं, तुच्छ बुद्धि किमि गाऊं ।
बलदेव तुम पद कमलनि की, प्रभु सेवा भव २ पाऊं ॥४॥

[५१] राग काफीहोलीत्रिताला।

श्री सुपार्श्व जिनराय हो मेरी अरज सुणो तुम । टेक ।
नृप सुप्रतिष्ठ पृथ्वी देवी सुत, हो त्रिभुवन के राय हो ॥१॥
नग्र वणारस जन्म लियो तुम प्रभु, तन जुग सतधनु काय ।
हरित वर्ण तन क्रान्त अनोपम, स्वस्ति अंक दरसाय ॥ २ ॥
अनंत गुणाकर राजत हो प्रभु, इन्द्रादिक सेवै पाय ।
बलदेव तुमरी शरण गहो, मेरा भव भ्रम देहु मिटाय ॥ ३ ॥

[५२) राग काफीहोलीत्रिताला ।

चंद्र प्रभु जिनचंद, भव तम ध्वांत हरो मेरी । टेक ।
चंदपुरी माहासेन नृपति सुभ, माता सुलक्षणा नंद ॥ १ ॥
चतुर चकोर चंद चितवत ज्यों, चंद चरण चितवंत ।
त्रिभुवन चंद लक्षणा जुत, चंद वर्ण चिदानंद ॥ २ ॥
कर्म चक्र चकचूर चिदांतम, चिरतमहर गुण चंद ।
बलदेव तुम चरणनको चेरो, चूरो चिर भ्रम फंद ॥ ३ ॥

[५३] राग काफीहोली देशमिश्रित।

श्री पुष्पदंत जिनवर जगतेस मैं तुमैं वंदौं त्रिविधि जिनेस, ॥टेक॥
नृप सुग्रीव माता रामादे, वंश इक्ष्वाक अंक मकेश ॥ १ ॥
काय एक सत चाप तुंग तन, आयु दोयलख पूर्व महेस ॥२॥
काकंदी पुर वर्ग जन्म सुभ, त्रिभुवन मन तम हरन दिनेश ॥३॥
चन्द्रेव तुमरे चरण शरण गहि, प्रभु मांगै काटो कर्म कलेश ॥४॥

(५४) राग काफीहोलीमिश्रित

श्रीशीतल जिन मो पद दरसन देय, यह मेरी अरजी चितधरि लेय टे॰
दृढ रथ तात सुनंदा माता, भद्दल पुर कंचन छवि देय ॥ १ ॥
आयु पूर्व लख तुंग नवे धनु, सुर द्रुम लक्षण अंक धरेय ॥२॥
वंश इक्ष्वाक कुल थं [illegible], सुर नर मुनि जन सेव करेय ॥ ३ ॥
चन्द्रेव वारंवार विनवै प्रभु, सानन्द मांग शिवपुर देय ॥ ४ ॥

(५५) राग देश

श्री श्रेयांसनाथ जिनस्वामी हो। मेरी अरज सुनौं शिव गामी ॥ टेक ॥ पिता विमल माता विमलादे। गेंडा अंक पद नामी ॥ १ ॥ आयु अर्सीतन तुंग विराजे। गुण सागर सुख धामी ॥ सिंहपुरी सुभ रूप गर्भ छवि। त्रिभुवन आनंद दामी ॥ २ ॥ मैं भव भ्रमण करत दुख पायो। तुम सब जानौं अंतर जामी ॥ चन्द्रेव कू अपनी भक्ति दीजो। शिवनन्द पद शुभ धामी ॥ ३ ॥

(५६) पुनः

श्री वासुपूज्य जिन स्वामी। [illegible] अंतर यामी ॥ टेक ॥

नृपवसु देव माता विजया । छवि पद्मराग मणि धामी ॥ १ ॥
सत्तर धनुष काय सुभ राजै । महिष चिन्ह पद गामी ।
लक्ष बहत्तर आयु धारि प्रभु । गुण पुरण विश्रामी ॥ २ ॥
चंपापुर मे पंच कल्यानक । भये प्रगट सिर नामी ।
बलदेव की करुणाचित धरि । मेरो भव भ्रम देहु मिटामी ॥ ३ ॥

(५७) राग दादरा खेमटा—

भला स्वामी विमल विमल करतार । अब मोय राखो शरण निरधार ॥ टेक ॥ नृप कृतधर्म मात जय सेना । कँपिल पुर अवतार ॥ १ ॥ कंचन वर्ण सुर पद सोहे । हे त्रिभुवन सुखकार ॥ २ ॥ सुर नर नाग नमैं तुम पद कूं । शिव रमणी भरतार ॥ ३ ॥ तुम पद कंज गहे बलदेव नर । मुक्त रमा उनहार ॥ ४ ॥

(५८) राग दादरा खेमटा

श्री अनंत नाथ मोय त्यारि, अब मोरी करुणा चितधारि ॥ टेक ॥
सिंघ सेन सुर्या देवी सुत, सेही अंक पद सार ॥ १ ॥
अवधि पुरी सुभ कनक वर्णतन, धनु पचास विस्तारि ॥ २ ॥
वर्ष तीस लख आयु पाय करि, भव्य करे भव पार, ॥ ३ ॥
बलदेवकी करुणा चित धरि के, भव भ्रम दुख देवो टारि ॥४॥

[५६] राग सोरठ देश ।

धर्मनाथ मन भाई हो आज म्हाने, धर्मनाथ मनभाई हो ॥ टेक॥
पिता भानु सुव्रता देवीसुत, लक्षण वज्र सुहाईहो ॥ १ ॥
तन कंचनरत नागपुरी सुभ, आयु लक्ष दश पाई हो ॥ २ ॥

चत्वारीस चाप तन सोहै, त्रिभुवन जन सुखदाई हो ॥ ३ ॥
अथरमनासि धरम परगास्यो, बलदेव तुम पद ध्याई हो ॥४॥

[६०] पुनः चालीचालमें—

शान्तिनाथ जिनराय हो त्यारि म्हाने, प्रभु त्यारि म्हाने ॥टेक॥
पिता विश्वसेन एरादे माता हेमवर्ण छवि छाई हो ॥ १ ॥
नगर नागपुर धनु चालीसतन, मृग लक्षण दरसाई हो ॥ २ ॥
लख वर्ष थिति आयु चक्र पद, त्रिजग शांति पद दाई हो ॥३॥
शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो मम, बलदेव तुम गुणगाई हो ॥४॥

[६१] गजल—

कुंथु जिन राज भव दुखित, मोपे जलदी उबारोगे ॥ टेक ॥
पिता सूर सूर्य था श्रीमति, पुरीगज नाग सुखदाई ।
वर्ण तन हेमछवि छाजै, मेरे भव दुःख निवारोगे ॥ १ ॥
धनुष पैंतीस शुभ काया, नमें षट खंड के राया ।
गजापद छक गाजनहो, मेरे कारज सुधारोगे ॥ २ ॥
मैं तुम बिन भव सागरमें, पड़ा हूं कर्मके बस में ।
घोर संसार सागर तें, तुम्हीं मोको निकारोगे ॥ ३ ॥
अहो जग पूज्य शिवदायक, हो लोकालोकके नायक ।
अरज बलदेवकी सुनिये, मेरे सन्मुख जागोगे ॥ ४ ॥

[६२] गजल—

अरह जिनराज स्वामी हो, कर्म अरिसे बचाओगे ॥ टेक ॥
पिता नृप सुदर्शन है सुमित्रा, मातु अवनाग ।
[illegible] तन है कुरुवंशी, हमैं दर्शन दिखावोगे ॥ १ ॥

पुरी गजनाग सुभसोहे, मीनपद अंक मन मोहे ।
तीस तन चाप सुभकाया, हमारा दुख मिटावोगे ॥ २ ॥
आयु सब सहस चौरासी, नवों निधि चक्र पद स्वामी ।
नमै तिहुं लोकके बासी, प्रभु मेरे अघ नसावोगे ॥ ३ ॥
यही संसार सागरमें, वह्या हूं जात मझधारा ।
सुनो प्रभु अरज बलदेवकी, मोय शिवपुर पोहचावोगे ॥४॥

(६३) राग जंगला कजली—

मल्लिनाथ मेरा हो, मोहमल्ल कूं चूर ।' टेक ॥
कुंभरायनृप मात प्रजावति हो, कनक वर्ण जिमि सूर ॥ १ ।
तुंग धनुष पच्चीस काय सुभ, चिन्ह कलश गुण पूर ॥ २ ॥
मिथिलापुर अवतार धार करि, सबके किये दु ख दूर ॥ ३ ।
बलदेव की भव व्याधि दूर करि, शिव सुख देवो हजूर ॥४।

[६४] पुनः

मुनि सुव्रत जिनहो, मोरे करो दुःख दूर ॥ टेक ॥
नृप सुहमंत मात श्यामादे, श्रीहरिवंश कुलपूर ॥ १ ॥
वीस चाप शुभ काय विराजे, कछु लक्षण पद पूर ॥ २ ॥
जन्मराज ग्रह मणि मयंगु छवि, गुण अनंत भरपूर ॥ ३ ॥
बलदेव मन वच तन सिरधारे, तुम चरणनिकी धूर ॥ ४ ॥

[६५] कहरवा खेमटा—

नमि जिनवर महाराज, आज भव व्याधि हरो मेरी ॥ टेक ॥
नृप विजयारथ विख्यादे सुत, त्रिभुवन जन शिरताज ॥ १ ॥
हेम वर्ण तन अंक पत्र सत, मिथिलापुर सुभ साज ।

आयु सहस्र दस तुंग पंचदश, आनंद सुख समाज ॥ २ ॥
वंस इक्ष्वाक कनार्थ कीयो तुम, तारण तरण जिहाज ।
बलदेव की भव व्याधि हरो प्रभु, तुमहो गरीब निवाज ॥ ३ ॥

[६६] पुनः

श्रीनेमिश्वर जिनराज, आज प्रभु अरज सुनो मोरी ॥ टेक ॥
समुद्र विजैजीकालाडिला हो, जादों कुल सिरताज ॥ १ ॥
सौरीपुर दसचाप कायतुम, नित्त संख पद साज ।
मणि मयंगु छवि शिवदेवी सुत, तुम भव जलधिजिहाज ॥२॥
हे त्रिलोक पति करुणा सागर, राखोगे मोरी लाज ।
बलदेव कूं लखि दास आपनो, देवो शिवपुरकोराज ॥ ३ ॥

(६७) रागदेश—

म्हांनें श्रीपार्श्वनाथ जिनराजा, मोय तारो गरीब निवाजाहो ॥टेक
अश्वसेन वामाजी के नंदन, मोरे सारो सब काजा हो ॥ १ ॥
नव कर तन प्रभु आयु चापसत, प्रभु गजन्द जलद तन ताजाहो॥२॥
कमठ मान भंजन निरंजन हो, अब राखोगे मेरी लाजाहो॥३॥
बलदेव कूं भवसागर त्यागो है प्रभु, तुमहो धर्म जिहाजाहो॥४॥

[६८] पुनः ।

म्हांनें प्यारा महावीर गरज मैं थारी, अब राखोगे लाज हमारी॥टेक॥
सिद्धारथ त्रिसला के नंदनहो, जग जीवन हित कारी हो ॥१॥
कुंडल पुर तुम जन्म लियो प्रभु हो, हरी अंक पद धारी हो ॥२॥
आयु बहत्तर वर्ष धरी प्रभु, हेम वर्ण आकार भारी हो ॥ ३ ॥
वीर महावीर वीर धीर तुम, सन्मति पद सुखकारी हो ॥ ४ ॥

अंतिम तीर्थं कर अघहर प्रभु, बलदेव शरण तुमारी हो ॥ ५ ॥

(६९) पद स्तुति ।

श्रीचोवीसों जिन चंद । मोरी भय बाधाहो हरणा ।
नाथ मोरे चहुं गतिके दुख हरन', श्री चौवीसों जिनंद ॥टेक॥
श्री रिषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म प्रभु चरणा ।
श्री सुपार्श्व चंदाप्रभु देवा, पुष्पदंत सुख करना, ॥ १ ॥
एजी श्री शीतल श्रेयांसनाथ प्रभु, वास पूज्य पद शरणा,
विमल अनंत धर्म पद सेवू, शांति शांति मोरी शरणा ॥ २ ॥
श्री कुंथुं नाथ प्रभु अरह नाथ स्वामी, मल्लिनाथ मन चरना ।
मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर धीर तेग शरणा॥३॥
कृपा सिन्धु तुम दीन बन्धु प्रभु, यह अरजी चित धरना ।
बलदेवके भव भ्रमण मेटि मोय, निज गुनमय सुख करना ॥४॥

(६९) राग काफी होली ।

ऊंकार मनाऊं, पंचपरमेष्ठीध्याऊं ॥ टेक ॥
येही मंगल येही उत्तम इनहीको सरणो धराऊं ।
अरहत् सिद्ध आचारज भजकर उपध्याय साध मनाऊं ॥
इनै हिरदेमैं धराऊं । ऊंकार मनाऊं ॥ १ ॥
गुणछालीस आठ पुनि छतिस पचीस आठ बीस गाऊँ ।
सिद्ध खेत्र सम्मेदादिक, विहरमान प्रभु ध्याऊं ॥
गुरू निर्ग्रंथ सराऊँ । ऊँकार मनाऊँ ॥ २ ॥
तीनलोक जिन भवन जिनो कूं, जिन प्रतिमाको नाऊँ ।
कृतिम अकृतिम सवही बंदों, सिद्ध निरंजन ध्याऊँ ॥

त्रिविधि त्रिकाल मैं गाऊँ । ॐकार मनाऊँ ॥ ३ ॥
द्वादशांग जिनवाणी जिन श्रुत, रतन त्रय चित लाऊं ।
चन्द्रदेव मन वच तन करि प्रभु पद, इनकूं बारंबार शिरनाऊं ॥
जातैं अविचल पद पाऊँ । ॐकार मनाऊँ ॥ ४ ॥

(७०) राग काफीहोली ।

चौबीसों जिन राई, तिन्ह पद नमशिर नाई ॥ टेक ॥
श्री वृषभ देव वृषभांक विराजे, अजित नाथ गजराई ।
संभव अश्व अभिनंदन कपि, सुमति कोकदरशाई ॥
पद्मप्रभु पद्म धराई । चौबीसों जिन राई ॥ १ ॥
स्वस्तिक सुपार्श्व चंद्र चंद्र प्रभु, पुष्पदंत मकराई ।
शीतल द्रुम श्रेयांसजु गेंडा, महिषवास पूज्य राई ॥
विमल जिन सूकर दिखाई । चौबीसों जिनराई ॥ २ ॥
अनंत जु सेही धर्म वज्रधर, शांति मृगांक सुहाई ।
कुंथुजु छेला अरह मीन शुभ, मल्लिकलश मनभाई ॥
कच्छ मुनि सुव्रत गाई । चौबीसों जिन राई ॥ ३ ॥
नमि मन पद्म शंख नेमीश्वर, पार्श्वनाथ फण राई ।
वीर प्रभु हरि लखि मनमोहन, चन्द्रदेव शरण गहाई ॥
मिलौ मोय तुमि भव २ माँहि, चौबीसों जिनराई ॥ ४ ॥

[७१] राग काफीहोली ।

श्रीजिन पूज रचाई, भलो मैं चंदन जुराई ॥ टेक ॥
कंचन झारी गंगा जल भरि, श्रीजिनन्हौन कराई ।
फिर वसु द्रव्य चोख शुभ ल्याय, पूजन मन ललचाई ॥

जातैं वहु पुन्य वढाई । श्रीजिन पूज रचाई ॥ १ ॥
फिर जल चंदन अक्षत लेकर, द्रव्य सुगंध मंगाई ।
नैवज दीपक फल उत्तम, वसु विधि अर्घ चढाई ॥
जन्म अब सफल कराई । श्रीजिन पूज रचाई ॥ २ ॥
ताल मृदंग झांझ ढफ मोचंग, ताल सुरनसों गाई ।
गीत नृतज्ञु महोत्सव करिकै, पांप की धूलि उडाई ॥
सुमति सों प्रीति लगाई । श्रीजिन पूज रचाई ॥ ३ ॥
सम्यक्त रंग गुलाल छाय सुभ, ध्यान अतर गरकाई ।
निज परणति सों होरी खेली, तो वल देव जिन गुणगाई ।
मोय शिव द्यो जिन राई । श्रीजिन पूज रचाई ॥ ४ ॥

[७२] राग काफीहोली ।

चौवीसों जिनचंदा, हरो मोरे भव भ्रम फंदा ॥ टेक ॥
श्रीरिषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्मका मैं वंदा ।
श्रीसुपार्श्व चंदाप्रभु सेवूं, पुष्पदंत हरि द्यो द्वंदा ।
श्रीशीतलेस जिनंदा । चौवोसों जिन चंदा ॥ १ ॥
श्रीश्रेयांसरु वास पूज्य नमों, विमल अनंत महंता ।
धर्मशांति प्रभु कुंथुनाथकों, प्रणमों अरह जिनंदा ॥
मल्लि मुनि सुव्रतचंदा । चौवीसों जिनचंदा ॥ २ ॥
नमि नेम प्रभु पार्श्व नाथकों, महावीर आनंदा ।
येचौवीस जिनेश्वर प्रभु कौं, वलदेव स्मरण करंदा ।
मोय देवो शिव सुख कंदा । चौवीसों जिन चंदा ॥ ३ ॥

[७३] राग काफीबावरा।

अजी एजी भलाश्रीचौवीस जिनंदचंद, मोरे जन्म मरण दुख हर दयोजी, अजी एजी भला० ॥ टेर ॥

श्रीरिषभादिक वीर जिनेश्वर, मेरा कारज सारि दयोजी ॥ १ ॥
आनंद कंद मनंद चंद मोरी, कुमता हरि सुख भारि दयोजी ॥२॥
तुम त्रिभुवन पति करुणा सागर, मेरा भी करुणा करि दयोजी॥३॥
चन्द्रदेव कूं निज गुण वसंत श्रौर, सुमति साथ शिव पुर दयोजी॥४॥

[७४]—मेरेमनमें वैराग भयोरे।

मेरे मनमें आनंद भयो है , अजी एजी भला,
श्री आदीश्वर जिन दरस पाय मेरे मन में० ॥ टेर ॥

नाभिराय मरु देवी सुनके, देखत पाप भगे है आज ॥ १ ॥
बड़े भागसे दरशन पाये, सुमति वसंत फूली है आज ॥२॥
कर्मनकी भजली होरी अब, पापकी धूरि उड़ी है आज ॥३॥
आदीश्वर प्रभु अब चन्द्रदेवकूं, फगुवा दयो निजनिधि समाज ॥४॥

[७५] गुन गावो वाल्यां।

अजी एजी म्हारा अजितनाथ त्रिभुवनके नाथ।
मेरी कर्मोंकी होरी दो जराय, श्री अजितनाथ० ॥ टेर ॥

श्रीजित प्रभु विजया दे नंदन, मेरे पापकी रज मनसों उड़ाय ॥१॥
सम्यक्ज्ञान गुलाल रंग शुभ, चारित्र अतर सुभग लगाय ॥२॥
सुचि पिचकारीसों रंग छिरको सुमति नारि संग प्रीति लगाय॥३॥
चन्द्रदेवको स्वामी अजित जिनेश्वर, निज पदरति में दो पिराय ४

[७६]—फाग होली।

श्री संभव महाराज आज, मोरी लेवो खबरिया ॥
अजी होजी प्रभु मोरी, लेवो खबरिया ॥ टेक ॥
राजा जितारि सेना देवी सुत, त्रिभुवन जन शिर ताज ॥१॥
तुम विन फाग अनंत विताये, सो दुख पाये बहु ताज ॥२॥
तुम पद सेवा फाग मिली अब, बडे भागसे आज ॥ ३ ॥
बलदेवकूं अब निज रस दीजे, रत्नत्रयनिधि साज ॥ ४ ॥

[७७] राग फाग होली।

अभिनंदन जिनराज, प्रभुजी मोरी भव भ्रम हरिया ॥टेक॥
संवर राय सिधारथा नंदन, राखोगे मोरी लाज ॥१॥
सत इंद्रन करि बंदित हो प्रभु, करुणा सिंधु जिहाज ॥२॥
मुक्ति महलमें निज त्रियके संग, होरी रमत सुख साज ॥३॥
बलदेवकी निज सुख वसंती, देवो गरीब निवाज ॥ ४ ॥

[७८] राग फाग व्रजकी धुनिमें—

सुमतिनाथ मोय सुमति देवो, अब जारो कुमति मयकी होरी हो ॥ टेक ॥ सेरूराय मंगला देवी सुन, तुमसों विनती मोरी हो ॥ १ ॥ सुमति विलंबकरी सुमताधर, सुमत सुधारस घोरी हो ॥ २ ॥ फूल्यो सुमन वसंत आज अब, देख सुमति तिय गोरी हो ॥ ३ ॥ मेरी सुमता सों मोहि मिलायो, बलदेव कहै करजोरी हो ॥ ४ ॥

[७९] पुनः याही चालमें

श्रीपद्मप्रभु देव दयानिधि, विनती सुनौ प्रभु मोरी हो ॥टेक॥

नृप धरणेश सुमीणा सुत प्रभु, याकी जाऊं बलहारी हो॥१॥
पद्म अंक पद्माभननमी सोहै, पद्मवर्णी छविधारी हो ॥ २ ॥
शिव गौरीकी केवल हारी, मोय दिखावो सुख भारी हो ॥३॥
सेवा अमल देवो तुम पदकी, बलदेव शरण तुम्हारी हो ॥४॥

(८०) राग काफी होरी

श्रीसुपार्श्व पद लखिशिरनाईरे । यह वसंत मोय नीकी भाई रे ॥ टेक ॥ श्रीसुपतिष्ठ पृथ्वी देवी सुत, स्वस्ति अंक शुभद्युति छविछाई रे । त्रिभुवनपति आनंद चंद प्रभु, निरखत उर आनंद बढाईरे ॥ १ ॥ जिनके पदां धर्म मय होली, मेय रही सुख आनंद दाईरे । इसी वसंत सुज्ञान अनपम. अनु भवनीको अतर लगाईरे ॥ २ ॥ अनिधिनकारी मां सम्यक् रंग, छिरकत भवि जनपर थिरगाईरे ॥ ३ ॥ बलदेव गद होरी अविनाशी, तीन जगतको है सुख दाई रे ॥ ४ ॥

(८१) पुनः

श्रीचंद्र प्रभु चंद आज मोरी, मोहध्वांततम हरयोजी ॥टेक॥
नृप महासेन सुलक्षण सुत, अवज्ञान चंद्रिका करियोज ॥१॥
चंद्रपुरी पद चिन्ह चंद शुभ, सेवा चिन्मय हरि निजपद धारयो ॥२॥
कर्मचक्र मेरो पूर्णचिदानंद, चिन्मय होरी आरी चोखी ॥३॥
चंद्र नरम चिन्ह बलदेव नाचे, पाय निज रंग मनमें रंगयो ॥४॥

[८२) राग-होरी [illegible]

श्री पुष्प दंत पद पुग वंदों, मैं मन वच काय० ॥टेक॥
पिता सुग्रीव माता रामादे, मगर अंक सोहे सुखदाय॥ १ ॥

प्रभु पद भक्ति मई होरी मैं, खेलों सम्यक रंग बनाय ॥ २ ॥
कर्म अष्टाकों इंधन लेकर, ध्यान अग्नि सों मैं होरी जराय ॥ ३ ॥
पापकी धूरि उड़ाय छिनक मैं, ज्ञान अबीर गुलाल लगाव ॥ ४ ॥
मुक्ति नारि प्रभु पद सेवन सें, बलदेव मिलि है निश्चै आय ॥ ५ ॥

(८३) होरी

श्री शीतल नाथजी अरज शीतल प्रभु दरश करत ही पापकी होरी मोरी जारीहो ॥ टेक ॥
दृढ रथ तात सुमात सुनंदा, भद्दल पुर जन्मे सुख कंदा ।
वंश इक्ष्वाक सुर द्रुमलक्षण, सुरनर मुनि जन सेव करी हो ॥१॥
आजही धनि दिन वार धन्य सुभ, आजही धनि मो सुघरी हो ।
आज धन्य वसु अंग नमावत, आजनेत्र मो सफल भई हो ॥२॥
कर्म काष्ट जो लग्यों अनादिकों, तामें ध्यान अग्निधरी हो ।
यह होरी सुभनीकीजरी, अब पाप की धूरि सबी जो उडीहो ॥३॥
निज सम्यकरंग ज्ञान गुलालरू, ध्यान अतर निज अनुभव सुभरंग रंगीरे । बलदेव शीतल पद पंकजकी, सेवन फाग खेलिये भली हो ॥ ४ ॥

(८४) चाल—करुंगी नगर मे सोररे—

श्रीश्रेयांस जिनराईहो, अजी होजी प्रभुमोय निज रंगमें रंगल्यौ ॥टेक॥
विमल राय देवीविमला सुत, मोरी विमल मतिकीजो जी ॥१॥
मिथ्या कुरंगलग्यों अनादिकौं, ताहि काटि प्रभु मोहि दीजै जी॥२॥
सम्यक् ज्ञान गुलाल अतर, ध्यान हृदे भरि दीजो जी ॥ ३ ॥
बलदेव कूं निजभक्ति अमल द्यो, मोयअपनो करि लीज्यो जी ॥४॥

[८५] चाल–थारी सावली सूरत पर–

अजी एजी स्वामी वास पूज्य जिन राई हो।

मोरी निज गुण मय होली रचाई ॥ टेक ॥

नृप वसुपूज्य पालने देख्यो सुत, अरजसुनो चित लाई हो॥१॥

निज गुण फाग विना प्रभुजी मैंने, अंत काल दुख पाई हो॥२॥

भाग उदे से तुम प्रभु पाये, त्रिभुवन पति शिव राई हो ॥३॥

चन्दनको अपनो सेवक लखि, शिव पद द्यो सुखदाई हो ॥४॥

(८६) राग होली।

सजी एजी स्वामी मोरी विमल मतिकीज्यों जी।

तुम प्रभु विमल विमल गुणधारक मोरी विमल मति० टेक

कृत धर्म नृप जै सेना दे सुत, विमल सुःख मोय दीज्योजी १

कर्म मैल हरि विमल भये तुम, सोही हमको कीज्योजी॥२॥

निज परणति विमलातम होरी, मोय दिखा अब दीज्योजी ॥३॥

विमल रंग मों चन्दनकोरंगि, विमलातम पद दीज्यो जी ॥४॥

(८७) होरी ·जिनमारग पिचकारी।

श्री अनंत नाथ निज गुण मय, मोय फाग रचायो ॥ टेक ॥

तुम अनंत गुण रंगके स्वामी, मोय मरफ रंग रमायोजी॥१॥

ज्ञान गुलाल ध्यानको अरगजा, सुभगचित्र अबर लगायोजी॥२॥

कर्म काष्टकी होली जलायो, तो पापकी धूरि उड़ायोजी ॥३॥

चन्दनकी निज दास जानिकर मुक्ति महलमें पहुंचायोजी॥४॥

(८८) होली अरजी।

अजी एजी स्वामी धर्म नाथ मोय तारि तारि।

मोरी सुरत लगी निज भारि पारि ॥ टेक ॥

भानुराय सुव्रता दे नंदन, कर्म काष्ठ मेरे जारि जारि ॥१॥
अधरम नाशि धर्ममय कीजौ, अब मेरे कारज सारि सारि २
सुनौ जगतपति अंतर जामी, दुःख करौ मेरे छार छार ३
बलदेवको निजदास जानिकर, भवसागरसे पार पार ॥४॥

(८६) होली–देखौ अबही चढ्यो हैं गिरनारी

अजी एजी श्री शांतिनाथ मै शरण थारी,
मेरी अरज सुनौ जग भर्तारी ॥ टेक ॥
विश्वसेन एरा देवीसुत, शांति शांति पद करतारी ॥ १ ॥
सोलमतीर्थंकर अघ हर प्रभु, पंचमचक्री अवतारी ॥ २ ॥
तुम पद सेवा फगुवा द्यों मोय, भव भंजन आनंद कारी ॥३॥
बलदेवको प्रभु दास जान अब, भव बाधा प्रभु हरि म्हारी ॥४॥

[६०] चाल–देखो कर्मोंसे फद रही

अजी एजी श्री कुंथुनाथ सुनि ल्योजी, होजी निज गुण रंग सो मोय रंग ल्योजी ॥ टेक ॥ पिता सूर्य श्री मति माता सुत, अजी एजी मोय अपनौ दास कर ल्योजी ॥ १ ॥ तुम विन फाग अनंत गमायो, मैंतो चहु गति माहि रुल्यौजी ॥२॥
तुम कुंथ्वादिकके रक्षक, प्रभु मेरी वी करूणा लीज्यौजी॥३॥
बलदेवको भवभवमें तुमरी, सेवा फल मोय द्योजी ॥ ४ ॥

(६१) राग धमाल ब्रजकी ।

श्री अरहनाथ अरि हरि म्हारे, श्रीअरहनाथ० ॥ टेक ॥
पिता सुदर्शन मातु सुमित्रा, अजी एजी प्रभु हस्तनागपुर अवतारे ॥ १ ॥ कर्म अरिनकी होरी जराई, तुम अत्रिनाशी

पद लियो भारे ॥ २ ॥ शिव नगरमें फाग तुम खेल्यो स्वइ आनंद अमन्द पियारे ॥ ३ ॥ नन्देवको प्रभु ऐसी होरी, वेगि दिखाओ जग भतारे ॥ ४ ॥

(६२) चाल–हारी गेन्दू भो घर आये निहालचंद ।

श्री मल्लिनाथ जिनचंद, अजी एजी मल्लिनाथ जिनचंद ।
मोय निज रंगमें रंगो, श्रीमल्लिनाथ जिनचंद ॥ टेक ॥
कुंभराय परजा पति दे सुत, मोरी हरो मति मंद ॥ १ ॥
मिथ्या कुरंग काटि देवो प्रभु मेरा, दीजियो ज्ञानानंद ॥ २ ॥
मोहरूप मद मैल धोयकर, आप भये स्वच्छंद ॥ ३ ॥
नन्देवको तुम पदकी सेवा, दीजो शिव सुख कंद ॥ ४ ॥

(६३) राग धमाल भजको ।

हो मुनि सुव्रत स्वामी मोय सुव्रत श्री भजो होरी० ॥
पाप मिथ्या कर्मी पातिग हरियो, मुनिसुव्रत० ॥ टेक ॥
सुदर्शनसूप पद्मावति सुत प्रभु, अनुभव रंग में मोय रंगजो ॥ १ ॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरन शुभ, संजम अमन्द हृदे धरियो ॥२॥
तपनारसीस मिटाई ममता कर, ध्यानगिलोरी सुधस सजियो ॥३॥
नन्देव को निज पर पानियो, अनवेगि मिलाय आनंद करयो॥४॥

(६४) राग कार्पीहोरी

कजी पजी स्वामी श्री नमिजिन महाराजजी, अनुभव रंग में रंगयोजी ॥ टेक ॥ विजयराय पूर्णप्रभादेसुत, श्री निज ध्यान समाजजी ॥ १ ॥ मदना जन्मों अगना फैलाय, मोरी मोर मन विच आजजी ॥ २ ॥ इन नव अमन्द मोय कर

नायो, एजी एजी मोकूं सेवा मिठाई साजजी॥३॥बलदेवको निज गुणमय होगी सुख, वेगि दिखावौ जिनराजजी ॥४॥

(६५) चाल-जिनवोरी आज-

श्रीनेम प्रभुकी छविलखिलखि, अंग अंग हुलसत ।

आज जग मैं आनंद भयो छकि छकि, श्री नेमिप्रभुकी ॥ टेक ॥ श्री समुद विजै शिवदेवी के नंदन, तुम पद वंदत अब हम झुकि झुकि । अद्भुत अनुपम राजतहो तुम, मनमथ कों डारयो चकि चकि ॥ १ ॥ त्रिभुनपति तारक तुमहीहो, सत इंद्रन करि सेवत पद पद । श्रीराजमति तजि जोग धारि तुम, कर्मों की होरी जराई फकि फकि ॥ २ ॥ अनुभव रंग बनाय फाग तुम, खेलत शिव रमणी संग तकितकि । वलदेव कों निज सेवा अमल द्यौ, अवसरयौं प्रभुजी मोय रखि रखि ॥

(६६) चाल—भला सुनिएरी सखी आज-

भला सुन लीजौं अरजी, श्रीपार्श्वनाथ महाराजा ॥ टेक ॥
अश्वसेन वामा दे नंदन, त्रिभुवन जन शिरताजा ।
आनंद कंद जिनेंद्रचंद, राखो शरण गहे की लाजा ॥ १ ॥
निज गुण फाग रचाय देवो प्रभु, सम्यक् रंग डारो ताजा ।
ज्ञान गुलाल चारित्र अतर सुभ, तप तप देवौ ध्यान समाजा ॥२॥
तुम पद भक्ति अमल मोय दीजो, निज रस अमृत खिलाजो ॥
वलदेवको लखि दास आपनो, तारो गरीब निवाजा ॥ ३ ॥

(६७) चाल—अतर गुलाल अरच्योवा चंदन—

अजी एजी देवो भव भ्रम फाग निवारो, श्रीमहावीर शरणमें

धारी ॥ टेक ॥ सिद्धारथत्रिसलाके नंदन, सब मन आनंद कारी ॥ १ ॥ निज गुण मय गोप होरी खिलावौ, देवोज्ञान ध्यान पिचकारी ॥ २ ॥ सुमति सखी संग फाग रचावौ, रत्नत्रय रंग धारी ॥ ३ ॥ बलदेवको प्रभु एसी होली, वेगदिखावो सुखकरी। मेरा भव भ्रम फाग निवारी, भला महावीर शरण में थारी ॥ ४ ॥

(६८) दोहा-इंद्रसभा।

ॐ ह्रीं श्री परमेष्ठी गुरु, जिन प्रतिमा जिन आल।
शारद मम रक्षा करहु, बल्देव नमत त्रिकाल ॥ १ ॥
परम शांति मुद्रा सहित, वीत राग भगवान।
सदा हमारे उर बसो, हरि मिथ्यात अज्ञान ॥ २ ॥
पद्म प्रभुपद कमल युग, बंदो मन वच काय।
तुम सेवा मो दास को, भव भव होऊ सहाय ॥ ३ ॥
श्री चंद्र प्रभु चंद्र मम, चिर भ्रम तम करि दूर।
तुम चरणनको नमों मैं आज चंद्रिका पूर ॥ ४ ॥
शांति जिनेश्वर शांति मम करो गरीब निवाज।
चिर भ्रम ताप मिटाय कर, द्यो निज सुखको राज ॥ ५ ॥
गणधरादि सेविन चरण, मन इंद्रिन करि वंद।
समो शरण लक्ष्मी सहित, बंदो पार्श्व जिनंद ॥ ६ ॥
गुण अनंत धारक प्रभू, सुख अनंत भिंडार
महावीर सन्मति प्रभू, बंदो मैं निरधार ॥ ७ ॥
वृषभ आदि महावीरलों, वर्धमान जिनदेव।

तिनको नमि शारद नमो, करो गुरुनकी सेव ॥ ८ ॥
बारंवार मैं वीनवूं, सुनियो दीन दयाल।
बलदेवको लखि दास अब, कीजों प्रभु प्रतिपाल ॥ ९ ॥
तुम गुण अगम अपार है, मो मति अल्प महान।
बलदेव तुम पद शर्ण गहि, गावत मति सम जान॥ १० ॥

(९९) राग-सोरठ देश खंमाच।

चौवीसों जिन राज राखोगे मेरी लाज, अजी भला राखोगे० ॥ टेक ॥ श्री रिखभादिक वीर जिनेश्वर हो, हमारे सारो सब काज ॥ १ ॥ आन परो दरबार तुम्हारे, सुनोजी गरीब निवाज ॥ २ ॥ बलदेवकी विनती सुनिस्वामी, अपने कीज्यों महाराज ॥ ३ ॥

[१००] चाल-मारूको।

आदिनाथजी, श्रीआदीश्वर जिनराज, अर्जमोरी सुन लीजै जी महाराज॥ टेक॥ प्रभुजी मोय दीन अनाथ विचारी, दया मोरी कीजियेजी महाराज॥१॥प्रभु थे छो तारण तरण जिहाज, म्हानेबी प्रभु त्यारोजी महाराज ॥ २ ॥ अजी हाजी प्रभु तुमहो गरीब निवाज, म्हारी बी सुधि लीजियेजी महाराज ॥ ३ ॥ अब बलदेवकों निज जांनि अभैपद, दीजियेजी महाराज॥४॥

[१०१] पुनः।

स्वामी अजितनाथ जिनराज, अजित मोय कीजियेजी महाराज। ॥टेक॥ अजीएजी थारोपिता जितशत्रु, मात विजयादेछेजी महाराज। तुम त्रिभुवन जन सिरताज, काज मोरे सारिद्योंजी

महाराज ॥ १ ॥ अजी पूजों थे गज लक्षण पद साज, जगत पतिराजो छोजी महाराज । मैं आयो सरणाधारी आज, लाज मोरी राखियोजी महाराज ॥ २ ॥ अजी हांजी प्रभू चन्द्देवकी अरदास यही, अब धारिओजी महाराज । मोय अपनों दास विचार, अजित पद दीजियेजी महाराज ॥३॥

[१०२] राग–रेखता ।

जिनराज प्रभू संभव सुधि लीजिये भला, मैं शर्ण गही तोरी मेरे कर्म रिपु जला ॥ टेक ॥ पिता श्रीजितारि माता सैना देविला, शुभतिन्ह सोहे वाज गुण अनंतगभिला ॥१॥ प्रभू मोहराय तुमने दियो स्वाकमें मिला, मांगेरवी श्रीजिनंद मोहकों गला ॥ २ ॥ तुम नायक तिहु जग केरा सर्व थे भला, मो दीनकी दया करि मेरे दुख सब दला ॥ ३ ॥ चन्द्देव तुमारे चर्णोंकी प्रभू रज में आय रला, दुखदंद मेरा कार मोय करो निर्मला ॥ ४ ॥

[१०३] रेखता ।

अब अर्ज मेरी सुनिए श्रीअभिनंदन जिनचंद ।
मैं सर्ण गही तेरी मेरे हो नासो दुखदंद ॥ टेक ॥
पिता हैं स्वयंवर माता सिधारथा नंद ।
विनीतापै लियो जन्म सेवे सब इंद ॥ १ ॥
सुर नर मुनिजन तुम पद ध्यावे जिननंद ।
त्यारण तरण तुमहो प्रभु सुख केशो कंद ॥ २ ॥
चन्द्देव थारे निशिदिन सेवै चरणारविंद ।
प्रभु मोय अपनों दास जान मेरे अब काटो भवफंद ॥३॥

(१०४) राग—कहरवां—गिरनारीके पहाडपर—

सुमतिनाथ सुनता मोग्यो, मोपे महर करो कुमता हरल्यो ॥ टेक ॥ पिता मेरु श्री मात मंगला प्रभु, नग्र विनीता जन्म धरो ॥ १ ॥ सुर नर मुनि जनकर पद वंदित, प्रभु गुण अनंत शिव रमणी वरो ॥ २ ॥ मैं हूं दीन अनाथ प्रभूजी, तुम चरणनि तलि आनि परो ॥ ३ ॥ वलदेवके भव भ्रमणमेटि प्रभु, करुणा करि मोरि आस भरो ॥ ४ ॥

(१०५) चाल—बुदेलन अजव वनी—

अजी हांजी पद्म प्रभु पद कमलं, मै पूजौ मन बच काय ॥ टेक ॥ नृपधरणेश सुसीमा नंदन, अजी एजी भला सब जन मन सुख कंद ॥ १ ॥ पद्म चर्ण सुख सद्म देत है, नाशत भव भ्रम फंद ॥ २ ॥ परमानंद आनंद कंद तुम, मेटो विधिके वृंद ॥ ३ ॥ वलदेव तुम पद सरण गही प्रभु, काटो भव दुःख दंद ॥ ४ ॥

(१०६) चाल—जुड आई सकल सुर नार ।

मेरी वेगि हरो भव फांसी, सुपारस स्वामीजी ॥ टेक ॥ नृप सुप्रतिष्ट पृथ्वी देवी सुत, अजी एजी मोरी सुनि लीजो अर दास ॥ १ ॥ मैं भव भ्रमत भ्रमत दुख पाये, अव मोरी पूरो आस ॥ २ ॥ तुमको दीन दयाल देखि मैं, सर्ण गही सुख रास ॥ ३ ॥ वलदेव वारंवार वीनवै, द्यो अविचल पद वास ॥ ४ ॥

(१०७) राग देश।

अजि हो चंद प्रभु चितवोजी मेरी ओर, अजी एजी मैं अर्ज करों कर जोर ॥ टेक ॥ नृप महासेन सुलक्षणा नंदन, जन्मे चंद पुर ठोर। नर अमरादि तुम चरणन सेवत, त्रिभु-वन जनचित चोर ॥ १ ॥ मोह ध्वांतको ज्ञान चंद्रिका, करि चूरो चिर घोर। त्रिभुवन चंद चंद लक्षण जुत, चंद्रोपम शिव मोर ॥ २ ॥ कर्म चक्र मेरा चूर प्रभु, मैं ध्याऊं जिन चकोर। बलदेव तुम चरणनको चेरो, यासों रखो मोरी डोरि ॥ ३ ॥

[१०८] राग लावनी थियेटर।

अजी एजी, श्री पुष्पदंत प्रभू, मैं तुम पद पंकज ध्याऊं।
अब निरखि निरखि छवि थारी परम सुख पाऊं।
श्री पुष्पदंत जिनराज तुम्हारे पद ध्याऊं ॥ टेक ॥
भला पिता सोहै सुग्रीव राय मन भाई।
श्री रामा देवी माता परम सुखदाई।
भला जन्म लियो तुम काकंदी पुर आई।
तन वर्ण कुंदके पुष्पोपम छवि छाई।
स्वामी मगर अंक शुभ देख मैं तुम पद ध्याऊं ॥ १ ॥
भला प्रभू दोय लक्षपिति वर्ष आयु तुम धारी।
सोहै काय धनुष शत एक सुभग विस्तारी।
हो त्रिभुवन जन शिरताज भव्य सहुतारी।
सेवैं इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरासुर नारी।

इक्ष्वाक वंशके नाथ मैं तुम पद ध्याऊं ॥ २ ॥
तुम गुण गणको अवपार गणी नहीं पावैं।
तो अल्प मती अब कहो कैसे गुण गावैं।
यह छंद भक्ति वसि आनिगाय मन भावै।
मोय दीज्यो भव भव भक्ति यही हम चाहै।
भला, सुनि लीज्यो श्री पुष्पदंत मैं तुम पद ध्याऊं ॥ ३ ॥
अजी एजीमें सर्ण गही तुम आय अर्ज सुनि लीजो।
मोय अपनो दास विचारि नजर मांपै कीजो।
तुम तारण तरण जिहाज त्यारि मोहि लीजो।
प्रभू वलदेवको निज जाणि अभै पद दीजो।
मैं मन वच तन करि बारंवार शिरनाऊं ॥ ४ ॥

(१०६) राग लावनो थियेटर।

अजी हांजी भला श्री शीतल जिनराज अर्ज सुनि लीजे।
मेरे चिरभ्रम ताप निवारि तुरत अब दीजे ॥ टेक ॥
भला दृढरथ तात विख्यात सुनंदा माता।
कोई भद्दलपुर मैं जन्म लियों सुख दाता।
तन हेम वर्ण छवि सोहे सर्वके ज्ञाता।
तन तुंग निवै धनु द्रुम लक्षण विख्याता।
मोय दीन अनाथ निहारि अर्ज सुनि लीजै ॥ १ ॥
तुम त्रिभुवन शीतल दायक आनंदकारी।
तुम जन्म जरामृत नाशि भये त्रिपुरारी।
अव भ्रम तम खंडन तुम रवि केवल धारी।

प्रभू सिद्ध निरंजन गुण अनंत भंडारी ।
मोय भव दुख दुखिया जान अर्ज सुनि लीजै ॥ २ ॥
मैं अनादि कालको भटकत दुख बहु पायो ।
तुम नाम्या तरया निहार सर्ण थारी आयो ।
पाय तुम दर्शन सों निजरस अमृत छायो ।
अब बल्देव तुम गुण हरख हरख कर गायो ।
मोय अपनो दास विचारि आप सम कीजै ॥ ३ ॥

(११०) राग लावनी ।

भला सुनि लीजो मोरी अरज प्रभू श्रयांस नाथ जिनराई हो ।
सर्ण तुमारामें आयो मेरे शत्रु कर्म दुखदाई हो ॥ टेक ॥
भला पिता विमल माता विपलादे कंचन वर्ण सुहाई हो ।
सिंघपुरीमें जन्म प्रभू जब त्रिभुवन आनंद पाई हो ॥ १ ॥
काय असीतन तुंग विराजे गेंडा चिन्ह सुभाई है हो ।
वंश इक्ष्वाकु शिरोमणि प्रभु तुम शिव मारग दरसाई हो॥२॥
हे प्रभु तुम पद बलदेव वंदन मन वच तन शिरनाई हो ।
अपनोदास विचारि, श्रेय प्रभु श्रेय करो शिवराई हो ॥३॥

[१११] राग लावनी लंगड़ी ।

अजी भला, अरुण वर्ण अविकार छवि मेरे हो वास पूज्यकी मन भाई । चंपापुर में पंच कल्याणक वंदौं मन वच काई ॥ टेक ॥ नृप वसु पूज्य तात गुण पूरण श्री मात जयावती देव्या माई । सत्तर धनुष तुंग तन भाख्या महिष चिन्ह पद भगगाई ॥ १ ॥ आप अखंमाली पद धारयो बालब्रह्म निधि

सेवै धाई। इंद्रनरिंद्र खगेंद्र मुनिंद्र जजे पद पंकज सुखदाई ॥२॥
बलदेव निशिदिन घडि पल थाके चरण कमल सेवै आई।
मोय अपनो दास विचारि प्रभूजी दीजो निज सुख शिवराई ॥३॥

[११२] राग—लावनी।

बिमल प्रभु विमल करो हमको, अघ मल दूरिकरो प्रभू मेरे में ध्याउं तुमकों ॥टेक॥ नृप कृत धर्म पिता भये धनि २ धनि २ कंपिल पुरको । जन्म लियो जयसेनादे उर सुख उपजों सबकों ॥ १ ॥ साठ धनुष तन तुंग विराजै मोहत सुर नर को। कंचन बर्ण शूर पद सोहे त्यारे तुम भवि जन कों ॥ २ ॥ तुम प्रभू विमल विमल पद धारक हरो कर्म मलकों। सुर नर मुनिजन इंद्रादिक सब सेवे है तुमकों ॥३॥ मन वच तन करि बलदेव निशिदिन सेवे तुम चर्णनको। शरण तुम्हारी आन गही पद दीजे विमल हमको ॥ ४ ॥

(११३) लावनी।

हो मैं वारी भला, हे भगवंत अनंतनाथ प्रभू मेरी अब करूणा कीजे। भव सागरमें डुबति मोय काढि किनारे अब करदीजै ॥ टेक ॥ सिंघसेन सूर्यादेवी सुत मेरी कुमता हरि लीजे। शिव रमणी बर प्रभू मोय निज परणति सुमतादीजै१ तुमबिन मैं भवबनमें भटक्यों मेरी प्रभू अब सुधि लीजै। कर्म फंदसें फंदसे मोकूं अब सुलभा दीजै ॥ २ ॥
तुम प्रभुहो अनंत गुणधारक मेरा दूरि अपगुण कीजे।
कृपासिंधू प्रभु कृपा करि नजर महर की कर दीजै ॥ ३ ॥

बलदेवको मरणको चेरी जानि अपनो करि लीजे।
दीनबंधु प्रभुजी मोय अविचल पद पहुंचा दीजे ॥ ४ ॥

[११४] राग–लावनी।

शरणमें धर्म नाथ तेरी, अरज प्रभु सुनिल्यो अब मेरी ॥टेक॥
फर्यो मैं चहुगति मैं फेरी, प्रभुजी तुम जानत सब मेरी।
कर्मोंने राख्यो मोय घेरी, मोहरिपुने बंदी मेरी।

दोहा।

चौरासी लखजोनि मैं, भरमावत अधिकाय।
तुमको दीन दयाल देखिकरि, शर्ण गही थारी आय।
सुनो प्रभू मेरी अब टेरी,२ शर्णमें धर्मनाथ तेरी ॥ १ ॥
प्रभुजी अबतो कुमति मेरी, सुमति मोय दीजो सुखकेरी
जगतपति देखो मांगि भोरी, शाखिये मोय चर्णन तेरी।
तुम देवनके देव हो, तारण तरण जिहाज।
मेरो अब कल्याण करो प्रभू, दीनबंधु महाराज।
काटिदो कर्मनकी बंदी,२ शर्णमें धर्मनाथ तेरी ॥ २ ॥
सेवमें चरूं प्रभुजी तेरी, हरो मेरी जन्म मर्ण फेरी।
नजर मोपे करो महर केरी, पाऊं सेवा भव भव तेरी।

दोहा।

बलदेव मन वच कायकरि, नावत्याक सिरनाय।
तुम गुण गावत हर्षकरि, मोपनिज पुण्यों पोहोचाय।
करोगे प्रभु अब नहीं देरी२, शर्णमें धर्मनाथ तेरी ॥३॥

[११५] राग–खम्माच ठुम्पा ।

हो शांति जिन शांति करोजी महाराज ।

मेरे चिर भ्रम तप हरि देवोगे आज ॥ टेक ॥

विश्वसेन एरादेवी सुत, हे मृगांकपद ।

श्रीपति मेरी पति राखोगे आज ॥ १ ॥

भवमैं भ्रमण करिमैं संतापित, तुमको आनंद घन,

जांनि शरणधारी गही मैं आज ॥ २ ॥

हेप्रभु शांति शांति पद दीजै, बलदेवको अब,

तुम पद नमों त्रियोगधारि आज ॥ ३ ॥

[११६] राग–पीलू दादरा ।

अब सुधिलीजो कुंथु प्रभु मोरी, अब सुधि लीजो० ॥ टेक ॥

पिताभानु श्रीमति माता सुत, हेअजांकपद सेवूं मे तोरी ॥१॥

मैंभव सिंधु पड्यो दुख पाऊं, काटो अवै देख मेरी ओरि॥२॥

तुम पद सेवा भव भव दीजो, अर्जकरे बलदेव करजोरी ॥३॥

[११७] राग–दादरा ।

महाराज आज श्रीअरहनाथ, मेरे कर्म अरिनको नाश करो ॥ टेक ॥ भला राय सुदर्शन मात सुमित्रादेवी के उर जन्म धरो । भला हस्तनागपुर मीनअंक छवि हेमवर्ण गुणवंत वरो ॥ १ ॥ प्रभु दुष्कर्म रिपु मोय दुखदेवै, तुम है सो कछु नाहि दुरो । तुम दीन दयाल कृपाल प्रभुजी, मेरी करूणा चित्त धरो ॥ २ ॥ तुमैं तारण जिहाज जानि अब, बलदेव सर्ण आनिपरो । मोय अपनो दास निहारि प्रभु अब, भवसागर से पार करो ॥ ३ ॥

[११८] राग कलंगडा ।

मल्लिनाथ हमारे मल दूर करो, मलदूर करोजी मल्लिनाथ ॥ टेक ॥ कुम्भ राय नृप पिता तुम्हारे, अर्जी एजी भला, जन्म प्रभावति उदर धरो ॥ १ ॥ मिथुलापुर शुभ हेम वर्ण छवि मल्ल प्रभु तुम गुण पूरण शिव रमणी वरो ॥ २ ॥ कर्म मैल प्रभु हमरे हरिये, बलदेव तुमरी शरण परो ॥ ३ ॥

[११९] राग झिल्ला गिरनारी मेरा—

भला श्री मुनि सुव्रत नाथ प्रभू, अब मेरी करुणा धेर करो ॥ टेक ॥ पिता सुमित्रराय माता शुभ, श्यामा दे उर जन्म धरो । भला श्याम वर्ण छवि अनुपम सोहै, अरु कच्छप पदमे सुथरो ॥ १ ॥ भला भवसागर में भरमत हूं मैं, प्रभु अब मेरी आस पुरो । भला तुमहो धर्म जिहाज प्रभूजी, मोय भवदधिसैं काढि धरो ॥ २ ॥ बलदेव तुमरी शरण गही प्रभु, मोय निज सेवक जानि करो । हे कृपासिंधु प्रभु दीनबंधु अब, कष्ट सबै मेरे बेग हरो ॥ ३ ॥

(१२०) राग [illegible] ।

प्रभु नेमिजिन मोरी सुधि लीजे, त्रैलोक्यपति महाराजधिराज ॥ टेक ॥ समुद्रविजय सुत नाम प्रमान, शिवादेवी छवि है कान । मनवच तनकरमैं सिर नाऊं, मोपे दीन जानि शरण लीजे ॥ १ ॥ तुम भक्त अनेकन त्यारि दिये, निरंजनादिक भी उधारि लिये । मैं साखि तुमरी सुनि आयो तुम ढिग, अब अपनो मोय करि लीजे ॥ २ ॥ त्रिभुवनमें जन सरदीन

करै, मुनिगणधरादि मिलि ध्यान धरै । अब बलदेव तुमरी सरण गही मोय, त्यारि त्यारि प्रभु दीजो ॥ २ ॥

(१२१) राग खंमाच टप्पा ।

श्रीनेमअर्ज सुनिलीजो, बालब्रह्मपती, शिवरमणिनाथ ॥ टेक ॥ श्रीसमुद विजेनृप सोहे तात, माता शिवादेवी जग विख्यात । सुभ संखचिन्ह पदत्राजपान, अब मेरी करुणा कीजो ॥ १ ॥ प्रभू परमानन्द विराजमान, सुरनर मुनिजन सब धरें ध्यान । तुम जीव अनंत उबारि दिये, मोपे महर नजर कीकीजो ॥ २ ॥ मैं तुम बिन भ्रम्यौ अनादि काल, सो तुम जानत जगके दयाल । अब बलदेव शरण गही तुमरी, दास जानि अभै पद दीजो ॥ ३ ॥

[१२२]—राग जंगला ।

प्यारा लागोजी म्हानें नेमजिनंद, प्यारालागोजी म्हानें० ॥टेक॥
समुद विजै शिवदेवी सुतप्रभु, भव जीवन सुख कंद ॥ १ ॥
सुरनर मुनिजनकरि सेवत तुम, देखत होत आनंद ॥ २ ॥
भ्रम तम खंडन दुरित बिहंडन, आनंद कंद जिनंद ॥ ३ ॥
बलदेव तुम पद सर्ण गही प्रभु, काटो भव दुख दंद ॥ ४ ॥

[१२३] राग—दादरा—

होमें थाका गुण गाऊंजी, स्वामी पारस जिनंद ॥ टेक ॥
अश्वसेन वामाजूके नंदन, मेरे हरोजी दुख दंद ॥ १ ॥
नाग जुगल पल मांहि उबारे, गुण पूरण सुख कंद ॥ २ ॥
तुम गुण पार गणी नही पावैं, तो क्यों पावें मति मंद ॥ ३ ॥
बलदेव कों लखि दास आपनो, काटो मोरे भव भ्रम फंद ॥४॥

[१२४] राग—खंमाच प्रभाती।

आज महावीर स्वामी वंदो मन लाईकें,
स्वामी श्री महावीर पूजों चित लाईकें,
पूजो चितलाइ, आज वंदो मन लाइकें ॥ टेक ॥
सिद्धारथ राजा पिता, त्रिशलादे राणी माता,
कुंडल पुर जन्म उच्छव, कियों इंद्र आइकें ॥ १ ॥
सुर नर मुनि करत सेव, हे प्रभु देवाधिदेव,
गणधरादि ध्यावें है, गुणानुवाद गाइकें ॥ २ ॥
मनोवचन काय लाय, बलदेव तुम शरण आय,
अष्ट अंग नाय नमें, वारं वार ध्यायकें ॥ ३ ॥

[१२५] राग—टपा—

शरण तुम्हारी में आनिलग्यो, मोय जेसे वने जेसे त्यारो जी ।टेक॥
अवलों तुम विन मैं चहुंगति मैं, दुख पायो अति भारो जी ।
जन्मजरामृत दुःख सहे बहु, कहत न आवे वारोजी ॥ १ ॥
सिंघ सूर कपि न्योल वृषभकों, अंजनादि अघ भारोजी ।
एसे पतित अनेक त्यारे, अब मेरी ओर निहारोजी ॥ २ ॥
तुमसमदेव न ओर जगमें, में यह कीनो निरधारोजी ।
यह अरजी सुनि लेवो दासकी, मेरा भव भ्रमण निवारोजी ॥३॥

[१२६] राग—कानड़ा—

जिनराज स्वामी मेराजी, भला स्वामी मेरा में बंदा तेराजी जिनराज ॥ टेक ॥ तुम विन भ्रम्यों अनादि कालनों, कीना है चहुगति फेरा हो ॥ १ ॥ भाग दई अब काल सन्धितें,

धाया है शरणा तेरा हो ॥२॥ हे जिनराज दास बलदेवकों,
राखोगे चरणन चेरा हो ॥ ३ ॥

(१२७) राग-टप्पा खंमाच।

मै तो तोरी शरण गही, प्रभु मोरीओर निहारो ॥ टेक ॥
आप तिरै तुम भवि बहु तारे हो, तुमसम दूजा देवनहीं ॥१॥
तुम त्रिभुवन पति नाथ सही हो, मैं निश्चै यह जान लई ॥२॥
जन्म जरामृत दुःख मिटाद्यो हो, वलदेवकी अरज यही ॥३॥

[१२८ टप्पा खंमाच।

श्रीजंबू स्वामी दरसन द्यो, मोपे इतनी मिहर करो ॥ टेक ॥
तुम दर्शन तैं कर्म कटत है हो, पातिग सकल हरो ॥ १ ॥
कुमति काटि सुमता मोय दीज्यो, प्रभू इतनो जसल्यो ॥ २ ॥
या संसार महासागरसे हो, प्रभु मोय पार करो ॥ ३ ॥
अरज करै वलदेव प्रभु मोरी, भवथिति वेग हरो ॥ ४ ॥

[१२६] राग-बरवै ठुमरी।

जंबू स्वामीका मैंने, दर्शन पायो आज, अजी प्जी० ॥ टेक ॥
रोमरोम आनंद भयो मेरे, नेन सफल भये आज ॥ १ ॥
दरशन करत परम सुख पायो, पातिग सब गयो भाजि ॥२॥
बलदेव तुमरी शरण गही मोय, द्यो निज सुक्ख समाज ॥३॥

[१३०] चाल-कुमति हमसे वेर कियो—

शरण गही मैं थारी, प्रभुजी सरन गहीमैं० ॥ टेक ॥
चिरभ्रम ताप निवारण कारण, थे देख्या उपगारी ॥ १ ॥
त्रिभुवन जन मन आनंद कारण, ऐसी वाणि तिहारी ॥ २ ॥

पतित अनेक उबारि दिये तुम, मेरा भी करो निस्तारी ॥ ३ ॥
तारण तरण जानि करि पकर्डो, बलदेव शरण तुम्हारी ॥ ४ ॥

[१३१] पुनः

थारी मूरत मन भावै, प्रभुजी थारी मूरत मन० ॥ टेक ॥
निशि वासर तुमरो हि चिन्तवन, आनदेव न सुहावै ॥ १ ॥
अद्‌भुत रूप तुमारो निरखत, रोम रोम हरखावै ॥ २ ॥
तुमसे प्रभु नहि तीन लोक में, सुरनर मुनि तुमे ध्यावै ॥३॥
जन्म जन्म अघ हर प्रभु मेरे, बल्देव शीश नवावै ॥ ४ ॥

[१३२ पुनः

वेग खबर क्यो ना लेवो प्रभुजी, वेगखबर ॥ टेक ॥
या भव वनते मोहि निकारो, अपनो दरशन देयो ॥ १ ॥
और पतित तुम बहुत उबारे, कीनी नाहि अबेर ॥ २ ॥
मेरी बेर कहां ढील करी अब, अपनो लखि निरवेर ॥ ३ ॥
बलदेव को सेवग लखि तारो, जामन मरण हरेय ॥ ४ ॥

[१३३] चाल-पूच्यो-हमारो मै गढ़ो चौतो-

हमारे दिन योंहिजात हरे, अरे येनो दिन योंही जानदरे ।
अजी एजी प्रभु तुम दरशन बिन, नाय हमारे दिन० ॥ टेक ॥
श्री अरिहंत देव नहि सेये, व्रत तप कछु न करे ॥ १ ॥
कुगुरु कुदेव सेव सब बहु मैं, गति गति भ्रमन करे ॥ २ ॥
पुन्य जोग अब तुम प्रभु पाये, पूरण सुख न भरे ॥ ३ ॥
बलदेव तुम सरणा अब पकर्डो, भव भव भी सुमरे ॥ ४ ॥

[१३४] पुनः

दरस मोय प्यारा जिनको भावे. मोय आनदेव न सुहावै ॥ टेक ॥

अश्वसेन वामाजू के नंदन, देखत जिय हूलसावै ॥ १ ॥
शांति छविके दरस करत ही, भव भव पाप पलावै ॥ २ ॥
दीनानाथ दीनबंधू तुम, वलदेव तुम पद नावै ॥ ३ ॥

[१३५] राग रतवाई ।

अजी भला जिनजी दरसण द्यो हो, मुझको अपनो निहारो ॥ टेक ॥ अबलों मैं तुम विन दुख वहु पायो, अजी होजी मोय दुखते उवारो ॥ १ ॥ तीन लोकके तारक तुम ही, अजी मोरी करुणा विचारो ॥ २ ॥ वलदेवको भव-सागर सों अब मोयको वेग निकारो ॥ ३ ॥

[१३६] राग—रतवाई ।

जिनवरजी मों उवारिलै, अरे हारे जिनवरजी मो उवारिलै ॥
प्रभु म्हारी अरज यही चित धारिले, जिनवरजी० ॥ टेक ॥
प्रभु तुम नायक तिहुं लोककैं, अब मेरा बी कारज-सारिलै ॥१॥
प्रभु तुम तो दीन दयाल हो, भवदधि डूबतमें तु काडिलै ॥२॥
अजी होजी प्रभु दुष्ट कर्म दुख देत ये, मेरे मोह मोह शत्रु निवारिलै ॥ ३ ॥

दोहा ।

अर्ज करूं कर जोडिके, सुनो जिदेव जिनचंद ।
दीन अनाथ विचारिकै, सो करोगे मोय निरद्वंद ॥४॥

छंद ।

हे जिनेंद्र महाराज शरणमें तेरी आयो,
तुम प्रभु धर्म जिहाज देखि मैं अति सुख पायो ।

दोहा।

भ्रमतो फिरो अनादिको, मैं कबुअन पायो सार,
तुम प्रभु अधम उधारि हो, सो मोग करोगे भवपार ॥६॥

छंद।

अहो जगति पति नाथ तुमही देवनिके देवा।
सुर नर नाग सतेंद्र करैं प्रभु तेरी सेवा ॥

दोहा।

बलदेवकी यही वीनती, सुनो नाथ जिन देव।
भव भव में मोय दीजिये, मो तुम चरणनिकी सेव॥६॥
हांजी हांजी प्रभु बलदेवकी यह वीनती,
म्हारो आवागमन निवारि ले।
अजी हांजी प्रभु तारिले तारिले तारिले,
अजी हांजी अरज यही जिन धारिले ॥ ७ ॥

(१३७) चाल—जादू भैरोंका यार—

मैंतो नो गिरनारी जाऊं, प्रभु नेमजी गये गिरनारि ॥टेक॥
छप्पन कोटि जादों संग लेकर, खूब बरात बनाय हो।
मोर मुकुट कर कंकन पहरे, सोभा कहीन जाय ॥ १ ॥
तोरन आये पशुवन रव सुनि, करुणा चितमें उपजाय हो।
नेह छुड़ाय चढ़े गिरि ऊपर, दिक्षा धरी सुजाय ॥ २ ॥
राजुल इम मन चिंतवन करि, अब सबसों नेह छुडाय हो।
प्रभुढिग जाय धरीजिन दिक्षा, तप कीना सुख भाय ॥ ३ ॥
श्रीराजुलजी सुरगां गई, श्रीनेम गये निर्वाण हो।
अरज करै बलदेव नेम प्रभु, हमको पार लगाय ॥ ४ ॥

(१३८) पद टप्पा ।

मेराहो पिया री गिरक्यों जाय, अव कोई लावोजाय मनाय॥टेक॥
छप्पन कोटि जादों सजि आये, संग बली हरिराय ॥ १ ॥
तोरन आये पशु छुडाकर, अव रथ फेरें जाय ॥ २ ॥
वे नही आवै तो अव हमको, उनके ढिग पोहचाय ॥ ३ ॥
श्री राजमती प्रभु नेम शरण गहि, बलदेव नमि शिरनाय ॥४॥

(१३९) राग वरवै ।

कासें कहुं दुख अपनो सखीरी, नेमप्रभु गिरिनार गये हैं ॥टेक॥
व्याह न आये सव मन भाये, सव जादों गण संग लिये हैं ॥१॥
तोरण आये पसु छुडाये, रथ फेरि व्रतधारी गये हैं ॥ २ ॥
श्रीराजुल प्रभुके संग बलदेव, व्रतधर स्त्री लिंग छेदि दिये हैं ॥३॥

[१४०] राग–ईमन ।

नेमजी वर पायाजी, भाग उदै भयो, नेमजी० ॥ टेक ॥
व्याहन आये सव मन भाये, देखत मन हरषायाजी ॥ १ ॥
छप्पन कोटि जादों संग लाये, एकसो एक सवायाजी ॥ २ ॥
दास कहै जूनागढ मैं अव, घर घर बजत वधायाजी ॥ ३ ॥

[१४१] राग–टप्पा ।

अजी होजी मोय त्यारो दीनानाथ, सरण तुमारी आनि पड्यो ॥टेक
काल अनादि भ्रम्यो प्रभु तुम विन, अवना छाडोथारो साथ ॥१॥
अष्ट कर्मने वहु दुखदीनो, इनसे छुडावो हे नाथ ॥ २ ॥
बलदेवकी प्रभु अरज यही है, मोय दीज्यों शिव सुखसाथ ॥३॥

(१४२) पद मारवाडी ।

मै वारी हो प्रभुजी मोयत्यारो हो, म्हारी विनती या उरधारो ॥टेक॥

अनंत काल में भटकत भटकत, कहु अन पायो पारो ॥ १ ॥
कर्मननें मोय बहु दुखदीनों, अब मेरी दया विचारो ॥ २ ॥
अब मैं सरण तुमारी आयो, अपनो लखि निरवारो ॥ ३ ॥
बलदेव की यह अर्ज धारि प्रभु, मेरा करोगे निस्तारो ॥४॥

(१४३) राग—खंमाच ।

त्यारो त्यारो त्यारो जी मोय, अपनो लखि करि त्यारोजी ॥टेक॥
तुम विन चारोंगति विषै, मैं, रुल्यों अनंतो काल,
काललब्धि अब पुन्य जोग तें, भेट्या महाराजजी ॥ १ ॥
तुम प्रभु अधम अनेकन त्यारे, तिनको वार न पार,
सिंघ सूर निरजनादिक हू, तुम कीने भवदधि पार ॥ २ ॥
बार बार मैं वीनवूं प्रभु, हाथ जोडि शिर नाय,
बलदेवको यह आस पूरवो, शिवपुर को पोहचाय ॥ ३ ॥

[१४४] राग—मांड ।

म्हानें त्यारोलाजी, थांकी मैं सरण गहीछै, थांकी० ॥ टेक ॥
भव वन में भटकत अब म्हारी, नग्न भेट भईछै ॥ १ ॥
आनदेव सब रागी द्वेषी, तुम सम देव नहीं छै ॥ २ ॥
बलदेव यह निश्चै उरधारी, त्यारण तरण तुही छै ॥ ३ ॥

(१४५) राग—देश ।

म्हारी सुधि लीजो जिनजीहो, हो म्हाने त्यारो नाथ म्हारी० ॥ टेक ॥ भवसागर में डूबत हूं मैं, अब मोय काढो प्रभुजीहो ॥ १ ॥ पतित उधारक विरद तुम्हारो, मैं सुनि आयो जिनजी हो ॥ २ ॥ बल्देवको अपनो लखि भगवंत, वेग उबारो प्रभुजी ॥ ३ ॥

[१४६] राग पुनः।

भला अब मोय त्यारो प्रभुजी, अरज सुनो महाराज ॥ टेक ॥ त्यारण तरण विरद तुमरो सुणि, मैं शरणैं आयो प्रभुजी हो ॥ १ ॥ दुष्टकर्म दुख देत इनको, वेग निहारो प्रभुजी हो ॥ २ ॥ बलदेव की भव व्याधि हरो, मोय अपनो निहारो प्रभुजी हो ॥ ३ ॥

(१४७) राग-जिला-बेनीमाधोकी चाल।

खेत्र विदेह विखै जिनतिष्टै, तिनपद बंदों मन बचकाय ॥ टेक ॥ श्रीमंदर युग मंदिर स्वामी, बन्दो बाहु सुबाहु जिनाय। संजातक जिन स्वयं प्रभु, रिषभ नन नंतवीर्य सुखदाय ॥ १ ॥ सूर प्रभु विशाल कीरति नमि, वज्जरधर चंद्रानन राय। चंदर बाहु भुयंग मईश्वर, नेम प्रभु वीर सेन के पाय ॥ २ ॥ महा भद्र नमिदेव जस प्रभु, अजित वीर्य पद पंकज नाय। बिहरमान प्रभु सदा सास्वते, केवल लक्ष्मी मंडित पाय ॥ २ ॥ मोक्ष मार्ग जहा सदा प्रवर्तें, काल चतुर्थ सदा सुखदाय। बलदेव जिनके पद पंकजको, बार बार नमैं शिरनाय ॥ ४ ॥

(१४८) राग-बेनीमाधौकी चाल।

तीनलोक जिन भवन अकीर्तम, तिन्हे वंदना करो त्रि-काल। वसुविधि यथा सक्ति पूजन करि, अब प्रभु की गाऊं गुण माल ॥ टेक ॥ अधोलोक के सातकिरोडर, लाख बहतर हे जिन आल। मध्यलोक के चार से अठावन, वितर

गोतिय अगनित हाल ॥ १ ॥ लाख चौरासी हजार सताणो तेउरा उर्धलोक विषैं हाल। हैं प्रतिमा सब आठ एक मैं, पंच सतक धनु तुंग विशाल ॥ २ ॥ आठ किरोड लाख छप्पन हजार, सत्याणवे अरु सत चारि। इक्यासी सब भवन जिनालय, अनादि है अरुभये जिन हाल ॥३॥ नव से पचीस कोडि त्रेपन, लक्ष सहस सताईस नोसे अडताल। कृतिम अकृतिम बिंब सर्व जिनके, ये समो सर्गोवत है सब चाल ॥ ४ ॥ कृतिम अकृतम जिन सब बन्दो, सर्व कटै कर्म निके जाल। बलदेव मन वच तन शुद्ध भावनि, बारंबार नवावै भाल ॥ ५ ॥ इनकी महिमा अगम अगोचर, गर्नो करि गावै कवि मनि चाल। पन यह नाम स्मरण तै भविजन, भक्ति भाव धरि होत निहाल ॥ ६ ॥ इंद्रादिक गुरु सौनित जन है, पूजन त्रिभुवन स्थिति पैत्याल। तो हम गान शक्ति कैसे करैं, नाम मात्र गावै गुण माल ॥ ७ ॥

[२४६] चाल—मैंहिन्द को नगरौनै।

कैसें पतित अनेकन त्यारे, मो त्यारणकी अब देर क्या है ॥ टेक ॥ सिव सूर कपि नोलादिक, तुम त्यारे एक हमैं फेरि क्या है ॥ १ ॥ तारण तरण विरद तुमरो, फिर मेरी बेर यह अबेरा (?) क्या है ॥ २ ॥ तुमपद जाच्यों बन्देराम मागि, शिव सुख धो मोय अबेर क्या है ॥ ३ ॥

[२५०] चाल—पुनः।

प्रभुम अनेकन त्यारि दिये,

प्रभु मो त्यारण का विचार क्या है ॥ टेक ॥

अंजन चोर गज भीलादिक,
तिनि की गिनती का सुमार क्या है ॥ १ ॥
मैं भव बन मैं भटक भटक दुख,
पायो जिस को अब सार क्या है ॥ २ ॥
बलदेव कों तुम ही तारोगे,
तुम सरनो गह्यो अब हार क्या है ॥ ३ ॥

(१५१) राग-भैरवी धनासिरी।

मुजरा लीज्यो महाराज, प्रभुजी मेरा हो० ॥ टेक ॥
आन देवसे काज सरो नही, सब देखा ठगराज ॥ १ ॥
तुम समदेव न ओर जगतमें, तुम हो धर्म जिहाज ॥ २ ॥
भाग उदै तुमसे प्रभु पाये, तीनलोक शिरताज ॥ ३ ॥
बलदेव शरण तुमारी पकडी, मोय तारो गरीब निवाज ॥ ४ ॥

[१५२] पुनः।

त्यारो गरीब निवाज, प्रभुजी मोय हो तारो० ॥ टेक ॥
आन देव सब रागी द्वेषी, उन मेरो करो है अकाज ॥ १ ॥
तुम समान कोई देव न देखा, जांसौं सरैमो काज ॥ २ ॥
तुम त्रिभुवन पति सवही लायक, तारण तरण जिहाज ॥ ३ ॥
बलदेवको अपनो लखि त्यारो, सरण गहेकी लाज ॥ ४ ॥

(१५३) वधाई—हमसे चलोनाही जाय।

अब गावै बधाई मंगलचार, अजी श्रीनाभि नृपति दरबार ॥टेक॥
मोरा देवी बेटा जायो, आदीश्वर अवतार।
रतन वृष्टि धनपति त्रिकाल करे, देवी सेवै सार ॥ १ ॥

मेरुशिखरलै जाय सुरेश्वर, क्षीरो दधि जल धारि ।
एक हजार आठ कलशनसों, न्हवण कियो विधि सार ॥ २ ॥
गीत नृत्य वादित्र महोत्सव, करिल्याये नृप द्वार ।
सौंपि तातकों नृत्य तांडो करि, भरे पुण्य भंडार ॥ ३ ॥
मन वांछित जाचिक जनको, दान दियो सुखकार ।
नर नारी सब मंगल गावैं, बलदेव आनंद कार ॥ ४ ॥

(१५४) लावनी ।

भला श्रीनेमीश्वर महाराज, अरज एक सुनिले जइयो म्हारी ।
मोयछांडि चले किन काज, कहा तकशीर मेरी नितधारी ।टेर।
प्रभु जादोकुल सिरताज, बरात बनाकर आगे भारी ।
प्रभु छप्पन कोटि कुमार, संगलिये सब बलभद्र मुरारी ॥
इन्द्रादिक देव अपार नवें सुर, नार अपछरा सारी ।
गुण गावत दंदं नाद, हर्ष अति भये सुरासुर नारी ॥ १ ॥
भला श्री मोर मुकटशिर धरे, प्रभुपर कोटि मदन छबिवारी ।
इस भांति बरात बनाय तोरणकों, सज आये सुखकारी ॥
भला सुनि पशुवनकी किलकार, जनै करुणानिजमें उरधारी ।
प्रभु बंदिदिये छुटवाय, तुरत रथ फेरि दियो गिरनारी ॥२॥
[illegible] प्रभु अथिर जानि संसार, सब आभूषण सब दिये डारी ।
होय परम दिगम्बर रूपनारि, शिव रमणी परनिन भारी ॥
मेरी अबसरकी सबभीति, छांडि दीनी एक पलक मझारी ।
अब देव छोडि जावो संग मैं, नहि फिर आवो भारी ॥ ३ ॥
[illegible] प्रभु तुम संग परिग्रह, त्याग जोग लेऊ भारी ।

यो राजमती प्रभु साथ, सर्वको त्याग, तपस्याधारी ॥
शिव सुखकारी यह नेम राजलको छंद कहैं 'बलदेव' धारी ।
प्रभु मोकों भव दधिपारि करो, मैं आयो सरण तुम्हारी ॥४॥

(१५५) लावनी ।

श्रीपार्श्व प्रभु मोरी अरज सुणोजी, मैं तुमरी सरणाधारी ।
त्यारो प्रभुजी प्रभु मोय त्यारो, भवदधि मझारी ॥ टेक ॥
काशी देश बनारसि नगरी, अश्वसेन नृप सुखकारी ।
श्रीवामा देवी देवीवामा, निशि सपने सोले धारी ॥
प्राणत स्वर्ग छोडि करि श्रीजिन, माताके उरथिति धारी ।
रत्नजु वरसे जो वरसे, नित, रत्न मास पंद्रह भारी ॥
छप्पन कुमारी देवी सेवै, तिथि वैशाख दोज कारी ।
मघवा आये आयकर, पूजे जिनअरु मात पिता सारी ॥
घर घर मंगल चारभयो ओर, हर्ष भयौ पुरमें भारी ।
करि करि उत्सव उत्सव करि, निज २ स्थान गयेसारी ॥

दोहा ।

गर्भोत्सव जिन पार्श्वको, भयो महा जु विशाल ।
मंगल गान उचार कर, बलदेव नावै भाल ॥

आचली ।

मंगल गर्भ कल्यानधार, प्रभु पार्श्व शरण मैं हूं थारी ।
त्यारो प्रभुजीक प्रभुमोय, त्यारो भव दधि मझारी । १ ॥
पोष स्याम एकादशि दिन प्रभु, जन्मे तीनज्ञान धारी ।
सुख भयो है मोद जवै, त्रिभुवन में आनंद कारी ॥

इन्द्र सची जुत एरापति चढि. देय चतुर विधि मंगलारी।
श्रीप्रभुकों मेरुशिखर लेजाय धारी ॥
पांडु शिला पर आजनान करि, क्षीर उदक कलसालारी।
एक हजार जो आठ प्रभुके, शिर पर कलसा ढारी ॥
गीत नृत्य वादित्र महोत्सव, करिफिर पिता पास सारी।
जन्मोत्सव, करिकरि जन्मोत्सव निज थल गये सारी।

दोहा।

जन्मोत्सव श्री पार्श्वकों, को कवि कहे बनाय।
चन्द्रदेव प्रभु गुण गायके, वंदे मन वचकाय ॥

आवली।

मंगल जन्म कल्याण धारि, प्रभु पार्श्व स्मरण मैं हूं धारी।
हमारा प्रभुजी, प्रभु मोक्षगामी, भवदधि पारगामी ॥ २ ॥
दश अतिशय करि सहित प्रभु, की बाल अवस्था सुखकारी।
भाग प्रभुके मधुर, भोग रूपमय सब है सारी ॥
भाग जुगल प्रभु जन्म उत्तारे, कपट मान भंजन भारी।
राज न कीनो न कीनो व्याह, राज पट नहीं धारी ॥
अथिर जान संसार प्रभुने, परिग्रह त्याग दियो सारी।
पोष एकादशि पोर स्याम तप लियो प्रभुजी भारी ॥
प्रथम पूज लोकांतिक देवगये, फिरि इन्द्रादि आय सारी।
तप मंगलकी करि मंगल, तप कल्याण भयो भारी ॥

दोहा।

शिवका चढ़ि प्रभु वन गये, तप धारो है जाय।
चन्द्रदेव कर पर्श भावसों. नमें सम पूर्ण जिनराय ॥

आचाली।

मंगल तप कल्याक धार, प्रभु पार्श्व सरण मैं हुं थारी ॥३॥
धरि कर ध्यान कर्म नाशनको, उद्यमकीनो प्रभुभारी।
कमठ उपद्रव उपद्रव कमठ असुर कीनो भारी॥
आये धरनेंद्र तवही उपसर्ग, जीति लियो प्रभु सारी।
शुक्ल ध्यान धरिकर धरिकर, ध्यान कर्म जारे भारी॥
चैत कृष्ण सुभ चौथि दिना प्रभु, घाति कर्म किये नाशारी।
केवल लक्ष्मीके लक्ष्मी केवल पाई अति कारी॥
संग चतुर विधिधारि प्रभुजी, आर्य क्षेत्रकियो विहारी।
नंत चतुष्टय चतुष्टय नंत, लब्धि नव प्रभु धारी॥

दोहा।

दश अतिशय केवल तणो, चौदे देव कृत धार।
दोष अठारह रहित भये, बलदेव वंदत सार॥

आचली।

मंगल ज्ञान कल्याण धार प्रभु पार्श्व सरण मैं हूं थारी ॥४॥
चारि अघाती कर्म नाशि प्रभु, सिद्ध निरंजन पदधारी।
लोक शिखर परक प्रभुजी, लोक शिखर कियो वासारी॥
सप्तमि श्रावण शुक्ल सम्मेदा, चलतै पाई शिव नारी।
इन्द्रआय करिक आय सत, इंद्रकिये उत्सव भारी॥
तुम गुण गणको पार नहीं प्रभु, को पावै कवि मतिधारी।
मैं शरणों आयोक आयो सरण लाज रखजो म्हारी॥
गावै छंद बलदेव अल्प मती मंगल पंच हियेधारी।
भक्तिदेवो मोय मोय प्रभु, भक्ति देवो भव भव थारी॥

दोहा।

पंच मंगल श्री पार्श्वके, हैं बहु गुण विस्तार।
चलदेवने संक्षेपसों, गाये भक्ति उर धार॥

लावनी।

मंगल पंच कल्याण धार प्रभु पार्श्व शरण में हूं थारी॥१॥
त्यागो प्रभुजीके प्रभु मोय त्यारो, भवदधि मंझारी।

(१५८) लावनी।

स्वामी श्रीमहावीर प्रभु मोय, शरणा दीजो तुमारा।
तुम विन प्रभुजी प्रभुमोय, कौन करे भव दधि पारा॥ टेक॥
सिद्धारथ त्रिशला के नंदन, कुंडनपुर लियो अवतारा।
कंचन वर्ण वरण कंचन, सोहै सब जग प्यारा।
अद्भुत केहरि चिन्ह विराजे, सुर नर पद सेवें थारा।
वंश कृतारथ कृतारथ, वंश कियो हरि उजियारा॥ १॥
आयु बहत्तर वर्ष धरी प्रभु मन्मथ जीत्यो अतिभारा।
ब्याह न कीनो न कीनो, ब्याह राज नहीं तुम धारा॥
भरि यौवन में दिक्षा धरि प्रभु, धर्म जग दिगे सारा।
केवल भानु भानु केवल, ह जागो प्रभु अति भारा॥ २॥
समव शरण लक्ष्मी जब प्रगटी, महिमा कौं पावे पारा।
संघ चतुर विधि चतुर्विध, संघ धारि कियो विहारा॥
आर्यक्षेत्र के भवि बहुतारे, फिरि पावा पुरगिरि धारा॥३॥
कार्तिक मावस अमावस कार्तिक शिवपुर सिधगामी।
अबके तुम विन मैं भववन में, दुख पायो जानो सारा।
आश उमेते उमेते, आश मिले अक्षय थारा॥

गावै छंद बलदेव अल्प मती, तुम पद सरणो उरधारा ।
कर्म फंद मेरामेरा प्रभु, कर्म फंद काटो सारा ॥ ४ ॥

[१५७] राग–पटप्रभाती ।

श्रीजिनेन्द्र त्रिभुवन के राजा, तुम विन कोंन सुधारे मेरे काजा ॥ टेक ॥ आनदेव सब देखे ठग राजा, जिनने मेरो करो अकाजा ॥ १ ॥ मैं चारो गति मैं दुख वहुपायो, तुम तै नहि छानै महाराजा । बडे भाग से पुम प्रभु पाये, पतित उधारन धर्म जिहाजा ॥ २ ॥ अब मैं तुम पद सरण गही प्रभु, तारण तरण राखो मोरी लाजा । बलदेवकी यह अरज सुनों प्रभु, शिव सुख देवो गरीब निवाजा ॥ ३ ॥

(१५८ राग—पटवा ।

जै जै जै श्री पारस स्वामी, मोरी करुणा करो अंतर जामी ॥ टेक ॥ अश्वशेन वामा जू के नंदन, त्रिजगत वंदन हो गुण धामी ॥ १ ॥ तुम गुण को नही पार प्रभुजी, सुर नर मुनिजन सेवा करगी । कमठ दलन दुख हरन करन सुख, नाग उवारे छिन न लगामी ॥ २ ॥ मै तुम विन अनंत भव भटक्यो, सब तुम जानत हो शिव गामी । बलदेव की यह अरज सुनो प्रभु, आप समान करो मोय स्वामी ॥३॥

(१५६) राग—भकली ।

नेम प्रभु थाके पाय परो, पाय परो परिणाम करों ॥ टेक ॥ तुमको दीन दयाल जान प्रभु, में अपनो सबदुख उचरो॥१॥ अष्टकर्म दुख देत निरन्तर, तातै आति गति भ्रमण करो ।

भव सागर में वी थाह न पाई, यातैं में कैसे उबरो ॥ २ ॥
तुम प्रभु अधम उधारक देवा, मेरावी करूणा चित धरो ।
बलदेवकी भव व्याधि हरो प्रभु, तुम किरपा ते मुक्तिवरो ॥३॥

[१६०] राग–रामकली ।

चंद प्रभु मेरी अरज सुनौ, अरज सुनो प्रभु० ॥ टेक ॥
नृप महासेन जु मात सुलक्षण, चंद्रपुरी मधि जन्मधरो ॥१॥
तुम समदेव न और जगत मैं, तासों मेरो काज सरो ।
पतित उधारण विरद तुम्हारो, सुणि सुणि मैं जिय धीर धरो ।२।
चौरासी लख गति मे भटक्यां, तुम तैं सो कछु नाहि दुरो ।
बलदेव कों अपनो सेवग लखि, जन्म जरा मृत दुःखहरो॥३॥

[१६१] राग—हुमरी दादरा ।

त्यारो प्रभु त्यारो प्रभूजी, होजी मेरा त्यारो प्रभुजी ।
मेतो सरण थारी आयो, त्यारो प्रभूजी० ॥ टेक ॥
तुम विना मैं भव बन माही, दुख पायो चहुगति भटकाई ।
भाग बडे मेरे अब आये, दर्शन पायो थारो प्रभुजी ॥ १ ॥
सिंघादिक तिरजंच उधारे, भव्य अनेक भवोदधि त्यारो ।
पतित उधारन विर्द तुमारो, सुनि मर्णो दरबारो ॥ २ ॥
तुम हो दीन दयाल जगत पति, मेरी करुणा धारो ।
अन चित कर्म भरी म ग दुख बहु देवै, इनको वेग निवारो ॥ ३ ॥
त्रिभुवन में भवतारक तुमही, यह उरनिश्चै धार्यो हमने ।
बलदेव सरण तुमारी पकरी, ज्योंजाणोंत्यों त्यारो प्रभुजी ॥ ४ ॥

[१६२] राग–खमाच–

सुनि सुनि जिन राज दया करि दर्शन को मोरी अरज यही है ।

॥ टेक ॥ श्री सुह मंत राय नृप सोहै, माता स्यामादे धन्नि भई है ॥ १ ॥ मन मयुंगछवि श्री हरिवंशी, वीस चाप तन काय लई हैं ॥ २ ॥ जन्म राजा ग्रह कछि लक्षण जुत, त्रिभुवन मन आनंद भई है ॥ ३ ॥ वलदेव तुम पद सर्ण गही मोय, निज सुख द्यो अरदास यही है ॥ ४ ॥

(१६३) राग–टप्पा।

देखो प्रभुके संग तपकरो मैं जाय, गिरनारीको मैं जाऊंगी ।टेक।
मात पिता सुनि संगकी सहेली सब, अब ना रहैगी घर ।
मोयतजि प्रभु गिरि चढेजाय, गिरनारीको मै जांऊंगी ॥१॥
कोन चूक मेरी देख छांडिगये, समुदविजै सुत ।
नव भवकी प्रीति तोडें जाय, गिर नारी कों मै जाऊंगी ॥२॥
श्रीराजमती तप धरचो जाय, सबसों नेह तजि करि ।
वलदेव तिन पद नमैं ध्याय, गिरनारी को मैं जाऊंगी ॥३॥

[१६४] राग–गौरी।

भला प्रभु छवि थारी प्यारी म्हारै मन भावै, प्यारी म्हारे मन भावे २ ॥ टेक ॥ शांति छवि पद्मासन मूरति, देखत जीय सुख पावैजी ॥ १ ॥ अद्भुत रूप तुम्हारो निरखत, अंग अंग हुलसावैजी ॥ २ ॥ तुम पद दरश निहारत मेरा, पाप पंक नशि जावैजी ॥ ३ ॥ वलदेव वार वार तुमकों अब, मन वच तन शिर नावैजी ॥ ४ ॥

(१६५) पुनः।

प्रभु मोय त्यारो थारी अब, मैं शरण गही छै ॥ टेक ॥

तुम प्रभु दीन दयाल कृपानिधि आनंद कंद सही छो ॥ १ ॥
सरणागति प्रतिपाल जिनेश्वर, तारण तरण तुही छो ॥ २ ॥
बलदेव की भव व्याधि हरो अब, प्रभु म्हारी अरज यही छे ॥ ३ ॥

[१६६] राग-पूर्वी ।

अरज सुनों जिनराज प्रभुजी म्हारी, अरज सुनों० ॥ टेक ॥
तुम प्रभु दीन दयाल जगतिपति, हो प्रभु धर्म जिहाज ॥ १ ॥
मैं दुखिया हूं अनादि कालको, तुम सरणा आयो आज ॥ २ ॥
बलदेव को लखि दास आपनो, त्यारो गरीबनिवाज ॥ ३ ॥

[१६७] राग—दादरा—

देखो नेमजी मुकुट छोडे जात रे, सबमें फरी फरी पोरी आली ॥ टेक ॥ सब जदुवन संग व्याहन आये, सोपे सो छवि वरनी नहीं जातरे ॥ १ ॥ पशुवन रव सुनि बंद छुड़ाये, देखो रथ गिरनारी फेरो जातरे ॥ २ ॥ परिग्रह त्याग भये बन वासी, शिव नारिसों लव लातरे ॥ ३ ॥ राजमती सब संग तप कीनो, देखो बलदेव वंदत शिर नातरे ॥ ४ ॥

(१६८) राग-दादरा-

प्रभु थारि छवि म्हारे मन भावरे, देखा निरखत सो शिव सुख पावरे ॥ टेक ॥ चंद चकोर मोर घन जैसे, यों दर्शन तुमरो चाहतरे ॥ १ ॥ प्रभु छवि वदन विलोकत फर्से, पंग २ सोंके कुल्मषनरे ॥ २ ॥ बलदेव नित दिन प्रभु छवि ध्यावो, जासों विधि गति नाश जातरे ॥ ३ ॥

(१६९) राग–दादरा कहरवा–

सो अब सुधि लीज्यो प्रभु म्हारी, मैं, शरण आनिगही थारी ॥ टेक ॥ तुम विन मैं संसार जलधिमें, जनम मरण किये भारी। प्रभु हमनें दुख भुगते, लख चोरासी तन धारी ॥ १ ॥
आनि देव सब रागी दोषी, जिन भरमायो भारी।
काल लब्धिसों तुमसे प्रभुके, भेटे पद सुख कारी ॥ २ ॥
वार वार मैं वीनती करुं प्रभु, सुनिजो अरज हमारी।
बलदेव को भव भव में दीजो, सेवाभक्ति तुम्हारी ॥ ३ ॥

[१७०] राग—दादरा कहरवा—

सो प्रभु मोय दरसण द्यो, भला मारी अर्जी चित धरिल्यो ॥ टेक॥
मैं अबलों तुम दर्शन विन प्रभु, भव वन माहि भ्रमोहो।
जन्मो चोरासी लख गतिमै, नाना विपति भर्यो ॥ १ ॥
कर्म शत्रु लगि रहे अनादिके, तिन को दूर करो हो।
आतमीक निज सुख मेरोहै, ताकौं प्रगट करो स्यो ॥ २ ॥
वारं वार मैं वीनऊं प्रभु, मेरी वी करुणा ल्यो जो।
बलदेव मन वच तन सों विनवै, निज मय मोय करिल्यो ॥३॥

[१७१] राग—टप्पा।

अजी भला, मेरादिल लाग्या प्रभु तुम चरणनसें, ॥ टेक ॥
शांति छवि तुमरी निरखत मेरे, आकुल तापमिटे मेरे अगसें ॥ १ ॥
जग के देव सब रागी देखे, वीतराग तुम पाये भागनसें ॥ २ ॥
यह सब जग मतलब को गरजी, विनमतलब तुम देखे होजगतसें ।३।
बलदेव के उर बसो निरंतर, अंतर भाव हरो मोरे मनसे, ॥ ४ ॥

[१७२] राग—जुगा।

प्रभ मोय बेग उबारो भव दधि से, हो मनी भला प्रभु० ॥ टेक ॥
भव दधि अगम अपार अगा है, तुम बिन कौन निकारै गामधिमंहा ॥ १ ॥ जन्म मरण अर आधि व्याधि दुख, तामें मै जु पड्यां फंद विधिसें ॥ २ ॥ तुम त्रिभुवनपति सबही व्यायक, जीव अनंत उबारे दुख दंदिसें ॥ ३ ॥ बल्देव भी भव व्याधि हरो प्रभु, मोपै अब महर करो नेक चितसें ॥ ४ ॥

। १७३ । राग—दादरा।

क्यों ना लीजो जी हो, क्यों ना लीजो जी हो,
श्री जिनराज खबर मेरी, क्यों अबना० ॥ टेक ॥
तुम हो दीन दयाल प्रभु अब, मेरी बी करुणा कीजो जी हो
भला कीजो जी हो, श्री जिनराज खबर मेरी० ॥ १ ॥
दुखी भयो भववनमें तुमबिन, मेरो ज्ञानधन हीजोजी हो,
भला कीजो जी हो, श्री जिनराज खबर मेरी० ॥ २ ॥
तुम बिन प्रभु मेरा और देवसे, कारज ना मेरा सीजैजी हो,
भला सीजे जी हो, श्रीजिनराज खबर मेरी० ॥ ३ ॥
बल्देव तुमरी शरण गही है, निजरस अमृत दीजोजी हो,
भला अमृत पीजोजी हो, श्रीजिनराज खबर मेरी० ॥ ४ ॥

। १७४ । राग—दादरा।

थांकि निरख म्हारो मिया सुख पावे हो, थाने निरख० ॥ टेक ॥ जिनराज छवि निरख रावरी हो, और देव मन नाहि लावें रे ॥ १ ॥ अतुल चतुष्टय तुम …

छवि तुम्हारी म्हारे मन भावै हो ॥ २ ॥ अद्भुत अनुपम-
रूप तुम्हारो, निरखि २ अंग २ हरखावै हो ॥ ३ ॥ छवि
तुम्हारीको बलदेवको, भव भव दरसण द्यो यह चावै हो॥४॥

। १७५ । राग–दादरा ।

श्रीजिनराज अरज मेरी, सुन लीजै जी हो० ॥ टेक ॥
भवदधिमें मैं वह्यो जात, मोय काडि किनारे कीजैजी हो ॥१॥
कर्म शत्रु मोय घेरि रहे हैं, अब इनसे छुडा मोय लीजै हो ॥२॥
बलदेवकी अरजी चितधरि प्रभु, अविचल थल पद दीजैजीहो ॥३

। १७६ । सोरठ दादरा ।

हो प्रभु मेरी अरज सुनि लेना, अरज सुनि० ॥ टेक ॥
तुम विन भव बनमें दुख बहु मैं, पायो सो क्या कहना ॥१॥
जीव अनंत उवारे तुम अब, मेरी ओर चित देना ॥ २ ॥
करुणा सागर विरद तुमारो, मोय भूलै जो बनैना ॥ ३ ॥
दीनवंधु बलदेवके विधि फंद, काटि तुरत अब देना ॥ ४ ॥

। १७७ । पुनः

हो नेम प्यारे दरस मोय देना, हो नेम प्यारे० ॥ टेक ॥
कौन चूक पर तजि गये प्रभुजी, ऐसे किये सरैना ॥ १ ॥
भव भवकी मैं चेरी तुमरी, अब मोय छाडे बनैना ॥ २ ॥
राजुल प्रभुके संग व्रत धारे, विधिके अंक मिटैना ॥ ३ ॥
बलदेवको सेवक निज प्रभुजी, भव भव मैं कर लेना ॥ ४ ॥

(१७८) राग–दादरा मांड ।

हो प्रभुजी म्हाने त्यारो महाराज । प्रभुजी म्हाने० ॥ टेक ॥

तारण तरण विरद सुनि तुमरो, सर्ने आयो महाराज ॥१॥
तुम प्रभु अधम अनेक उधारे, तुमहो धर्म जिहाज ॥ २ ॥
बलदेव तुमरी सरण गही, मोय द्यो निज सुखराज ॥ ३ ॥

(१७९) राग—टप्पा खंमाच।

नीकी म्हाने लागे मूरति तुम्हारी, प्यारी म्हाने लागे० टेक॥ निशिवासर मेरे हिरदे विराजेहो, यहि पलछिन इक होत न न्यारी ॥ १ ॥ चंद चकोर मोर घन जैसें, तैसें नहि मूरति विसारी ॥ २ ॥ बलदेव तुम छवि निरख २ प्रभु, आनंद हिये में धरो अतिभारी ॥ ३ ॥

[१८०] चाल—हां हां जोरा जोरी मोरी बय्यां मरोरी रे।

हां हां प्रभु थारी छवि म्हारे मन भावेहो, म्हारे मन भावे हो। परम शांति मुद्रा लखि थारी, अब मोय और देव न सुहावे ॥ टेक ॥ आनंदकंद जिनंद आज तुम, देखत नेत्र परम सुख पावे हो ॥ १ ॥ अद्भुत रूप अनूपम तुमरो, निरख २ मेरा जिया सुख पावेहो ॥ २ ॥ हे प्रभु तुम छवि लखि कर बल्देव, मन वचतन करि शीश नवावे हो ॥३॥

[१८१] पुनः।

हां हां प्रभु तुम देवनके देवा, हां हां प्रभु तुम देवनके देवा।
नंतचतुष्टय मंडितहो प्रभु, सुरनर इंद्र करें थारी सेवा ॥टेक॥
सुध छयालीसों राजमान तुम, दोष अठारे रहित अभेवा ॥१॥
मपोगरा लक्ष्मीके स्वामी, त्रिभुवन जनको सुखकर करेवा ॥२॥
भवभय में बल्देवको प्रभुजी, निजपदकी दीजो प्रभु सेवा॥३॥

१८१ राग—भैरो मालकोश।

जन्मसुफल मोरे आज भये, आनंदकंद पार्श्वछवि लखि करये ॥ टेक ॥ शीश सफल ढोकत भयो मेरो, हस्त सफल अंजुलि जुडयें ॥ १ ॥ नेत्र सुफल भये रूप निहारत, मुख पवित्र स्तुति गान ठये ॥ २ ॥ शांति छबि के दर्शन रत मोरे, कुमति ध्वांत तम नाश भये ॥ ३ ॥ बलदेव कहै आज दरशन पाये, सर्व अर्थ मेरे सिद्ध भये ॥ ४ ॥

१८३ राग—कानडो टप्पा।

हो प्रभु थारी मूरति पै मैं बारी हो, हो प्रभु थारी मैं छवि पर वारी हो। अद्भुत अनुपम सुंदर सोहै, थांपे कोटि सूर्य शशि वारी हो ॥ टेक ॥ अनंत चतुष्टय मंडित साजत, गुण अनंत भगवंत विराजत, तुम दोष अठारैं रहित देव, शिव रमणीवर सबजन सुखकारी हो ॥ १ ॥ परम शांति मुद्रा सोहै थारी, निरावर्ण निरदोष अपारी। सतइंद्रवृंद तुम दास भये अब, सेवत पद मुनि जन सुरनारी हो ॥ २ ॥ हे प्रभु दीनदयाल अपारी, बलदेव शरण गही अब थारी। मोयभव भव तुम पद सेवा द्यो, मैं नमन करों मन वच तन धारी हो ॥३॥

[१८४ पुनः

हे जिन स्वामी अरज सुनि म्हारीहो, होजिन स्वामी अरज सुनि म्हारीहो। तुमैं दीनदयाल कृपाल जानि मैं, आयो शरण तुपारी हो ॥ टेक ॥ तारण तरण जगतपति स्वामी, करुणा करों मोरी अंतर जामी। अब कृपा सिंधु मोय रक्षरक्ष, तुम

दीन बन्धु उपगारी हो ॥ तुम बिन मैं भव बनके मांही, चौरासी लख जोनि धराई मैं जन्म मरण कर दुखित फिर्यो, अब राखोगे लाज हमारी हो ॥ २ ॥ तुम त्रिभुवन पति आनंद कारी, मोय भव भव दीज्यो भक्ति तुमारी । अब बल्देव तुम पद सर्णा गही, मोय दीज्यो निज पद सुखकारी हो॥४॥

[१८५] राग—डूमरी—

अब लागी म्हारे नैनोंडी तुमी से डोरी हो,

अब लागी म्हारे नैनोंडी तुमीसे डोरी हो ॥टेक॥

जैसे चंद चकोर और चत्रिग घन डोरीहो,

तुम चरण न से प्रीति एसी हमने जोरी हो ॥ १ ॥

तुमही हो स्वामी मेरे मैं सेवग थारो हो,

यह निश्चै करि आनि देवकी सेवा छोरी हो ॥ २ ॥

मोय अपनो करि लीजे प्रभु तुम करुणा धोरी हो,

आनदकंद जिनंद अर्ज यह तुमसे मोरी हो ॥३॥

अष्ट अंग नमि बल्देव विनवै सुनि प्रभु मोरी हो,

अब भव भव मैं सेवा प्रभुजी मोय दीज्यो तोरी हो ॥ ४ ॥

(१८६) पुनः डूमरी—

अब पारस प्रभुसे मोरी लगन लागी, अब लगन लगी मोरी पारस प्रभुसे० ॥ टेक ॥ घटि पल छिन मोहि कलप पडत, बिन देखे प्रभु थाने मन लगत नहीं ॥ १ ॥ अबमैं छाडत ना छिन विसरत ना, निशदिन थांसों मोरी प्रीति पगी ॥ २ ॥ बलदेव थारे पद निशिदिन वंदत, है प्रभु थारी मैंनो सरण गही ॥ ३ ॥

। १८७ । चाल—कंगन मोरा करसे करक गयो रे—

दरस प्रभुजी मोय दीजियेजी, भला तुम दरसनको रहत जिय तरस ॥ टेक ॥ निशिदिन घडिपल इक छिन मेरेजी, लगी रहत लो सरस पाऊं मैं कब दरस ॥ महरकी नजर करीजियेजी, भला तुम दरशन को रहत जिया० ॥ १ ॥ या त्रिभुवन में तुम विन ओरसेंजी, मैं वारी भला सरी नही मोम गरज, उलटी भई हरज अवे तुम मेरी सुधि लीजियेजी । भला तुम० ॥ २ ॥ अव मैं तुम पद सरन गही प्रभुजी, मेरे हरो विधि करज, बलदेव करे अरज, दास को निज सम कीजियेजी, भला तुम दरशनको रहित जिय तरस ॥ ३ ॥

। १८८ । चाल—छेल मग रोके ठाडो गेलवा ।

प्रभुको आज देखि सुफल भये नैन, हो मैंने पायो है पर्म सुखचैन ॥ टेक ॥ निरख २ छवि होत आनन्द मेरे तुम पद सेवूं दिन रैंन ॥ १ ॥ दरशन करत कुमति सब नाशी, दूर भाजी विधि की सैन ॥ २ ॥ जन्म जन्मके अघ सब नाशै, सुमति प्रगट भई अैन ॥ ३ ॥ निशि दिन तुम पद सेवत बलदेव, यही मोकूं शिव सुख दैन ॥ ४ ॥

। १८९ । राग—दादरा देश कालंगडा ।

प्रभु थारी महिमा कहीयनहिजाय, प्रभुथारी महिमा कहीयन. टे. सुर नर नाग तुमारे पद पंकज, सेवत निशिदिन ध्याय ॥ १ ॥ अनंत चतुष्टय निधिके स्वामी, त्रिभुवन मंगल दाय ॥ २ ॥ बलदेव तुमको मन वच तन करि, वंदत शीश नमाय ॥३॥

। १६० । पद—पुनः ।

प्रभु थासौं म्हारो मनड़ो लग्यो जिनराय, थासौं म्हारोमनड़ो. टे.
आनि देव सब छांडि तुमारे, चरणन में लव लाग ॥ १ ॥
निशि वासर प्रभुजी छवि तुमरी, मेरे दिलमें रही समाय २
नलदेव थारे प्रभु पद पंकजको, सेवत मन वच काय ॥३॥

। १६१ । पद—पुनः ।

अब यह मोरी अरजी सुनो जिनराय, अब प्रभु मोरी० टेक ।
तुम बिन मैं अब प्रभु भव सागरमें, भरमत फिर्‌यो अथाग ।१।
पुन्य जोग अब तुम प्रभु मिलिया, चरण शरण गही आय २
कर्म बली मोय दुख बहु देवें, इनसों देवो छुड़ाय ॥ ३ ॥
नलदेव को निज दास जानिकरि, भव दुख फंद नशाय॥४॥

। १६२ । राग—सेन ।

म्हारी सुधि लीजो, म्हारी सुधि लीजो,
अर्जी हो प्रभुजी म्हारी सुधि लीजो ॥ टेक ॥
भवदधिमें मैं डूबनिहो प्रभु, काढि किनारे अब मोय कीजो ॥१॥
कर्म अघु फंद परचो मैं, प्रभु निर्भयपद मेरे तारि दीजो ॥२॥
तीनलोक में तुम सम कोई, तारणवाला देव ना दूजो ॥ ३ ॥
नलदेव तुम पद शरण गही प्रभु, तुमसम मोयें अब करदीजो॥४

। १६३ । राग—दुमरी ।

मन न पढन लिना देखें प्रभु थांके, मोरी दर्शन दीज्यो हजूर। टे
निशिदिन रहि पल तुम चरणनसों, लागी लगन भरपूर ॥१॥
निरख निरख छवि होत हरष अति, दुख शान नहि दूर ॥२॥

आनंद कंद जिनंद चंद तुम, सुख दायक दुख चूर ॥ ३ ॥
बलदेवको सेवक अपनो लखि, शिव सुख दीज्यो जरूर॥४॥

। १६४ । राग—रतवाई ।

लागी लगन दिन रैंन, मेरी तुमसो प्रभु, लागी लगन० टेक॥
अह निशि तुमपद पंकज सेवूं, तुमही हो सुख दैन ॥ १ ॥
निरख २ छवि प्रभु मैं थारी, पायो परम सुख चैन॥ २ ॥
बलदेवको अपनो चेरो लखि, दीज्यो शिव पद अैन ॥३॥

। १६५ । पद—पुनः ।

तुमही सें लागे मेरे नैंन, म्हारे प्रभुजी, तुमहीसें ॥ टेक ॥
थारी छविके मोय दरस परसविन, कल न पडत दिन रैंन ॥१॥
थाकी छवि म्हारे चित चिंतन दायक, चिंतामणी कामधेनु ॥२॥
निशि वासर घडिपल इक छिनमेरे, दिलमैं बशी है छबिश्रेन ॥३॥
बलदेवको अपनो लखि प्रभुजी, चूरो कर्मको सैंन ॥ ४ ॥

। १६६ । राग—टप्पा तिल्लाना ।

ओं पांचों परमेष्ठी ध्याऊं, २ सुमरि सुमरि गुण गण गाऊं ।
अब हरष २ करि, उमगि २ में वारबार जस गाऊं ॥टेक॥
अर्हंत सिद्ध अचारज स्वामी, उवझाय साधु पंच पदनामी ।
सर्वजिन प्रतिमा अरुजिनवाणी, क्रितिम अक्रतिमजिनग्रहधामी
इन सबको में निशिदिन घडिपल, वारबार शिर नाऊं ॥१॥
येही मंगल येही उत्तम, इनको सर्णधारि कर अब हम ।
बीन मृदंग वांसुरी लेकर, ताल बजाय नृत्य ताडव करि ।
अब सुरनसों तीन ग्रामजुत, श्रीजिनेंद्र गुण गाऊं ॥ २ ॥

गरं ग म पद नी सा, नीसांधप मगरेसा, तार्थई थेई तत् २.
गगर गगर सारे गम पदनीसा । नादिर नानी तुम दिर
नानी, तुम तन दिरना, मगल गान आनंदसो करना ।
मन वच तन करि बलदेव प्रभुकों, हिरदेमें पधराऊं ॥ ३ ॥

। १६७ । राग-ईमन तिल्हाना ।

जिनवर मोरी खबर लेवो, मैं आनि गही सरणांधारी ।
जानि सुखकारी, दुखहारी, अब अर्ज करों कर जोरि,
प्रभु तुम सुनियो जग भरतारी, जिनवर मोरी खबर लेवो ॥टेक॥
तुमहो महाराज, सब लायक, दायक सब सुख सार सार ।
दुख हारि टारि, अब महिमा मैं तेरी चित धारी,
हो तो तुमपरो प्रभु जाऊं, वार वार बलिहारी ॥ १ ॥
मैं अनादिमें भवसागरमें, भटकत चहुंगति धारि धारि,
मोहि त्यार त्यार, अब बलदेवकों निज दास जानिकर, भव
आप दुख देवो टारी ॥ २ ॥

। १६८ । राग-चौताल्या ईमन ।

ॐ नमः श्री अर्हंत दोष अष्टादश रहत, गुणछियालीसो
सहित वीतरागरागी प्रभु ॥ टेर ॥ ॐ नमः सिद्धराशि
अष्ट करमको विनाशि, अष्ट गुण प्रकाश, अष्ट धरामें वि
राजो प्रभु ।१। ॐ नमः आचारजजी, गुण छत्तीस धार प्रभु,
ॐ नमः उपाध्याय गुण पचीस धारो प्रभु, ॐ नमः सर्व
साधु अठवीस गुणके धार, पंच परम इष्ट बलदेवके हिरदे
विराजो प्रभु ॥ २ ॥

। १९९ । राग–कानडो ।

ॐ पाचों पर्म पद ध्याऊं, अव मन बच तन करि सुमिरण कर,
॥टेक॥ अरिहंत सिद्ध आचारज स्वामी, उवझाय साधु मनाऊं।१।
येही मंगल येही मंगल येही उत्तम, इनहीको सर्ण धराऊं।२।
निशि दिन घडि पल इनही कोमें, वारवार जस गाऊं ॥३॥
बलदेव गुण गण गाय प्रभुको, हिरदे मैं पधराऊं ॥ ४ ॥

। २०० । चाल गंगाराम सुवा कीं ।

अजी हांजी प्रभुजी मोयै त्यारो, भला म्हारी विनती अव चितधारो । मैं सरण पड्यो थारी आनि प्रभुमें, शरण पड्योजी थारी आनि ॥ टेक ॥ तुम विन मैं भव वन माही, दुख भुगतेमैं अधिकाई । गति चोरासी लख धारि, प्रभु गति चोरासीजी लख धारी ॥ १ ॥ अव पुन्य जोग आयो म्हारो, मैं दर्शन पायो प्रभु थारो । मैं भेटे तुम पद आय, प्रभु मैं भेटेजी तुम पद आय ॥ २ ॥ एजी प्रभु तुम त्रिभुवन पति स्वामी, करुणां करि अंतर जामी । सरणा गति प्रति पाल ॥ ३ ॥ अजी एजी, बलदेव है दास तुमारो, तुम पद सरणो उरधारो । मोयै भव सागरसें त्यारि, प्रभु मोयै भव सागरसे त्यारि ॥ ४ ॥

। २०१ । कालिंगडा ।

होजी दीनानाथ, अरज सुनि लीज्योजी, होजी जिनराज० ॥ टेक ॥ मोकों दीन अनाथ जानि कर, नेक नजर मोपै कीज्योजी ॥ १ ॥ तुम विन भ्रमत फिरो भव वनमें, अव

मोपै अपनां कीज्योजी ॥ २ ॥ तुम त्रिभुवन पति करुणा सागर, अब मेरी करुणा कीज्योजी ॥ ३ ॥ बलदेव को लखि दास आपनो, निज पद सुख मोय दीज्योजी ॥ ४ ॥

। २० । राग-कालिंगड़ा ।

अजि प्रभुजी, सरणा मैं थारी, शरणा मैं थारी,
मोय तारोजी म्हारा, अरज सुनि महाराजी ॥ टेक ॥
तुम बिनमैं भव भव माहीं, दुख पायेमैं अधिकाई ॥ १ ॥
तुम सब देवन के देवा, देवन के देवा, मन इन्द्र करै थारी सेवाजी ॥ २ ॥ तुम तीन भुवन के स्वामी, भुवनके स्वामी करुणा कार अंतरजामी ॥ ३ ॥ बलदेव है दास तुम्हारा, तुम पद सरणो उरधारोजी ॥ ४ ॥

। २०३ । राग-सारंग ।

अरज सुनो जी जिन राजजी, अब म्हारी, अरज सुनोजी० ॥ टेक ॥ कर्म-शत्रु मोय दुख बहुदेवै, इन करि डारयो अकाज जी ॥ १ ॥ तुम समान कोई देवन देख्या, तासों मरे मेरा काजजी ॥ २ ॥ भव सागर सें मोय निकारो, अब मोरी राखोगे लाजजी ॥ ३ ॥ बलदेव को निज दास जानि कर, म्हारो गरीब निवाजजी ॥ ४ ॥

। २०४ । राग-सूमरो ।

राखोगे जिनंद प्रभु लाज हमारी, आनि पड्यो मैं तुम चरणनमांहि, मन बच तन करि सर्णा तुम्हारी, राखोगे जिनंद प्रभु लाज हमारी ॥ टेक ॥ दुष्ट कर्म मुझ दे अनादिसैं,

देअनादिसे गति चारो में, गतिचारो में भरमावे मोय भारी, राखोगे जिनंद प्रभु० ॥ १ ॥ तुम सम देव ना ओर जगतमें, ओर जगतमें ना तारण वाला, तारण वाला तूही है सुख कारी, राखोगे जिनंद प्रभु० ।' २ ॥ तुम प्रभु हो करुणा के सागर, करुणा सागर वलदेवको अत्र, सुख दाजो अविचल अवि- कारी, राखोगे जिनंद प्रभु० ॥ ३ ॥

। २०५ । पद–पुनः ।

लीजो जी नेम पिया खवर हमारी, पशु वन शोर सुनि फेरि चले रथ, मेरी प्रभु चूक कहा उरधारी, लीजोजी नेम पिया० ॥ टेक ॥ व्याहन आये मोरे मन भाये, सव जादो संग लाये, सव जादो संग लाये, वल भद्र मुरारी, लीजेजी भाये, वेराय मन भाये जाये चढे गिरनारी, लीजोजी नेम पिया० ॥ २ ॥ नेम प्रभु मेरा कारज कीजे, कारज कीजे मैं सर्ण गही, अव सर्ण गही वलदेव प्रभु थारी, लीजोजी नेम पिया० ॥ ३ ॥

२०६ राग खंमाच ।

स्वामीजी को जाय कोई लावोजी मनाई कै, नेम जीकों० ॥ टेक ॥ व्याहन को प्रभु आये, छप्पन कोडि जादो लाये, संग हली कृष्णादिक आये, उम गाईकैं, नेमजीकों० ॥ १ ॥ तोरण कों सजिकै आये, पशु शोर सुनि वंद छुडाये,
फेरिरथ गिरनारि पै, वैराग धरा जाईकै, प्रभुजीको० ॥२॥

राजुल कहैं अब हम, प्रभु साथ व्रत धरेंगी जाय,
नेम प्रभुचर्ण पूजो बलदेव, मनलाइकै, प्रभुजीको० ॥ ३ ॥

२०७ पुनः।

स्वामी पार्श्वनाथ आज पूजो मन लाइकै, बाबा पार्श्वप्रभु० ॥टेक॥ अश्वसेन वामाजूके नंदन, जगवंदन प्रभु, बनारसी जनम लियो सेवें सुर आइकै, स्वामी पार्श्व प्रभु ॥ १ ॥ कमठ मान दूर कियो, नाग युग उबार दियो, दिक्षा धारि शिवलई, संमेदाचल जाइकै, स्वामी पार्श्व० ॥ २ ॥ और देव छांडि पार्श्व प्रभु, पूजो बलदेव नित, जासों अविनाशी सुख, पावो तुम जाइकै, स्वामी पार्श्व० ॥ ३ ॥

२०८ राग ढादारा प्रभाती।

हां म्हारे मन बसियां नेम कुमार, नेम कुमार, ॥ टेक ॥
समुद बिजै वीरा लाडिलजी, श्याम सुंदर सुख कार।
शिव देवी के नंदन प्रभुये, बावीसमें अवतार ॥ १ ॥
व्याहन आये सब मन भाये, इंद्रादिक सुर लार।
छप्पन कोटि जादों वंशी आये, श्रीबलिभद्र मुरारि ॥ २ ॥
तोरणसौं रथ फेरि गया, सुनि पशुवोंकी किलकार।
गिर पर जाय परिग्रह तजि प्रभु, लिये महाव्रत धार ॥ ३ ॥
राजुल कहै प्रभुके संग हमभी, ना घर है निरधार।
नेमचर्ण भजि बलदेव नित प्रति, जासों पावो शिव द्वार ॥ ४ ॥

२०९ गजल।

प्रभु शांति का तेरा मेरे दिल में बासना है ॥ टेक ॥

जगके देव सब हम देखे रागी दोषी जी।
भला वीतराग देव तूही नजरों आवता है ॥ १ ॥
तारण तरण तीनो लोकका तू है सही।
भला तेरे पूजे ध्याये भव भ्रम ताप जावता है ॥ २ ॥
रैंन दिना मेरे जीमें तेरा ध्यान भाता है।
तुम सिवाय देव मुझकों ना सुहावता है ॥ ३ ॥
मैंतो थारे चर्णोंकी अब सर्णों आ लई।
अब हाथ जोडि बलदेव तुमको शिर नमावता हैं ॥ ४ ॥

(२१०)–दादरा कहरवा–

आयोजीमें तोरे सरनवा, प्रभु अपनो मोयै दीजो दरसवा ॥ टेक ॥ तुम सम देव ना देखा जगत मैं, तुम प्रभु पाये हम तारण तरणवा ॥१॥ तुम विनमें भव वनमें भटक्यों, करत फिरचो मैं जामन मरणवा ॥ २ ॥ वडे भागसे दर्शन पाये, चरण सरण गहि लीने तोअरवा ॥ ३ ॥ बलदेवकी प्रभु इतनी अरज सुनि, जन्म मरण दुखकाटो मोअरवा॥४॥

(२११)–पुनः।

अजी हो, प्रभुजी अर्ज सुनौं मैं, आयो शरण तुम्हारी ॥टेक॥
तुम प्रभु हो करुणाके सागर, त्रिभुवनके उपकारी ॥ १ ॥
भव बनमें मैं भटकत भटकत, पायो दुख अतिभारी ॥ २ ॥
बलदेवको निजदास जानिकर, भव बाधा हरि म्हारी ॥३॥

(२१२)–पुनः।

दर्श तेरा देख मुझको परमानंद भया, मेरा सब दुःख

गया ॥ टेक ॥ परम शांतिक प्रभु तेरी छविको देख भला, मिथ्यातम नाश भया। अनोपम रूप निरख २ मैं निहाल भया, आज सब दुःख गया ॥ १ ॥ प्रभु तेरे दरस बिना अबलों मैं, बहु दुख सहया, चतुर्गति भ्रमन रया। उंद मेरा भाग भया, आय तुम मर्णा लया, मेरा सब दुःख गया ॥२॥ मुझे तेरी भक्ति प्रभु दीज्यो भव भवमें सही, वन्द्देव पर कर दया। तेरी चर्णोंकी प्रभु रजका मैं दास भया, मेरा सब दुःख गया ॥ ३ ॥

(२१३)–गजल–इंद्रसभा।

प्रभुजी तेरा दरस मेरे जीको भाता है,
तुम सिवा देव कोई मुझे ना सुहाता है ॥ टेक ॥
पर्म शांतिक तेरा रूप सदानंद मई,
तेरे निरखंसे मिथ्या ताप विनश जाता है ॥ १ ॥
तुही प्रभु नाथ तिहुं लोक का है एक सही,
तुझे सब इन्द्र और नागेन्द्र चंद्र ध्याता है ॥ २ ॥
अनउपम रूप निरख २ प्रभु आज तेरा,
मुझे निज भाव मेरा स्वच्छ नजर आता है ॥ ३ ॥
तुही सर्वज्ञ प्रभु वीतराग देव सही,
रैन दिन यही मेरे तुही दिलो भाता है ॥ ४ ॥
लगन देव सर्वो देखे है राग भई,
तेरी छवि देख देख मेरा जी हुलसाता है ॥ ५ ॥

करौं तारीफ प्रभु तेरी कहां लौ जी आवै,
तेरा प्रभु पार गणधरादि नहीं पाता है ॥ ६ ॥
मुजै तेरी भक्ति प्रभु दीजो भव भव में सही,
दास वलदेव तेरी हाथ जोडि अरज सभा गाता है ॥ ७ ॥

(२१४)—राग—दादरा—

प्रभु तुम दीन दयाला, हरो मेरे भवजाला ॥ टेक ॥
तुम कर्म सबै जारि डाला, भक्त कर दीये निहाला ॥ २ ॥
भला तुम हो, जग नायक जगपाला, जासे मोये फन्दो निराला॥१॥
भलाजा में भ्रमत भयो वेहाला, दया मोपै करो कृपाला ॥३॥
भला तुम्हैं, बलदेव नमावन भाला, प्रभु मोये दीओ शिवाला॥४॥

(२१५)—पुनः।

प्रभुजी मैं, आयो सरण तुम्हारी, खबरि प्रभु लीजो हमारी ॥टेक॥
भला प्रभु, तुमहो परम उपकारी, सर्वजग आनन्द धरी ॥१॥
भला मुझे, कर्मोंने दिया दुःख भारी, इनकों वेग देवो निवारी ॥२॥
भला तुमैं, वलदेव नमैं वारं वारी, मेरे भव भ्रम ट्वो टरी ॥३॥

(२१६)—राग—कालिंगडा दादरा पूरवी ।

अपनो लखि मोये त्यारो प्रभुजी, अपनो लखि मोये त्यारो ॥टेक॥
पतित अनेकन त्यारि दिये तुम, अब मेरी ओर निहारो प्रभुजी॥१॥
भव सागर में डूबि रहो मैं, अब मोये वेग निकारो प्रभुजी॥२॥
तारण तरण विरद तुमरो सुनि, सरण गहा में थारो प्रभुजी ॥३॥
हो तुमही स्वामी प्रभु मेरे, बलदेव दास तुमारो प्रभुजी ॥४॥

(२१७) राग—दादरा कहरवा ।

जिनवर प्रभु मोहे अपना कादि दे,
मुनो जिनंद राय मोरी अरजी अब,
बेग्यां पकरि भव सिंधु से काढि लें, ॥ टेक ॥
भ्रमत २ भव सागर मांही, भव सागर मांही दुख पाये।
दुख पाये अधिकाई, अब बेग उवारि लें ॥ १ ॥
दरस परस थारे दीनो प्रभु जी, दीजो प्रभु दास बलदेव जी प्रभु
कीजो काज मोपे बेग ल्यारे लें, अब बेग तारि लें ॥ २ ॥

(२१८)—राग—ठुमरी ।

जिन राय काटि दे करम की फंदी, विनती करत तोरे परणां परत मैं,
इतनी अरज सुनि मेरी, जिनराय काटि दे करम की फंदी ॥टेक॥
मैं अनादि से इन वसि होकर, फर्यो चतुर गति फेरी जी ॥१॥
अब मैं तुम पद सरण गहो है, राखो मोपे चरणान नेरी जी॥२॥
तुम त्रिभुवन पति सब गुण धारक, और न पद नर गेरी जी ॥३॥
बलदेव को निज दास जानि अब, मेटो मेरी भव भव फेरी जी ॥४॥

(२१९) राग—दादरा ठुमरी—

... [illegible] प्रभु ... जी सुधारा, मन ... जी
॥ टेक ॥ वीतराग छवि निरख सखरी, मिथ्या ... दि
... ॥ १ ॥ तुम पद पंकज को अब मन में, ... जन
... लो ... ॥ २ ॥ तुमही सब ... ...
... प्रभु ... ॥ ३ ॥ तुम्ह ... ...
... कर, बलदेव ... नहीं ... ॥ ४ ॥

(२२०) राग-ठुमरी दादरा ।

प्रभुने मेरी सुधिवा तनक लईरे, देखो २ निरमोही गईलो रथ फेर ॥ टेक ॥ व्याहन आये मोरे मन भायेरे, पशुवन सोर सुनैया, उलटि फिरगैयां, जाय गिर पर तपधरलैइयारे, देखो २ निर मोही गईलो रथ फेर ॥ १ ॥ हमरो नेह तजि, शिवसों नेहाकियोहो, भला हम उनके संग जैया, प्रभुके गुण गैयां बलदेव नेम चर्णा सर्णा लई रे, देखो २ नेमि प्यारे गये गिरनार ॥ २ ॥

(२२१) कैसे भरों मैं नीर गगरिया–

कैसे रहो मैं, विन प्रभु घर अब रे, कैसे रहो मैं० ॥ टेक ॥
नव भवकी मेरी प्रीति प्रभूसे, सो अब, कैसे तजि देउरे ॥१॥
तोरणासे रथ फेर गये प्रभु जी, जाय बसे वनरे ॥ २ ॥
अबमें उन संग बन बसत पकरि, कर्म जराऊं सबरे ॥ ३ ॥
राजुल पतिके चर्ण कमलको, बलदेव नमन शिर रे ॥ ४ ॥

(२२२) पुनः ।

अरज सुनो महाराज प्रभूजी हो, अरज सुनो० ॥ टेक ॥
मैं भव बनमें दुख बहू पाऊंजी, दुख मो हरोगे राजप्रभूजी ॥१॥
तुम विन ओर देव संगसे मेरा, काज सरे नहि राज प्रभूजी॥१॥
तुम त्रिभुवन पति सब विधि लायकजी, सुख मो करोगे राजप्रभुजी ॥ २ ॥ बलदेव की अरजी चित्त धरि करिजी, द्यो शिवपुर अब राज प्रभूजी ॥ ३ ॥

(२२३) राग–पीलू कव्वाली–

अजी होजी प्रभु थारीजी, मूरत मन भावैजी,-होजीप्रभु०॥टेर॥
परम शांति मुद्रा धारी निरञ्जन, चिर भ्रम तप मिट जावैजी
॥ १ ॥ अनंत चतुष्टय निधिकर मंडित, सुर नर थारो
गुन गावैजी ॥ २ ॥ निरावर्ण निरदोष प्रभूजी, तुहि शिव
मग दरसावैजी ॥ ३ ॥ आनंद कंद जिनंद प्रभु तुमै,
चन्दन नित अब शिर नावैजी ॥ ४ ॥

[२२४] पुनः।

चंद्रा प्रभु छवि थारी जी, लगत मोय प्यारीजी ॥टेक॥
निरखत अंग अंग हुलसत मेरे, आनंद उपजत भारी जी ॥१॥
चंद्रपुरीमें जन्में प्रभु तुम, त्रिभुवन सुख विस्तारी जी ॥ २ ॥
चन्द्र वर्ण चंद्रांक विराजो, निज भय तम निवारीजी ॥ ३ ॥
शांति छवि पद्मासन मूरत, जग जीवन हितकारी जी ॥४॥
चन्दन तुम चर्णनकी लेवे, बारम्बार बलिहारी जी ॥ ५ ॥

[२२५] पुनः

राखज्यो शुनौजी महाराज, अब मोये थारो श्रीजिनराज ॥टेक॥
मैं हूँ दीन अनाथ प्रभूजी, तुम हो गरीब निवाज ॥ १ ॥
भव दधिसे डूबत मोय काढ़ो, तुम प्रभु भव जिहाज ॥ २ ॥
पतित उधारन विरद थारो प्रभु, त्रिभुवन जन शिरताज ॥३॥
चांदन शरण गही प्रभु थारी, मेरे सुधारो सब काज ॥४॥

(२२६)–राग गजल।

अजर गुनियां हमारी हो, जगतपति पूज्य जिन स्वामी ॥ टेक ॥

फसा मैं कर्मके फंदे, सहे हैं दुःख भारी हो ।
मुझे तुम विन छुडावै कोन, तुम्ही प्रभु विधि प्रहारि हो ॥१॥
और सब देव जग माही, राग मद दोष धारी हो ।
प्रभू तुम वीतरागी हो, सर्व दुखके निवारी हो ॥ २ ॥
मेटो मेरे दुख भव भव के, देवो पद निर्विकारी हो ।
जानि तारण तरण तुमको, शरण गही दास थारी हो ॥३॥

(२२७) राग दादरा पीलू ।

जिनराय अरज सुनि लीजै हो, जिनराय अरज० ॥ टेक ॥
भव सागरमें डूबत हूं मैं, मोये काढि किनारे कीजै हो ॥१॥
पतित अनेकन त्यारि दिये तुम, मेरि ओर चित दीजै हो ॥२॥
दास कहै मोये अपनो जानिकर, भव भ्रम दुख नसि दीजैहो॥३॥

(२२८) पुनः

अजी अब मोयै त्यारो, श्री पारस स्वामी ॥ टेक ॥
अश्वसेन वामा दे नंदन, तीनों लोकके अंतर जामी ॥ १ ॥
दुख सागर सो मोहि निकारो, पतित उधारन हे तुम नामी ॥२॥
वलदेव तुमको सेवे निरंतर, दास जानि मोये द्यो शिवधामी॥३॥

(२२९)—पुनः

अव मोयै त्यारो, चंदा प्रभु स्वामी, अब मोयै त्यारो ॥टेक॥
चंद्र वर्ण चंद्रांक विराजो, चंद्रपुरी जन्मे गुण धामी ॥ १॥
पतित उधारक विरद धरो तुम, गुण अनंत पूरण विश्रामी ॥२॥
वलदेवके भव भ्रम मेटि प्रभु, निज सम करि लेवो अंतरजामी॥३॥

(२३०) चाल-मोरी वैयां न मरो रे—

जिनवर सुनो अरज हमारी स्वामि, जिनवर सुनो० ॥ टेक ॥ बिरद तुमारो सुनि तारन तरण, मैं आयो सरण तुमा. स्वामि, ॥ १ ॥ अधम अनेकन त्यारे तुम प्रभु, एसी बानि तिहारी स्वामि ॥ २ ॥ मोकों दीन अनाथजानि करि, मेराभी करोगे निस्तारो स्वामि ॥ ३ ॥ भव भ्रम दूर करो वलदेव के, शिव पद द्यो सुखकारी स्वामि ॥ ४ ॥

(२३१) पुनः ।

मेरी ओढी भी निहारो, जिनराज स्वामि, मेरी ओरी निहारो० ॥ टेक ॥ पतित उधारन सब सुख कारण, एसो विर्द तुम्हारो जिनराज स्वामि ॥ १ ॥ दुष्ट कर्म रिपु मोंगे दुख देवं, अब सो दुख टारो जिन राज स्वामि ॥ २ ॥ मैं भव दधि में बह्यो जात, अबमोये निकारो जिनराज स्वामि ॥ ३ ॥ वल्देव मन वच तन करि तुम पद, सरना गह्यो है जिन राज स्वामि ॥ ४ ॥

[२३२] राग-कालिंगड़ा ।

मुजरा हमारा अब लीजै महराजी, मुजरा हमारा अबराजी० ॥ टेक ॥ हे जिनराज दया करि मोकों, अपनो दर्शन दीजै प्रभुजी ॥ १ ॥ देव ना दीसै तुम सम कोई मोये, जागो काज मेरा कीजै प्रभुजी ॥ २ ॥ अब प्रभु दीन दयाल कृपा करि, बलदेवकों निज कीजै महराजी ॥ ३ ॥

२३३–पुनः ।

रज हमारी सुनि लीजै, प्रभुजी अरज सुनि लीजै० ॥ टेक ॥
व सागर में वहयों जात मोये, काढ़ि किनारे कीजै प्रभुजी ॥ १ ॥
त्रिभुवनपति करुणासागर, करुणा मेरी कीजै प्रभुजी ॥२॥
तुमबिन ओर देव संग से मेरा, उल्टो ज्ञान धन छीजै प्रभु-
जी ॥ ३ ॥ दास जानि करि वलदेव के अब, भव भ्रम
दुख नसि दीजै प्रभुजी ॥ ४ ॥

[२३४] राग–टप्पा–

जिन वर मोरी सुधि लेवो, अवरे मोरे काज करेवो,
प्रभु अव मेरा काज करेवो, जिनवर मोरे सुधिलीनो० ॥टेक॥
भव वनमें अति दुख पाऊं, सो दुख दूरि करेवो ॥ १ ॥
तुमहो दीन वंधु करुणा धर, मेरी भी करुणा क्योना करेवो ॥ २ ॥
वलदेव को निज दास समज कर, जन्ममरण दुख दूर करेवो ॥३॥

(२३५) राग—ठुमरी टप्पा–

प्रभु थारी छवि देखण म्हाने परत चैन, हाहा थारी छवि,
होजी होजा हो आनंद घन, त्रिभुवन पति प्रभु, तुम चर्णों
से मेरे लागे नैन ॥ टेक ॥ तुम पद पंकज कों प्रभु अवमैं
सेवूं घडि पल दिवस रैंन ॥ १ ॥ देव सवरागी मोय ना
सुहावत, म्हारे दिल थारी छवि वसी अैन ॥ २ ॥ थारे
दरस सो मिटत सकल अघ, तूहे प्रभु चिंतामणि काम
धेनु ॥ ३ ॥ वलदेव अरज करै जिन स्वामी, अव चूरि देवो
मेरे कर्मोंकी सैन ॥ ४ ॥

२३६–पुनः ।

थाने देख्या बिन म्हाने नहिं परत चैन, शोभी होजी थां
नेमप्रभु, समद विजय सुत, नेक सुना थो मोये अपने बैन,
थानेदेख्या० ॥ टेक ॥ ब्याहन आये सब मन भाये, ल्याये
छप्पन कोटि जादो संग सैन ॥ १ ॥ तोरण सो रथ फेरि
चले पिया, कोन चूक मेरी देखी अैन ॥ २ ॥ हे प्रभु तुम
बिन मो दासी कों, कल्न परत घड़ि पलक रैन ॥ ३ ॥
राजुल प्रभुके दर्श पाय अब, बल्देव के भये मफल नैन ॥ ४ ॥

[२३७] चाल–दर्शन बिन अंखिया तरस रही–

प्रभु थारी छवि म्हारे मन भाय रही, प्रभु थारी छवि.
थाने निरखत अति सुख पावे जिया, प्रभु थारी छवि०।टेक॥
बीन राग सब दोष रहित प्रभु, तुम त्रिभुवन आनंद दाय सही ॥१॥
अवर देव की छवि न सुहावे, मैं राग दोष मद छाय रही ॥२॥
बलदेव को निशिदिन थारी छवि, दिल बिच खूब समाय रही ॥३

२३८–चाल–गिर गयो मजो कंगना–

स्वामी मेरी ओरी निरखना अब, आनि शरण मैं लागी मरना॥टेक
अधम अनेक उबारे तुम प्रभु, तुने पुराणन में परना ॥ १ ॥
तुम त्रिभुवन पति करुणा सागर, मेरी भी करुणा मन धरना ॥२॥
तुम बिन मैं भव बन मैं भटक्यो, कर्मन बसि से निगनि भरना ॥३॥
बल्देव को सेवक लखि अपनो, जन्म मरण ने दुःख हरना ॥४॥

[२३९] पुनः

जिनराज थारी म्हारे लगन लगी, टरत नाहिं मेरी कुमति भगी,

॥ टेक ॥ निशि वासर घडि पल इक छिन मेरी, तुम चर्णों से प्रीत पगी ॥ १ ॥ तुम पद भेटत अघ सब नासे, आनंद कारी सुमति जगी ॥ २ ॥ भव भव में वलदेवकों दीजे, सेवा थारे चरणन की ॥ ३ ॥

२४०—चाल—मत करिरे स्याम वियोग—

मोये त्यारो हो, स्वामी पार्श्वजिनन्द, मोये त्यारो जि० ॥टेक॥
अश्वसेन वामाके नंदन, मिथ्या मोह निकंद, ॥ १ ॥
पाप निकंदन त्रिजगत वंदन, तुमहो शिव सुख कंद ॥ २ ॥
में भव वन में अति दुख पाऊं, मोरे हरो दुख दंद ॥ ३ ॥
वलदेव तुमरी सर्णा गही अब, काटि देवो मेरे कर्मोंके फन्द ॥ ४ ॥

२४१—चाल—पिया मानो २ मानोरे पिया—

मेरी प्रभु सुधि लीजो, लीजोजी भला, प्रभु सुधि,०
भला मोय भव भ्रम दुखिया जानिकै, सुधि लीजोजी० ॥ टेक ॥
दुष्ट कर्म दुख देन इनोंसे, वेग निवेरो वेग निवेरो सुधि लीजो, ॥ १ ॥ तुमत्रिभुवन पति करुणा सागर, करुणा मेरी कीजै, करुणा मेरी कीजिये ॥ २ ॥ वलदेवके भव भ्रमण मेटि अब, अपनो मोयै जानो, अपनो मोयै जानिकै ॥ ३ ॥

[२४२] पुनः

दर्शन दीजो, दीजोजी भला, प्रभु दर्शन दीजो,
भला मोयै अपनो सेवक जानिकै, दर्शन दीजो ॥ टेक ॥
तुम दर्शन विन भ्रम्यो अनादिसें, तुमविन ध्याये २ ॥१॥
वडे भागसें तुम प्रभु पाये, मे सर्णों आयो, सरणों में आयो ॥२॥

बलदेवको अवसरमें मनिगे, निजपद शीजे २ ॥ ३ ॥

(२४४)—चाल—हो फवन गुण गाचो कौनरि ।

नेमप्रभुजी सुणिलीजो, म्हारीहो, मोहको भव भ्रम दूरिगमानि ॥ टेक ॥ भव वन भ्रमत २ अनादिसें, मैं दुख पाये बहु भारी ॥ १ ॥ विरद तुमारो मुनि तारण तरणको, मैं आयोहूं सरण तुम्हारी ॥ २ ॥ तुम त्रिभुवन पति दीन बंधु प्रभु, लीजो अब खबर हमारी ॥ ३ ॥ जन्म मरण दुख मेटि प्रभुजी मेरे, बलदेव सरण तुम्हारी ॥ ४ ॥

(२४५)—पुनः ।

शरणमें लीनीधारीहो, म्हाको लीजो भव दुःखित उबारि ॥टेक॥ अशरण-शरण तरण तारण प्रभु, जानि परम उर धारी ॥१॥ मुझको दीन अनाथ जानिकर, मेरा करोगे निस्तारी ॥ २ ॥ गुण अनंत भंडार प्रभुजी तुम, सरवोत्तम सुख कारी ॥ ३ ॥ बलदेव को भव भव में दीजो, सेवा भक्ति तुम्हारी ॥ ४ ॥

२४६—राग—परज ।

जिनवर थांकी छवि निरख, आज म्हारो मनडो मोहीछै ॥टेक॥ शांति रसकी परकाशन मूरति, निरखत दुख सर्व भाजि ॥१॥ पाप कर्मको नाशि भयो मेरो, ध्यान लख्यो सब काज ॥२॥ अति आनंद भयो बलदेवके, पेखत श्रीजिनराज ॥ ३ ॥

२४७, राग-विहाग कुमारी ।

थारी अनोखम छविप्रभुजी, थामें लाग्यो मन० ॥ टेक ॥ निशि वासर गुण गान जपै मेरो, निरखत हरषित भयो ॥१॥

मोह तिमरके नाश करन तुम, उदय अपूरब चंद प्रभूजी ॥२॥
चंद बरण चंद्रांक विराजोजी, तुम अनंत गुण चंदप्रभूजी ॥३॥
बलदेव तुम चरणन को चेरी, चिद पद द्यो जिन चंद्रप्रभुजी ॥ ४ ॥

१४७–म्हारी भूमा रानी हो थाने मेवाड़ा मिले ।

हो महाराजा स्वामीहो, म्हाने त्यारो लाजी राज, हो महाराजा० ॥ टेक ॥ थेंही त्यारण तरण छोजी, थेंजो गरीब निवाज, पतित उधारन जानिथारी, सरणा गही छै राज ॥ १ ॥ जीव अनंता त्यारिया थे, ज्याको वार न पार, अधमादिक तिरजंत वी थें, तुरत किया भव पार ॥ २ ॥
ऐसी सुनिकर साख प्रभुमें, आयो छूं महराज ।
भव दधि डूबति काढिल्यो, राखो सर्णा गह्योकी लाज ॥३॥
हाथ जोडि मैं अरज करूं, प्रभु बिनवूं बारंबार ।
वलदेवको निज दास जानिकर, वेग उतारोला पार ॥ ४ ॥

२४८–चाल–मारू ढोला की–

होजी जिनवर स्वामी मेरा, मैं प्रभुजी चेरा तेरा ।
तू जिनराय स्वामी मेरा, नेक मेरी ओर निहार हो ॥ टेक ॥
तारण तरण विरद तुमगो सुनि, आयोमें सरण तुमारी हो ॥१॥
छिनमें अधम उबारे प्रभु तुम, अब मेरा वी कारज संभारि ॥२॥
प्रीति लगी बलदेवकी तुमसों, अपनो लखि मोये त्यारि हो॥३॥

१४९–चाल सावले सलूना दर्शन देना

जिनवर प्रभु मेरा हो, चिर भ्रम तम हरि देय ॥ टेक ॥
मैं भव रोगी हूं अति दुखिया जी, भटकति चहुं गति भेय ॥१॥

तुम विन यह दुख जाय न ओरसे, तातै मेरी करुणा ।
तुम दयाल प्रतिपाल जगतकेजी, तारण विरद धरेय ॥
सुनिकर टेर दास बलदेवकी, निज सम अब करलेय ।

२५०—पद—भजन ।

थारे दरश विना ध्रग ध्रग जीवना, प्रभु थारे दरश विना ।
काल अनादि भ्रम्यों दर्शन विन, पायो पायो दुख मैं घना ।
तुम दर्शन जुत नर्क वास सुभ, बुरा बुरा स्वर्ग तुम विना ।
धनि धनि आज प्रभु तुम भेंटे, पायो पायो सुखमें घना ॥२
बल्देवको भव २ में प्रभु जी, दर्शन दीनो दीजो अपना ॥

२५१—राग—कनगाई ।

मैं हूं दास तुमारो प्रभुजी, अब मोये त्यारे जी ॥ टेक ॥
तारण विरद तुम्हारो प्रभुजी, सुनिसरणों आयो राज ।
अपनो विरद निहारकैं, मेरी पति राखो जिनराज ॥ १ ॥
सिंघ सूर कपि नोलथादिक, और स्वान वृषभ गजराज ।
अंजन चोरादिक अधम, तुम छिन में त्यारे राज ॥ २ ॥
मेरी बेर अब विलंब कहा है, सुनो श्री महाराज ।
बलदेव को निजदास जानिकर, त्यारो गरीब निवाज ॥३॥

२५२ चाल—थांका लागारे मैया—

अब म्हाने तारो त्यार हो, म्हाने तारो त्यार, नेम नवल महाराजहो ॥ टेक ॥ पशुवन की तुम करुना पानी, हम छाड़ी निरधारहो ॥ १ ॥ नव भव की मेरी प्रीती न विचारी हो, जाय चढ़े गिरनारि हो ॥ २ ॥ हम अब हु

तुम संग रहेगीजी, बनमें बसि तप धारि हो ॥ ३ ॥
राजुल पति के पद पंकज कों, सेवों बलदेव नम उरधारहो ॥४॥

२५३ पद-पुनः।

अजी होजी प्रभुजी, त्यारो महाराज, हो मुझको अपनो निहारिकें जिनजी ॥ टेक ॥ मैं तो दुखी हूं प्रभुजी, भव भ्रम रोगी अतिजी तुम्ही हो रोग निवारी हो ॥१॥ तुम बिन त्रिलोकी मांही, तारण वाला दूजा नाही, में निश्चै अब धारीहो, जिनजी त्यारो महाराज ॥ २ ॥ अब हम सब तजि, तुमपद सेवा धारी, बलदेव सरण तुमारी, हो प्रभुजी त्यारो महाराज ॥३॥

२५४ राग-दादरा खेमटा।

नेमि पियारे मुझकों काहे छांडि चले गिरनारी, भला० ॥ टेक ॥ पशुवन की मिससों रथ फेर्योजो, चूक मेरी कहा तुम ने विचारी ॥ १ ॥ नो भव की दासी में हूं जा, मोरी दया नैक प्रभु नजर में धारी ॥ २ ॥ अब तू हम है शरण तुम्हारी, बलदेव सेवो नेमनाथ सुखकारी ॥ ३ ॥

(२५५) राग-कहरवा।

प्रभु तुम बिन मेरा दुख कैसे जायगा। भला प्रभुतुम० ॥टेक॥
पतित अनेक उबार दिये तुम, मेरी बेर२ कैसे भये चुप्प ॥१॥
दुष्टकर्म तुमविन दुख देव, गेर्यो २ इनपोयें भववन कुप्प ॥२॥
बलदेव शर्ण गही प्रभुथाकी, मेरे २ कर्मोंको करिदीजो लुप्प॥३॥

[२५६] पुनः

प्रभु तुम सोई मेरा दुख मिट जायगा। भला मिटि० ॥ टेक ॥

तुम त्रिभुवन पति करुणा सागर, करो मेरो करुणा भरा ॥१॥
आनि देवकी संगति करि मैं, पायो दुख २ कह्यो जाय कान ॥२॥
अब सरणा बलदेव तुमारी, मेरे काटो २ भव दुख सब ॥ ३ ॥

[२५७] चाल -मैनातीने आत्मज्ञान-

दरसन थारो मोपै दीजो जिन राजजी, ॥ टेक ॥ अबलौं प्रभु मैं तुम दर्शन बिन, भ्रम्यो चतुर्गति में अधिकारजी ॥१॥ बड़े भागसे तुम प्रभु पाये, तारण तरण सुख कारजी ॥२॥ मोये दीन अनाथ जानिकर, अब अपनो कीजो निस्तारजी ॥ ३ ॥ अब बलदेव बार बार बीनवै, भव दधि से कीजे मोये पारजी ॥ ४ ॥

[२५८] चाल कोन भरे भी मेरे निशि दिन गावोंगा-

तुम बिन प्रभु मेरा, कौन हरैगा दुख ॥ टेक ॥
आनि देव से कारज सरयो ना मेरो, भ्रमण २ मैं पायो बहु दुख ॥ १ ॥ तुम त्रिभुवन पति सब सिधिदायक, मेरो [illegible] करुणानिधि मेटोगे दुख ॥ २ ॥ बलदेव के तुम ही [illegible] स्वामी, तुम बिन प्रभु मेरे कौन भरे सुख ॥ ३ ॥

(२५९) चाल [illegible] ।

आज नाऊंगी गढगिरनारी, चढे अब राजुल नारी ॥ टेक ॥
मातपिता अरु कुटुंब कबीला, सब को मोह निवारि ॥ १ ॥
धन महाजन धन सम्पति, और तीन गुपति अब धारि ॥ २ ॥
[illegible] प्रभु संग तप करिके, पाशी स्वर्ग मझारि ॥ ३ ॥
[illegible] प्रभु [illegible], बलदेव नावै [illegible] ॥ ४ ॥

(२६०) राग-सोरठ।

जिनवर प्रभुजी मेरी, काटो दुख फांसी ॥ टेक ॥
दुष्ट कर्म दुख देवै जासौ, भयो चतुर गति बासी ॥ १ ॥
कुगुरु कुदेव की संगति कर मैं, भटको लख चौरासी ।
या भव बन में अब तुम बिन, कोई न सुख दरसासी ॥२॥
जन्म जरा अर मरण महा दुख, पावूं में दुख रासी ।
बलदेव को निज दास जानि अब, दीजो सुख अविनासी॥३॥

(२६१] चाल निर्मोहिडा से बतिआ नाहैं करूगी-

मैं तोरी सरणा प्रभु आनि पडयोंजी, ॥ टेक ॥
या भव वनमें भटक्यो बहु मेरा, ओरदेवसे ना काजसंन्योजी॥१॥
तुम सब जीवनके उपकारी, तो मेरी बी करुणा चित्तधरोजी॥२॥
बलदेव को जिनदास जानि कर प्रभु, जन्म मरण दुख दूर करोजी ॥ ३ ॥

(२६२] पुनः ।

मैं तोरे संग प्रभु गिरिनारि चलुंगी । मैं तोरे संग प्रभु० ॥ टेक ॥ नो भवकी प्रीति छाडि चले हो, पै मै तुमरो संग नाहि तजोंगी ॥ १ ॥ गिरपर जाय तुम जोग धरोगे प्रभु, तोमें तुम लारेई जोग धरोंगी ॥ २ ॥ बलदेव राजमती प्रभु संग अब, तप करि कर्मो का नाश करोंगी ॥ ३ ॥

(६३) राग-भैरवी दादरा ।

मेरी ओर निहारो प्रभु, मैं तुम चर्णो का दास भया ॥टेक॥
तुम बिन आनि देव संगसो मेरा, अब तक बहुत अकाज भया॥१॥

ज्ञान लब्धि से अब तुम भेटे, तुमें देखि भ्रम भागि गया ॥२॥
त्रिभुवनमें तारक तुमही हो, यो उर निश्चय आज भया ॥३॥
नयनदेव तुमरी सर्ण गही प्रभु, तुमें परस मैं निहाल भया ॥४॥

[२९४] चाल-हेरी माई आज मेरे आनन्द बधावनारी।

अरी एरी सखी आजरी, सोहरी आली आज, लावो नेमजी को मनाय केरी ॥ टेक ॥ ब्याहन आये प्रभु, जादो संग लाये, देखत हियो हुलसानरी ॥ १ ॥ पशुवन की करुणा करी प्रभुने, हमें छांडि गिर जानरी ॥ २ ॥ अब प्रभु को तुम लावो मनाकर, मोये और कछु ना सुहानरी ॥३॥ राजुल पतिके चरणन को अब, नयनदेव नमन जिनराजरी ॥४॥

[२९५] राग-खमाच दादरा-

लगे मेरे नैन नेमी प्यारे से, नेमी प्यारे से ॥ टेक ॥
ब्याहन आये थे त्रिलोक पतिजी, सब संग लिये कृष्ण मुरारि॥१॥
रोवन को पशुवा छुड़वा कर जी, मोये छांडि गये गिर नारि॥२॥
नयनदेव राजुल पति चरणन को जी, सुमरो बारंबार ॥ ३ ॥

[२९६] राग-भाजणी।

अरज मेरी सुनो श्री पार्श्व भगवान. तुमसे सरे हमारा काज ॥टेक॥ अरजोंमें तुम बिन बहु पतावान, तुमी से सीजे मन के काज। कर्मोंने दुःख दीनोंहैं मोय आज, चतुर्गति भटकायो बहु नाज ॥ १ ॥ प्रभु तुम्हीं हो गरीब निवाज, मेरी भी अब राखोगे लाज। मैं हूं नाइदीन दुखी बहु नाज, प्रभु तुम त्रिभुवन के शिर ताज। मैंने निश्चे लिये पहचान,

तुमी से सरे हमारा काज॥ २॥ कृपा मोये अब करिये महा- राज, प्रभु तुम तारण तरणजिहाज। भवोदधि से काढो मोये आज, सर्ण वलदेव गही थारीराज। मोयै प्रभु दीजै अविचल धाम, तुमीसें सरे हमारा काम ॥ ३ ॥

[२६७] चाल—क्या कहियेरी किससे तनको—

क्या करियेरी सखी अब हमकों, मुजे छांडि गयेरी प्रभु गिरिकों ॥ टेक ॥ प्रभु हरष २ आये व्याहनकों, सेवे इंद्रा- दिक है जिनको, लिये छप्पन कोडि संगजदुनन को, कृष्ण बली हलधरको। श्रीसमुद विजैजी के नंदनको, देखि हरख भयो सब जनको, प्रभु सुनि पशुवनकिल कारीको, एरिसखी, करुणा चितभयो उनकों।

चाल दूसरी।

सुनि सखी पशुदिये छुडा, तोरण सो रथलिया मुडा,
मेरी नव भवकी प्रीति तुडा, शिव सुंदरसों मन जुडा।

[चाल]

समझाये बहुत नहि मानेर, सखी रथलेगये गिरनारीको॥१। प्रभु अथिर जानि कर गीया जगको, एरी उन, त्याग दियो परिग्रहको, सखी भेष धर्यो प्रभु मुनिवरको, शिव सुंदर वरनेको, अब मात पिता सुनो सब हमको, एरी मोहे आज्ञा देवो जानेको. यो कहि राजुल स्नेह ताज सबको, प्रभुढिग पहुंची तजि घरको।

चाल-ठुमरी ।

अतुल प्रभु मंगलम धाता, त्रिकालिक ज्ञेय इन ज्ञाता,
अखिलांगनेन भई त्राता, श्रीनेम नवल शिवराता ।

[चाल]

अब बुधजन पर हूजे साँई, नेमप्रभु मेरे राखो ध्यान अन भवतौं ॥ २ ॥

[३८४] राग-धुन ।

श्रीपार्श्वप्रभु मेरी सुधि लीजै, जिनराज प्रभु मेरी० ॥टेक॥ मैं अनादि कालको भ्रमत फिरूँ, भवसागर माँहीं, प्रभु भव० । लख चौरासी योनि बहु धारी, मैं दुख पायो अधिकाई । नर नारक तिर्यंचदेव भयो, सो कहा कहालों भाई । मैं दुष्ट करमके फंदे परयो, सो तुमरे चरणा आयो ।

चाल-ठुमरा ।

अब मेरो मनको दुख मेटो, तुम नामनको नेरा ।
शरणै हो साहेब मेरा, अब बुधजनको मेटो फेरा ॥

चाल दूसरी।

बलदेव है दास तुमारो, तुम पद सरणो उरधारो।
अब तुम मेरी ओर निहारो, में राखो भरोसो तिहारो॥

[चाल]

तुम पतित अनेकन त्यारे छिनकमें, मोकोबी शिवपुर दीजे२

[२६९] चाल--गिरनारीकी वतदोजो डागरिया --

परम दिगंवर वनकेवासी, वे गुरू मेरे मन भावे हो॥ टेक॥
पंच महाव्रत दुद्धर धारै, पंच सुमति चित लावै हो।
तीन गुप्त वे पालै जतीश्वर, परमातम पद ध्यावे हो॥ १॥
षट् आवश्यक निति वे पालै, षट् अनायतन टालैहो।
एक भुक्ति और केश लोचकरै, मंजन दंत निवारे हो॥२॥
अठाईस मूल गुण सहित, और उत्तर गुण धारे हो।
आप तिरे ओरनको त्यारे, मुक्ति पंथ दरसावै हो॥ ३॥
हे अपार गुणके धारक वे, कहो कहालो गावै हो।
एसे गुरुको वारंवार अब, बलदेव निति शिर नावै हो॥४॥

[२७०] चाल–होजानोमैं जानलई–

श्रीजंवू गुरुचरण कमलके, दरस करत आनंद भयो॥टेक॥
मथुराकी पश्चिम दिशि माहीं, जंबूवन सोहे सुखदाई।
मंदिर वन्यो रमनीक देख, सुख कंद भयो, श्रीजंबू० ॥ १॥
कार्तिक वदी पंचमी दिन माही, रथ यात्रा मिलि करवाई।
गीत नृत्य ओर पूजा, परम उच्छाह ठयो। श्रीजंबू० ॥२॥
श्रीजंबू केवलि शिव पाई, सुर नर पूजत मन वच काई।
बलदेव तुम गुण गावत, चरणको सरण लयो॥ श्रीजंबू।३।

(२७१)—पुनः ।

तुम पद पंकज नखदयुति भारी, हो स्वामी मैं शरणन्हीं ।टेक
तुम पद पद्म कजा शिर नायक, सेवत सुर नर मुनि जननायक
तुमैं देख मेरे हरष भयो, मैंने पायो परमानंद महीं ॥ १ ॥
तुमही भव सागरके तारक, जन्मधरा दुख दूर निवारक
तुम समान या जगमें, दूजा देव नहीं । तुम प० ॥ २ ॥
हो तुमही त्रिभुवनके नायक, लोकालोक सकलके ज्ञायक ।
मांगूं अपनो करि लीजे, प्रभु मेरी अरज यही । तुम० ।३।
याते तुमरी शरणा गही हम, दीन दयाल कृपालु देव तुम ।
बलदेवको निज दास जानि, अब त्यागि नहीं । तुमप०॥४॥

[२७२] राग मल्हार

स्वामी मोहि अपनो जानि त्यारो, अब मेरी भावनी निरवारो ॥ टेक ॥ जग चौगामी जोनिनि माहीं, भ्रमते आयो अब मैं हारयो ॥ १ ॥ बड़े भाग मेरे प्रभु आगे, अब मैं पायो है सरणो थारो ॥ २ ॥ तुमही तारक हो जगमाहीं, स्वामी अब अपनो बिरद संभारो ॥ ३ ॥ बलदेव तुमरी सरन गही है, अब प्रभु मेरा करो निस्तारो ॥ ४ ॥

[२७३] पुन.

अब मैं पाये प्रभुजी आज, जिनके देखे सर्व नसाज । टेक ।
साता कर्मनि नाशकेरो गुन, तुमरी प्रभु मैं बलि जाऊं ।१।
शांति छवि पद्मासन मूरति, याते निश्चल ध्यान लगाऊं ।२।
बलदेव कहै अहनिशि नम तुमरे, स्वामि फल मैं गुणगाऊं ।३।

[२७४] राग–धूलिया मलार –

अरज सुनो महाराज, प्रभुजी अरज सुनो० ॥ टेक ॥
जन्म जरामृत दुख वहुदेवा, मेटि गरीव निवाज ॥ १ ॥
आनिदेव सेये वहुतेरे, सऱ्यो नही मोकाज ।
वडे भाग अव तुम प्रभु भेटे, तारण तरण जिहाज ॥ २
तुम प्रभु पतित अनंत उवारे, सारे सवके काज ।
वलदेवके भव फंद काटिद्यो, दीजो शिवरो राज ॥ ३ ॥

[२७५] चाल वदरा देखिडरी–

हो गहीजीये सरण आनि गही, हो गहीजी में० ॥ टेक ॥
तीनलोक और तीनकाल मै, तुम सम देव नही,
यह निश्चे उर जानि तुमारे, चरन चित्त लई ॥ १ ॥
लख चोरासी जोनि मैं भरमत, नाना विपति सही ।
वचन द्वार मोसे कह्यो जात नही, सो तुम छानी नही ॥२॥
हे त्रिभुवनपति वलदेवकी अव, सुनि अरदास यही ।
दीनजानि मेरी दया करो प्रभु, अपनो करिये सही ॥ ३ ॥

[२७६] चाल–वरसे वदरिया सावनकी–

सो तुमसों लागे नैन हमारे, सो तुमसों लागे नैन हमारे। टेक॥
निशि दिन घडी पल लागी रहतलो, नेकन चाहत न्यारे। १।
होति हरप अति निरख २ छवि, दरसदेख प्रभु थारे ॥ २ ॥
वलदेव भव २ यह जाचत मोयै, दीज्यो दरस तुमारे ॥ ३ ॥

[२७७] चाल–झूलाकी—

हे प्रभु मोरी अव सुधि लीजिये, अपनोई दास निहारि ॥टेक॥

भक्ति वत्सल प्रभु तुम हौ सही, पावन पतित दयाल,
अपनो विरद विचार कै, लीज्यो भव दधिमें उबारि ॥ १ ॥
जीव अनंत उबार दिये, तिनको वार न पार,
सिंघ सूर जंबुक नवल, छिनमें किये हैं भव पार ॥ २ ॥
मेरी बेर कहा ढील है, क्यों नहि सुनो है पुकार,
मोंय अनाथ विचारकै, करि अपनो निस्तार ॥ ३ ॥
बलदेवकी अरज दास सुनि, प्रभु लीज्यो जी निस्तारि,
अपनोई सेवक जानिकै, दीज्यो जी शिव पुर वास ॥ ४ ॥

(२७) पुनः ।

मेरा मन भी ज्यों आनन्द रंग चुओ, प्रभुजीके दरसनसे आज ॥ टेर ॥
सम्यक आतम प्रगट भयो, शुभ भाव गया सरि ताप ।
सुमति जो चपला चमक ज्यों, रवि पावस प्रगटाय ॥ १ ॥
भाव बादर घमडि आवे, प्रभु धुनि गरजन थाय ।
मोहादिक नित नर पुषी, भूलि पुनि दरि जाय ॥ २ ॥
प्रभु पद सेवन बागमें, मेरा मन रह्या है लुभाय ।
बलदेव मन घन दास सौं, तुम चरणां गया लाग ॥ ३ ॥

(२८) राग-आसावरी मेरे है सुन प्रभु बाहु मा सांई-
सन है सवारे प्रभुजी, मनि नहि सहुना नहीं ॥ टेर ॥
सागरमें रत देहि गहे प्रभु, प्रभु करुणा करवाई ॥ १ ॥
नर पारसो कैसे धीरज नाहि कर, जिन सुंदर परवाई ॥२॥
सुरि आगे कैसे दाओ कहाँसे, जगन लिपि नहीं ॥ ३ ॥
सेवकों भक्ति बलदेव नाहिपे, बलदेव शरन गहीं ॥ ४ ॥

(२८०) चाल–फूला किन डारोरे उमरैयां—

जिनवर त्यारो मोरी गहि वहियां, जिन राजत्यारो० ।।टेक।।
ये भव सागर अगम अथाहै, तामैं मेने पाई बहुत विथा है,
डूबति हूं मोय काढोगे सैय्यां, प्रभु मोय त्यारो० ॥ १ ॥
तुमहो पतित उधारक देवा, इंद्र नरेंद्र करे थारी सेवा,
मोयै प्रभु अपनो अब करलइया, जिनराज त्यारो० ॥ २ ॥
बलदेव अर्ज करै महाराजा, भव भ्रम मेटो मेरे महाराजा,
मन वच तन सेय गहें मे तुम पैय्यां, जिनराय त्यारो० ॥३॥

(२८१) चाल–कित जायोगे नेमि प्यारे–

जिन राज अरज सुनि मेरी, महाराज अरजसुनि मेरी,
मैं सरण आनि गही तेरी, महाराज अरज सुनि० ॥ टेक ॥
मैं चिर सों भव वन में भटक्यो, कीनी चहुंगति फेरी ॥१॥
करुणा सागर पतित उधारक, करुणा करिप्रभु मेरी ॥ २॥
सरणागत प्रति पाल प्रभू तुम, मेरी वी सुनो अब टेरी ॥३॥
हे त्रिभुवन पति बलदेव को अब, दीज्यो भक्ति तुम्हेरी ॥४॥

(२८२) पद–बधाई–

अजी भला, सब मिलि गावो आज, बधाई सबमिलि० ॥ टेक॥
कार्तिक बदि मावस प्रभात प्रभु, वीर लियो शिवराज ॥१॥
पावापुर में घर २ आनंद, दीपोत्सव भयो आज ।
इंद्रादिक सुर नर सब मिल कियो, मंगल मोक्ष समाज ॥ २ ॥
यथा शक्ति पूजै हम हू अब, भक्ति भाव विधि साज ।
व्यंजन लड्डुवनाय चढायै, करै महोत्सव आज ॥ ३ ॥

शांतिप तीर्थंकर अघहर प्रभु, तारण तरण जिहाज ।
बलदेव तुम गुण गावत हर्ष कर, मेरे सुधारो अब काज ॥४॥

[२८३] पुनः

अरज सुनो जिनराज, प्रभु मेरी अरज सुनो० ॥ टेक ॥
तारण बिरद तुमारो सुणिकें, सरणे आयो राज ॥ १ ॥
मैं भवभ्रमणांगी हूं प्रभु अति, और हूं दीन अनाथ ।
दुष्ट कर्म मोयें दुख अति देवें, इनको उतारो राज ॥ २ ॥
तुमही पावन पतित सधारो, हो तुम धर्म जिहाज ।
बलदेव की अब टेर सुनि प्रभु, म्हारो गरीब निवाज ॥३॥

(२८४) चाल—गजल रागनी—

अब मोरी अरज सुनो प्रभु पार्श्व जिनंद, अब मोरी० ॥ टेक ॥
अश्वसेन बापा देवीके नंद, जन्म बनारसलियो मेटे भव फंद
॥ १ ॥ कमठ मान तप भंजन चंद, नाग उबारे छिन में
किये धरणेंद ॥ २ ॥ मैं भव वनमें प्रभु पाऊं दुख द्वंद, सो
दूर अब नाशो कल्याण निध ॥ ३ ॥ बलदेव तुमारी सरणीं
आयो जिनचंद, सेवक लखि मोरे दीजे शिव सुखकंद ॥ ४ ॥

ज्ञायक सर्वज्ञ देवोजी ॥ ३ ॥ भव भ्रमण विथा वलदेव की प्रभु हरेवोजी, मोये दास जानित्यारो देवाधि देवजी ॥ ४ ॥

[२८६] पुनः

सुनियै अरज हमारी अव श्री जिनेशजी, सुनिये अरज० ॥ टेक॥ हो मोहतिमर नासनकों तुम दिनेशजी, पावन पतित विरद तुम धारो जिनेशजी ॥ १ ॥ मुनि गणधरादि तुमको सेवै सुरेसजी, तारण तरण तुमही सबके जिनेशजी ॥ २ ॥ तुमसो आर मेरे इक है हमेशजी, असरन सरन तुमी को जान्यो-जिनेशजी ॥ ३ ॥ भव दुख दंद फंद मेरे काटो कलेशजी, वलदेव सरन तुमारी है श्रीजिनेशजी ॥ ४ ॥

(२८७) गजल भैरवी-

त्थारोजी प्रभु मोइ को अपनो दास जान कर, ॥ टेक ॥
तुम सम देव ना है कोई मैं सब जगदेखा छान कर ।
पास आयो हूं मैं तुम कों खूब पहचान कर ॥ १ ॥
सुर पति नरपति खगपति तुम को सेवै सवही आनकर ।
तीनभुवन के नायक तुमकों मुनि जन ध्यावै ध्यानकर ॥ २ ॥
दीन दयाल कृपा करि मेरे दुष्ट कर्म को हानि कर ।
तुम चरणोंमें भक्ति रहे मेरी भव भव एसी वानि कर ॥ ३ ॥
तुम पद सरण गही वलदेव ने निश्चै मनमें ठान कर ।
भव दुख फंदनि काटो दासकी करुणा उरमें आन कर ॥ ४ ॥

(२८८) राग—भैरवी—

प्रभु तुम विनती, कोन खवर ले मेरी, अव तुम० ॥ टेक ॥

तुम ज्ञान बिनु भ्रम्यो अनादि में, कीनी चतुर्गति फेरी ॥१॥
पावन पतित जानि तुमको अब, आयो मैं शरणन तेरी ॥२॥
तिनमें अधम अनेक उबारे तुम, अब मेरी बेर कहा देरी ॥३॥
नन्द जग मूल दुःख हरो प्रभु, सुनो बलदेव की टेरी ॥४॥

([illegible]) गजल—

जिनवर तो मेरी अरज सुनो महाराजा,
मोय अपना दास निहार करो मेरे काजा ॥ टेक ॥
[illegible] त्रिभुवन में तुमही हो धर्म जिहाजा,
तुमबिन जानें भ्रम्यो जग मझधारा ॥ १ ॥
[illegible] जग के देव सभी हैं दुख के साजा,
तुम वीतराग सर्वज्ञ मुक्ति के राजा ॥ २ ॥
[illegible] तारे पतित अनेक शरीर निवाजा।
[illegible] सुनत वचन भयो प्रभु महाराजा ॥ ३ ॥
[illegible] बलदेव की विनती सुनिये जिनराजा।
मेरे काटो कर्म फन्दन भयो सुख साजा ॥ ४ ॥

छत्र चमर भामंडल राजत, सिंघासन छवि भारी ।
शांति छवि पद्मासन मूरति, त्रिभुवन आनंद कारी ॥ ३ ॥
देश देशके यात्री आवैं, पूजा भाव रचावैं ।
चैत्रमास मे रथ यात्रा होवै, चारो वर्ण जहां ध्यावैं ॥ ४ ॥
अतिशयवंत क्षेत्र है अतिही, वंछित फल दातार ।
बलदेव एसे प्रभुको सेवो, ज्यों उतरो भव पार ॥ ५ ॥

[२६१] चाल--मारवाडी--

जिनवरजी म्हाने त्यारोजी, अब अपनो दास निहारि ॥ टेक ॥
आनिदेव सेये सवही पर, सर्‍यो ना मेरे काज ।
भटकत फिर्‍यो चतुर्गति मांही, दुख पायो बहुताज ॥ १ ॥
काल लब्धि अब पुन्य जोगतें, तुम प्रभु पाये सार ।
मोय राखो चरण निकट, स्वामी मेरी ओर निहारि ॥ २ ॥
तुम त्रिभुवनपति सब सुखदायक, सब जीवन प्रतिपाल ।
पतित अनेकन त्यारि दिये तुम, तिनको वार न पार ॥ ३ ॥
मोकों दीन अनाथ जानि प्रभु, मेरा करो निस्तार ।
बलदेव तुम पद सर्ण गही अब, निश्चै मन में धार ॥ ४ ॥

[२६२] राग--लावनी ।

जिनवर प्रभुजी मुजे दीजै दरस तुम्हारा ।
मैं तुम दर्शन विन भ्रम्यो बहुत संसारा ॥ टेक ॥
प्रभु तुम दर्शन जुत नर्क वास सुभ कारा ।
विन तुम दर्शन स्वर्गादिक सुख दुखका धारा ॥ १ ॥

मैं भव वन में भ्रमत सहे जो दुःख अपारा ।
सो भाखें बरनें जांय नहीं बच द्वारा ॥ २ ॥
तुम वीतराग सर्वज्ञ त्रिलोक निहारा ।
हो पावन पतित उधारक विरद तुम्हारा ॥ ३ ॥
या जग के देव सबौं देखे दुखियारा ।
तुम दोषावर्ण रहित हो गुण भंडारा ॥ ४ ॥
मैं निरखकरि तुम पद सरनौ उरधारा ।
अब दास जानि वृन्दावनका करो निहारा ॥ ५ ॥

[२१३] राग सारंगी ।

हो प्रभु थांकी शांति छवि, म्हारे चित्त बसी हो ॥ टेक ॥
वीतराग छवि निरख आज, मोरा भ्रम नसौ हो ॥ १ ॥
और देव छवि मोय न सुहावै, वैरागी दीसी हो ॥ २ ॥
आतम ज्ञान सुधा हो या सों, उर बसौ हो ॥ ३ ॥
वृन्दावन उर बसो निरंतर, ज्यों चकोर शशी हो ।

और देव सब तजि तुमसेवूं, हो तुमही स्वामी हमारा ॥ १ ॥
तारण तरण तुम्हीहो जगके, यह निश्चै हम धारा ॥ २ ॥
तुम प्रभु पतित अनेक उवारे, तिनको वार न पारा ॥ ३ ॥
बलदेवको भव सागरसे अब, वेग उतारो पारा ॥ ४ ॥

[२६६] पुन

जिनवर स्वामी मोहे त्यारो, महाराज, मैं राखू भरोसो तुम्हारो ॥ टेक ॥ तुम दर्शन विन भ्रम्यो बहुत मैं, अब मेरो काज सुधारो ॥ १ ॥ अधम अनेक उवार दिये तुम, अब मेरी ओर निहारो ॥ २ ॥ असरण शरण तरण तारण तुमै जानि सरण गह्यो थारो ॥ ३ ॥ दास जानिकर अब बलदेव के, भव भ्रम रोग निवारो ॥ ४ ॥

[२६७] राग--कहरवा ईमन ।

मोहे त्यारो जिनवर, महाराज सरण मेंहू थारो ॥ टेक ॥
अधम उधारक तुमही हो प्रभु, दीनबंधु उपकारी ॥ १ ॥
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु तुम, गुण अनंत भंडारी ॥ २ ॥
मेरे दुख सब दूरि करो अब, राखोगे लाज हमारी ॥ ३ ॥
बलदेवको अपनो लखि प्रभुजो, दीज्यो सुख अविकारी ॥ ४ ॥

[२६८] दोहा--इंद्रसभा ।

चिंतामणि पार्श्वप्रभु, मेरी सुधि अब लेवो ।
दास जानि बलदेवके, भव भ्रम दुख नसि देवो ॥ १ ॥

चाल--जिलासें--

श्रीचिंतामणि पार्श्व प्रभुजी, मेरी विनती सनिलीजैजी ॥ टेक

कलकत्तासे माल मंगानेका सुभीता ।

यदि आपको किसी सामानकी जरूरत हो तो हमसे
पढी करिये आपको ठीक विश्वासके साथ अच्छामाल
खकर भेजा जायगा। आपको अच्छे बुरे मालका पीछेसे
छताना न होगा एकबार मंगाकर परीक्षा कीजिये।

पत्र भजनेका पता—

मूलचंद गुप्त ९।१ महेंद्रबोस लेन श्यामबाजार—
कलकत्ता।

देरीका कारण।

पहिले निकले हुए पांच और इन सात अंकोंके साथ
संगीतग्रंथमालाका १ ला वर्ष समाप्त हो गया। यह पहिला
र्ष था इसलिये समय पर प्रत्येक अंक न निकल सका, दूसरे
ई कारणोंसे हमें स्वदेश जाना पडा और वहां करीब ३
ाह लग गये ही कारण है कि ग्राहकोंकी सेवामें ये सात
क एक साथ उपस्थित किये गये हैं। आगे ऐसी गलती
ागी इस ख्याल रक्खा जायगा। हमारे ग्राहकोंको
ो हो जा से आकुलता जन्य दुःख उठाना पडा इसके
सविनय क्षमा मांगते हैं और आशा करते हैं
रुष्ट न होहमारे सहायक रहेंगे।

।२ महेन्द्रबोसलेन श्या. बा. कलकत्ता।

नासिद्धांत प्रकाशक पवित्र प्रेस,

हेंद्रबोसलेन श्याम बाजार कलकत्ता।